समरथाइक भूत

समरथाइक भूत

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SAMARTHAIK BHOOT

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-11-7

दाम: 251/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2014)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!

कथा-सत्तैर

खुदियाएल

जिनगीक तीसम बर्खमे जइ नजरिये धीरेन्द्र आ महेन्द्रकेँ जिनगीक अकलवेरामे भेँट भेल ओ अखन तक नै भेल छल। भेँट होइते धीरेन्द्र बाजल-

"महिन्दर भाय, केते जुगक पछाइत दुनू संगी एकठाम भेलौं!"

जहिना लुल्हा-नेङ्गराकेँ भगवानक भेँट जगरनाथमे होइए तहिना महेन्द्रकेँ मनमे उठलै- केमहर सुरूज उगल जे एहेन विचार धीरेन्द्रक मनमे एलइ। सदिकाल संग रहैबला संगी भेल आकि तीस बर्खक पछाइत भेँट भेला पछातिक संगी भेल? भरिसक केतौ-ने-केतौ जिनगी खुदियाएल अछि। मुदा दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ रहि-रहि, मुँह खोलाएब शंकाकेँ जन्म देत। जखन संगी छी तखन धारक हेलिनिहार जकाँ चीत हेलह आकि पट मुदा हेलह धरि। अपने ने धारक धारा चीतसँ पट आ पटसँ चीत करैत रहतै।

चीत-पटक बीच पड़ल महेन्द्रक मनमे धीरेन्द्रक मुहसँ खसिते जहिना जेठुआ तबल जमीन बिहरिया पानिकेँ ऊपरे लोकि लइए तहिना लोकैत महेन्द्र बाजल-

"भाय, दिन-ठेकान तँ डायरी लिखिनहारक हिसाबमे लिखाइ छै, ऐ मानेमे हम सिलौट-लोढ़ी छी। मर-मसल्ला नै खाइ छी तँए ने बुझै छी, मुदा बहू दिनक पछाइत भेँट भेलौं ई तँ मन मानिते अछि।"

धारक वेगमे जहिना नहेबाकाल हियासए पड़ैत जे केते वेग आकि

केते धारा तकमे अपनाकेँ थीर रखि नहा सकै छी, आ करवन अगम भेने डुमि जाएब। मुदा से तँ समतल-सरोवर पानिमे नै होएत। धीरेन्द्रक मन गवाही देलक। गवाही पेबते मन मोहियेलै। बाजल-

"भाय, किछु विचार करब अछि।"

'विचार' सुनिते महेन्द्र बाजल-

"भाय, अगुताएल ते ने छह। देखबे केलह जे बाड़ीसँ ऐबते छेलौं, हाथमे खुरपियो रहबे करए आकि तोरापर नजैर पड़ल। खुरपी ने ओतै पटैक देलिऐ आ दरबज्जाक कुरसी सोझ केलौं, मुदा हाथो-पएर धोब आ कनी चाहो पीबैक मन ने होइए।"

महेन्द्रक रूखि अनुकूल देखि धीरेन्द्रक मन मानि गेल जे हृदय रूपी मनक बात करै-जोकर स्थानपर पहुँच गेल छी..!

बाजल-

"भाय, तोहर-हमर देह आकि परिवार, कोनो दू छी जे तोहर बात हम नै बुझिऐ आ हमर बात तूँ नै बुझह। हमरा सबहक काजे कोन गाममे रहि गेल जे औगताइ रहत?"

धीरेन्द्रक बात सुनिते महेन्द्रक मन मानि गेल जे ओतेकालक पलखैत भइये गेल जेतेकालमे चलैत-फिड़ैत अपन काज सम्हारि लेब। काजे जकाँ विचारो ने सम्हारल जाइए। जँ बैसब तरवन ने दोखी हएब, ई तँ भेल अपन जिनगीक दिनकेँ उसारब ताबे गोधूल वेलो मेटाइ छइ। संध्याबन्धनक बेर सेहो होइए। तैसंग ईहो मनमे होइ जे जखन बैस कऽ किछु सोचब तखन ने कोनो शंको धीरेन्द्रक मनमे उठतै। जाबे अनमेनामे लागल रहब ताबे तँ बुझबे करत जे सेना जकाँ थोड़े चलत, बड़ चलत तँ मेना-अनमेनाक चालि चलत। तँए अपन जिनगी आ अपन परिवारक जिनगी की रहल, जेकर उपज अपने छी, आ ओहो अछि। ओना, जिनगीक भौको तँ हरही-सुरही नहियेँ अछि, ई तँ ओहन अछि जेकरा

पकड़बो असान नहि। असानो केना रहत, जहिना लोकक बुधि छै तहिना ई दुनियाँ अछि। मरूओ भरिसँ कम बुधि किए ने हौउ, मुदा ओकरो मन तँ कहिते छै जे दुनियाँमे ऐ बुधिक जोड़ा नहि। टिटही जकाँ ओहो बुझिते अछि जे अकासो आ दुनियोँ हमरेपर ठाढ़ अछि। जँ से नै अछि तँ किए कियो बजैए जे दुनियाँमे जहिना चोर अछि, तहिना साधुओ अछि, जहिना बेइमान अछि तहिना इमानदारो अछि, जहिना पापी अछि तहिना धरमतमो अछि, मुदा अपने की छी से बुझी की नै बुझी...।

तेतबे किए, जहिना बुधिक भण्डार–मनुखकेँ भगवान निरमा कऽ दुनियाँ भरि देने छथिन तहिना दुनियाँकेँ सेहो तेते झमटगर बना कऽ रखि देने छथिन जे केतए माटिक तर सीर छै आ केतए ऊपर, से थाहबो कठिन अछिए। जइमे लोक औनाइत रहैए। मुदा सभ कियो की औनेबे करत? जेकरा ई सबुर छै जे मुट्ठी बान्हि कऽ आएल छी पसरल हाथ नेने जाएब, तइले अनेरे भरि दिन रोडपर आकि गाड़ी-सवारीमे आकि धुँआ-धुकुर होइत कारखानामे भूत बनि किए भुतिआइत रहब...। भाय! लोढ़ि लाएब, कुटि खाएब, निरोग बनि काल्हि फेर जाएब। केकरो ज्ञान ने ज्ञान-शक्ति पबैए, मुदा भक्ति-शक्ति तँ श्रमे पबैए।

ओना, दुनू तेहेन एक-दोसरमे सटल अछि जे एकक बिना दोसर नै चलत मुदा दुनूक बीच ई रस्सा-कस्सी तँ छैहे जे एकटा कहै छै दुनियाँक मालिक छी आ दोसर कहै छै मालिकक कामतक कमतिया अपने छी। अनेरे अनका पाछू जे हरान रहब से कि ओकरा अपना बुते अपनाकेँ सम्हारि चलल नै हेतै जे कन्हापर लधने चलब...।

गाइक थैरक घूरपर नजैर पड़िते महेन्द्र देखलक जे खढ़-पात जरि कऽ झोली भऽ गेल अछि मुदा गोरहा-करसीक आगि सुनगिये रहल छइ। घूर लग जा खोंरनासँ करसीकेँ उसका देलक। दरबज्जापर बैसल धीरेन्द्र अपनो दिस देखैए संगे अपना परिवारो आ समाजोकेँ देखैए तँ काजर घोरल रातिक अन्हार जकाँ बुझि पड़इ। जहिना दिनमे कियो अनेको कोस

धरि देखैए आ अन्हारमे अपनो देह-हाथ हेरा जाइ छइ। तहिना धीरेन्द्रो हेराएल जकाँ वौआइत रहए। मोन पड़लै अपन पनसल्ला संगी- महेन्द्र। जखन दुनू गोरे गामक लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखेलक। मुदा लगले मन आगू बढ़ि अपन तीन दिनक गाम-बास दिस बढ़लै। एका-एकी पचासोसँ ऊपर लोकसँ विचारक समुचित उत्तर पाबए चाहै छी, मुदा भेट कहाँ रहल अछि। राँइ-बाँइ जवाब दैत अन्तमे सभ यएह कहै छैथ जे तोरा मनकेँ महेन्द्रेटा मना सकैए...।

फेर उलैट कऽ मन घुमलै अपन लोअर स्कूल दिस। शुरूहेसँ नीक विद्यार्थी रहलौं, शिक्षको परिवारेमे रहै छला, दिन-राति स्कूलसँ घर धरि पढ़बै छला, इंजीनियर बनलौं, हमहींटा नै बनलौं तीनू भाँइ नीक जगहपर पहुँचल छी। तइ बीचक विवाद अछि। विवादो तँ विवादे छी। केतौ विचारसँ विचारि हल कएल जाइए, तँ केतौ कपार फोरेलोपर बे-हले रहैए। तहूमे अपना तँ आरो साँप-छुछुनैरक पइर भऽ गेल अछि। भैयारीमे जेठ छी, सभ दिन पिता तुल्य ओहो–दुनू छोट भाए–सभ बुझैत आबि रहल अछि अपनो ओहने–पिता जकाँ–बेवहार बना निमाहैत एलौं।

मुदा अखुनका जे घुरछी-ओझरी तीनू भाँइक बीच सम्पैतक अछि ओ जँ विचारसँ नै सोझराएत तँ एक सीढ़ी निच्चाँ खसबे करब। पितृ तुल्यसँ भातृ तुल्य भैयारीक सीढ़ी दियादीमे बदैल जाइ छइ। सोगाएल धीरेन्द्रक मनमे फेर उठल- अनका लग जह-पटार हाथो तँ नहियेँ पसारल जा सकैए, ओ तँ ढंगेसँ पसारल जाएत...।

घूरक करसी उसका खोंरना महेन्द्र रखबो ने केलक आकि मन चनैक गेलइ। चनैक ई गेलै जे दरबज्जापर धीरेन्द्रकेँ बैसा आएल छी, हाथ-पएर धोइक बहन्ने। तैठाम घूर, खोरैमे समय लगि गेल। चाहोक बहन्ना जे बनबए चाहब सेहो की आब ओ जुग-जमाना रहल जे काँच-सुखल जारैनसँ लोहियामे बनत जे कनी बेसी देरियो लगत, आब तँ तेहेन गैस परहक चुल्हि अछि जे केतलीमे दूध-पानि-चाहपत्ती दियौ आ गिलास

कि कपमे चीनी दऽ छन्ना लिअ हाथमे, नै लेब तँ दूधे-पानि जरि जाएत...।

उठि कऽ कलपर महेन्द्र पहुँचबो ने कएल छल आकि मनमे उठलै- जुगो पछाइत भेटलोपर धीरेन्द्र संगी बनि बाजल, दरबज्जापर किछु विचारए आएल अछि, एहना स्थितिमे अपन केहेन स्वरूप हेबा चाही। ओना, संगी, भैयारी, दोस्ती, मित्रताक मिलल-जुलल प्रयोग होइए जे सभ जनैए मुदा सबहक अपन-अपन जगह छइ। की एकरा नकारि सकै छी जे एके समाजक दुनू गोरे छी? तहूमे गामक स्कूलसँ साल भरि कौलेजोमे संगे बितेलौं, जबारी भोज आकि सौजनिया आन गामक संगे-संग गामक सराध-बिआहक भोज एक सत्तैरमे बैस कऽ खेनौं छी आ खाइयो सकै छी। तैठाम तँ विचारणीय ऐछे जे जोल्हाक बनौल वस्त्र जकाँ केतौ सूते ने कहीं घुरछी लगा गिरह बना दिअए..!

मुदा लगले महेन्द्रक मन उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेलइ। बढ़ि ई गेलै जे समुद्र जकाँ संगियोँ, भैयारियो, दोसो-महिम आ सरो-समाज अछिए। चाहक संगी, पानक संगी, गपक संगी, काजक संगी, यात्राक संगी। ने जानि केते रंग-बिरंगक संगी होइए। तहिना भैयारियो अछि। सहोदर भाए, बेमातर भाए, पितियौत भाए, पिसियौत भाए, ममियौत भाए। ने जानि केते रंगक अछि। तहिना ने दोसो-महिम आ सरो-समाज अछि। तखन तँ भेल जे ओ एक बेर संगी कहलक हम हजार बेर संगी कहबै। संगियोँ तँ संगियेँ भेल, एक कल्प-लोकक भेल तँ दोसर भाव-लोकक, तेसर अभाव-लोकक भेल तँ चारिम विचार-लोकक आ तेतबे किए! तखन? तखन तँ यएह ने जे पुरबा-पछबा ने रेड़ दिअए। जँ अपने रेड़ैत रस्ता नै चलब तँ केतौ ओंघरा जाएब। तहूमे बिनु देखैत हवा धरतीसँ अकास धरि घेरने अछि...।

हाँइ-हाँइ कलपर हाथ-पएर धोइ महेन्द्र दरबज्जापर पहुँचबे कएल आकि दस बर्खक मझिली बेटी चाह नेने पहुँचलैन। थारीमे सँ गिलास

उठा महेन्द्र धीरेन्द्रक हाथमे देलक। हाथमे चाह तँ धीरेन्द्र पकैड़ लेलैन, मुदा मनमे ई नै उठलैन जे दस बर्खक बच्चिया कियो आन भेल, जँ दुनू गोरेकेँ हाथमे दैत तँ बराबरीक विचार तँ आबिये जाइत। मुदा तँए कि धीरेन्द्रो चुकल। नइ, नइ चुकल। दुनूक अपन-अपन तीर-कमान, गुल्ली-गुलेती। जहिना महेन्द्र धीरेन्द्रक विचार पकैड़ लेलक तहिना अपना विचारे धीरेन्द्रो अपन विचार पकड़ने। पकड़ने ई जे लोअरे स्कूलसँ सभ तरहेँ महेन्द्रसँ बीस रहलौं। जेहने पढ़ैमे बीस, तेहने पढ़ैक बेवस्था बीस, किए कहियो किताबक ऊपर चढ़ि चारू दिस नजैर खिड़ा किताब लेल कानए पड़ैत। गामक जेठ-रैयतिक परिवार। नोकर-चाकर परहक जिनगी।

एक घोंट चाह पीविते महेन्द्र, ओना एका-एकी धीरेन्द्रक तेसर घोँट छल, बाजल-

"संगी चाह केहेन बनल, हमर परिवार तँ गमैया रहल, तहूमे परिवारमे चाह हाले-सालमे आएल अछि। पोतीकेँ अखन नीक जकाँ बनौलो ने होइ छै अभियास नहियेँ जकाँ छइ।"

महेन्द्रक विनीत विचार सुनि धीरेन्द्र फर्मेल्टी निमाहैत बाजल-

"बड़ सुन्नर! बड़ सुन्नर चाह अछि!!"

मुदा जिनगीक खान-पान सेहो तँ मनमे एकटा सीमा बान्हिये लइए। जे एक-रंगाह स्तरेटा मे सम्भव छइ। जँ कम स्तरक परिवार देखौंस करए लगत तँ परिवार दिशाहीन हुअ लगतै। चाह सठलो ने छल आकि धीरेन्द्रकेँ महेन्द्र फेर पुछलकैन-

"संगी, हम तँ चाहक बाद पान खाइ छी, अहाँ की खाइ छी?"

महेन्द्रक आग्रह सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठल जे खाइ छी से जँ मुहसँ निकैल जाए जे ऐठाम उपलब्ध नै होइ, तखन तँ घरक महतपर पड़त, तैसंग अपनो परीक्षा तँ भइये जाएत, तेतबे नै ओइसँ दुनू परिवारक दूरी सेहो बढ़त। तरे-तर धीरेन्द्रक मन पसिज गेल, पसिझते बाजल-

"भाय, मोन अछि की नै जे अहूँकेँ पिताजी आ हमरो पिताजी एक्के दिन स्कूलमे नाओं लिखौने रहैथ?"

धीरेन्द्रक स्मृतिक संग भाषा सुनि महेन्द्रोक मन हलचलाएल। हलचलेबो केना ने करैत, बाल-स्मृति भेल! तहूमे डायरी मेन्टेन नै करैए। सेहो तँ जखन खर्चासँ बेसी आमद फेकए लगैत तखन ने डायरीक खगतो होइत। जन्म, मुड़न, बिआह, दुरागमन किए लोक डायरीमे लिखत, ओ तँ विधातेक डायरीमे छैन। किछु मोन पाड़ैत महेन्द्र बाजल-

"भाय, कनी ठेकना कऽ कहह तँ, कनी-मनी मोन अछि आ कनी-मनीक बीचमे कटारि जकाँ भऽ जाइए।"

महेन्द्र जे विचारि बाजल हुअए, मुदा विचारक दुनियाँक भारी प्रश्न तँ उठिये गेल। उठि ई गेल जे स्कूलमे पिता एक्के दिन दुनू गोरेकेँ दाखिल करौलैन, मुदा विद्यालयमे दुनूक बीच केते दूरी बनल रहल आकि नजदीकी रहल?

धीरेन्द्रक सम्पन्न परिवार, दियादो-वाद तहिना। मुदा जेहेन परिवारक महेन्द्र छल, ओ छेहा श्रमजीवी किसानक परिवार। श्रमजीवी किसान ओ भेला जे अपन नियमित समय किसानी जिनगीमे लगबैत रहला। अतिरिक्त काज भेलापर अतिरिक्त उपजो-बाड़ी बढ़ैए आ अतिरिक्त लोकक खगतो बढ़ै छइ। मुदा अपनाकेँ आगू बढ़ैसँ पहिने रोकि महेन्द्रक मनमे उठल जे जरूर धीरेन्द्र किछु बजता। ओ की बजता अही गुमा-गुमीमे महेन्द्रक बोल बाधित भऽ गेल। स्कूलमे संगे नाओं लिखेलौं, सभ लिखबैए तइसँ सभ संगियेँ थोड़े होइए? संगी तँ वएह ने हएत जे संगे-संग एकठाम बैस गुरुजीक विचार सुनि अपनोमे विचारि एक मत बनाएत, से तँ कहियो ने भेल। जैठाम धीरेन्द्रक घरमे किताबक अलमारी भरल, तैठाम महेन्द्रक दरबज्जाक ओसारक खुट्टीमे गीता, रामायण ललका कपड़ामे बान्हि ओइ आशासँ टाँगल जे हमरो घरमे घर्म-

ग्रन्थ अछि...।

मिथिलांचलक मिथि-मालिन किसान परिवार ओ परिवार रहल अछि जैठाम अतिथि-अभ्यागतकेँ ओकाइत अनुसार सुआगत-सत्कार खेबेटा-ले नै, जिनगीक क्रिया-कलापकेँ सेहो मथि-मथि एक-दोसरक विचारकेँ अनुकूल बनबए लेल सदैत अग्रसर रहै छल। बाढ़ि आएल आकि रौदी भेल, एक संग एक गामेक लोककेँ नै एक इलाका भरिक लोककेँ विपैत पड़ैत, तैठाम तँ ई ने विचार कएल जाए जइसँ दुनूक नीक समाधान होएत। जइसँ समय पबिते बाढ़ि-रौदीक कोनो झटका-झुटकी शेष नै रहैत। गाछ-बिरिछ जँ खसबो करैत तँ नवका लगा पोसि-पालि फड़ै-जोकर बनौल जाइत। अपन दस पीढ़ीक इतिहास एक-दोसरसँ महेन्द्र पबैत आएल छल। केना केते मेहनैतसँ खेत कीनल गेल आ धुआँ जकाँ हवामे उड़िया गेल, फेर केना भेल आ केना गेल। दैवी प्रकोपसँ बेसी दानवी प्रकोप किसानकेँ झेलए पड़लै...।

फेर लगले मनमे उठलै- अनेरे खनदानी थीसिसमे ओझरा गेलौं। जइ दिन पिताजी दुनियाँ छोड़लैन पाँच बीघा जमीनबला परिवार देने गेला। ओही पाँच बीघाक सीमामे गामक सम्पन्न परिवार बनौने छला। जोतसिम जमीनक संग गाछी-कलम, बास-अगबास सभ किछु...।

दरबज्जापर गुमा-गुमी देखि अगुरवारे महेन्द्र बाजल-

"भाय, गामेक स्कूल किए मोन पाड़ै छी, हाइ स्कूल आ कौलेज किए बिसरै छी। पढ़ला-लिखला पछाइत ने अहाँ गाम छोड़लौं?"

सह पबैत धीरेन्द्र बाजल-

"जहिना सभ बात तोरा मन छह तहिना ने हमरो अछिए।"

धीरेन्द्रक सहटैत विचार देखि महेन्द्र बाजल-

"भाय, तूँ साइंस पढ़लह, हम हायर सेकेण्ड्री तक एवरी-डे-साइंस पढ़लौं सएह ने, तँए कि संगी नै भेलौं?"

संगीक सह पबैत धीरेन्द्र बाजल- "भाय, परिवारमे एहेन मारूख स्थिति ठाढ़ भऽ गेल अछि जे किछु केने किछु ने बनैए!"

जिज्ञासु होइत महेन्द्र बाजल-

"से की! से की भाय?"

धीरेन्द्र बाजल-

"भाय, चिक्कारी-चौकारीसँ बहुत भेँट भेल अछि। गामो तँ एहने सबहक छिऐ। मुदा मननुकूल समाधान केना हएत, सएह नै बुझि पाबि रहल छी।"

धीरेन्द्रक विचारमे महेन्द्रकेँ किछु बुझैक जिज्ञासा बढ़िते मनमे उठलै। उठिते गाछक जड़िक लगल गराड़-पिल्लूकेँ जहिना कोनो खोंरनीसँ खोरि निकालल जाइए तहिना खोंरनी चलबैत बाजल-

"भाय, एना झाँपल-तोपल बातसँ काज नै चलत।"

महेन्द्रक प्रश्न सुनि धीरेन्द्रक मन चोट खएल साँप जकाँ छटपटाए लगल। परिवारक बात छी, केना दोसरकेँ कहब जे भाए-भैयारीमे सामंजस अपना बुते नै होइए। कहू जे तीनू भाँइ, ऊपरा-ऊपरी छी। जहिना पढ़ल-लिखल तहिना पद-प्रतिष्ठामे सेहो। तखन किए ने परिवारक ओझरी सुलैझ रहल अछि..!

धीरेन्द्रक मन ओझरा गेल। आगू किछु बजैक फुड़बे ने करइ। धीरेन्द्रकेँ चुपी साधल देखि महेन्द्रक मन महैँक गेल। महैँक ई गेल जे भाय, पढ़ल-लिखलकेँ इशारा काफी। अपने ने बी.ए. पास करि खेती-पथारीमे लगने स्कूल-कौलेजक बात बिसैर गेलौं, मुदा धीरेन्द्र तँ से नै रहल। ओ तँ सभ दिन कागजेक कीड़ा बनल रहल। तेहेन ठाम लिखतन-बकतनक भेद तँ अछि। तइसँ नीक हएत जे पाँचो ओंगरीसँ इशारा कऽ दिऐ, जे आरो ओझरा जाएत। जइसँ चाहे तँ अपने ऐगला समय मांगत, नै तँ अपन पनचैती अपने करत। जँ लोक अपन पनचैती अपने करए, ई

तँ घीबोसँ चिक्कन हएत किने। मुदा से हएत केना..?

बाजल-

“धीरेन्द्र भाय, खेत-पथार जमीन-जाल छी। अनेरे सब ओइमे ओझरा जाइए। खेतेक बात सुनि लिअ। गाम-गामक माटि भिन्न-भिन्न अछि आ गाम-गामक कोन जे एक्को गाममे सेहो तेहनो अछि आ एक-रंगाहो अछि। ई तँ भेल माटि।

आब चलू माटिक उर्वरा शक्तिक पाछू- उस्सर आ बाउल, सभसँ गेल गुजरल अछि, मुदा तँए कि ओहो आँखि नै देखौत? एतबो तँ बजबे करत जे केते प्रतिशत तागत अधिक अछि आ केते प्रतिशत कम अछि। बेसी उस्सर हएब तँ सज्जी उपजत, तइसँ कम हएत तँ कुश उपजत, तहूसँ कम हएत तँ मरूआ-कुरथी उपजत, नै जे तहूसँ कम हएत तँ धारक कातक खेत जकाँ दोसर माटियो पचा कऽ अपन बना लेत। जहिना डोह-डाबर, नदी-नालाक ठेकान नै तहिना ने माटियोक अछि। पानिक सोहे-सोहे धनीक जकाँ घराड़ी दफना लइए। तहिना तँ बाउलो अछि, ओकरो खचरपनी कम छै, एक दिस जहाँ कहिऔ जे ‘हाथी पिआसल, घोड़ा पिआसल, दल-दल पानि।’ आकि दलदला कऽ थभैक जाएत, जहिना लिखैकाल कलम बोकैर ढबैक जाइए। तँ दोसर दिस पानिक बदला तेल निकालैए! ओहो केना अपने हरदा बाजि देत जे कियो मरूभूमि कहतै..?

भाय, दुनियाँ अनन्त छइ। अनेरे मनमे सोग-पीड़ा रखने छह, निकालि कऽ फेक दहक।”

महेन्द्रक बात सुनि धीरेन्द्रक हबटुटु मन हूबगर भेल। हूबगर होइते हूबा करैत बाजल-

“भाय, पचास-पचपनक उमेर भऽ गेल, तोरो भइये गेल हेतह, केते दिन जीबे करब। मुदा तेतबो दिन बाप-दादाक घराड़ी नै बँचा सकब, मान-समान नै बँचा सकब, तेकरे दुख बुझह आकि सोग..!”

धीरेन्द्रक पसिझैत हृदए देखि महेन्द्रक मन मसैक गेल। मसैकते तोष-भरोस दैत बाजल-

"भाय, की ओझरी भैयारीमे भऽ गेल अछि से सोझरा कऽ बाजू।"

धीरेन्द्र-

"अहाँकेँ बुझले अछि जे अपने सरकारमे इंजीनियर छी, सुरेन्द्र बैंकमे छैथ आ छोट भाए अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसीमे छैथ।"

धीरेन्द्रक विचारमे सहमत जतबैत महेन्द्र बाजल-

"हँ से तँ छैथे। भगवान कोन कमी देने छैथ। अरवन तँ अहीं सबहक दिन-दुनियाँ जागल अछि।"

मलसारि भरल महेन्द्रक विचार नीक जकाँ धीरेन्द्र नै बुझि पेलक। महेन्द्रक झाँपल विचार रहै जे 'राम नामक लूट अछि लूटि सके से लूटए' आ दोसर दिस तेकरे ओझरी! खेतोक की अधिकारे-टाक ओझरी होइ छै, ओकरा तँ अपने जोत-कोर करए पड़ै छै, फसिल लगौल जाइ छइ। आ जखने फसिल धरतीसँ उठै छै आकि खढ़-पात दाबए लगै छइ। कीड़ी-फतींगी भिन्ने अबै छै, तैपर सँ भेल जअ मे पाथरो खसिते छइ।

धीरेन्द्र-

"भाय, की दिन-दुनियाँ जागल रहत, ओ ते ने जागल अछि आ ने सुतल। जँ सुतलो रहैत तैयो निचेन रहितौं, सेहो ने अछि। ने घरक रहलौं आ ने घाटक।"

महेन्द्रक सिनेह उमैड़ पड़ल, बाजल- "भाय, एना नै काज चलत, तीनू भाँइक जीवन देखए पड़त। जेहेन लोकक जीवन होइ छै तेहने विचार ओकरा मनमे अबै छइ। तँए थामि-थामि मनक बात बाजू।"

हृदए खोलि धीरेन्द्र बाजल- "भाय, मनक बात कहै छी नोकरी करए बाहर गेलौं मुदा सेवा- निवृत्तिक पछाइत गाममे रहैक विचार

अछि।”

बिच्चेमे लोकैत महेन्द्र बाजल-

“ऐसँ नीक विचार की हएत! आइए नै, अदौसँ मिथिलाक लोक ढाका-बंगाल तक कमाइ-खटाइले जाइ छला, तँए कि हुनका सबहक परिवार बिलैट गेलैन? अखनो ठाढ़ छैन!”

अपन सह पबैत सौनक मेघ जकाँ धीरेन्द्रक मन उमैड़ घनघोर वर्षा जकाँ बरिसए लगल-

“भाय, मझिला भाए- सुरेन्द्रक विचार अछि जे अपन हिस्सा सभटा जमीन बेचि बैंकमे जमा कऽ लेब। तहिना दोसरो भाइक विचार सएह छै, मुम्बैमे फ्लैट कीनब तँए गामक जमीन बेचि लेब।”

महेन्द्र-

“अपन हिस्सा कियो किछु करता, अहाँक हिस्सा कियो थोड़े लेता?”

धीरेन्द्र-

“तेतबे बात रहैत तँ कहितिऐन जे जेते कुल्लम जमीन अछि, भाग लगा बेचि लिअ, मुदा तीन-तसिया सभ तेहेन भऽ गेल अछि जे घराड़ीए पर डाक करए चाहैए। आब कहू जे अखन अपने तँ पान-सात बर्ख गाम नहियेँ आएब, तेकर पछाइते आएब। मुदा जे तीन-तसिया डाक करत ओ बहरबैया बुझि घराड़ीक नाके-कान नै काटि लेत?”

महेन्द्र-

“भाय, बहुत नमहर घुरछी अछि। एक दिने नै फरिछाएत कल्हुका समय फेर रखू।”

बजैक वेगमे महेन्द्र तँ तत्काल टारि देलक मुदा काल्हि तँ फेर वएह चर्च हएत। सम्पैत, सम्पैत छी, मुदा ओकरो अपन विभिन्न रूप छइ।

चालबाजक तँ चालि चलिते अछि। ओना, ओहो अपना गतिये ओइ संस्कारमे आबि गेल अछि जे खेत-पथार इज्जत-प्रतिष्ठा छी। केना इज्जत बुझल गेल, ई भिन्न बात। आइ ओइ मोड़पर पुश्तैनी सम्पैत परिवारक बीच पहुँच गेल अछि जेकरा नव सिरा चाही। जँ से नै भेल तखन भँसियाइत-भँसियाइत तेते भँसिया जाएत जे बेकाबू भऽ जाएत...।

बेकाबू भेलासँ जहिना चुल्हि परहक दूधकेँ खुदियाइते जिनगी बदलए लगै छै, भलेँ ओहने छेना किए ने भऽ जाए जेकर रसगुल्लो ने बनत, तहिना चाउर टुटने खुदियाइए, जेकर फल वेचाराकेँ भोगए पड़ै छै जे भातक जगह छोड़ि रोटीक जगह पकड़ैए! तहिना ने जिनगियो अछि।

❑

शब्द संख्या: 2887, तिथि: 17 नवम्बर 2014

खटहा आम

तीन मास पहिने अर्थशास्त्र विभागक प्रोफेसर छीतन भाय रिजाइन लगा गाम आबि गेला। गामेमे रहब, रट लगि गेलैन। रट ई लगलैन जे अनेरे नगद-नारायणक फेड़मे पड़ि अपन देव-पितर बिसैर गेल छी, मुदा कौलेजक भाषामे बजै छला, जइसँ गामक लोक बुझिये ने पबै छल जे की बजै छैथ। भाय! गामो-घरक लोकक तँ जिनगी बदललै आब, टी.भी.मे नांगट नाच देखैत रहैए आ मने-मन गुनगुनाइत रहैए-

'नन्द भवनसँ निकलल हे गिरिधर गिरधारी...।'

भाय! कोन गिरिधर गिरधारी से तँ ओ जानए। बहुरूपिया कृष्ण कखनो महाभारतक शंख फुकै छैथ, तँ कखनो गोपीक संग वृन्दावनक रास करै छैथ, कखनो मक्खन चोरा कऽ खाइ छैथ, तँ कखनो घाट परहक साड़ी लऽ कऽ भगै छैथ, तँ कखनो गाइयक चरबाहि करैत गोबरक पहाड़ बनबै छैथ...।

दरबज्जापर बैसल छीतन भायकेँ अपन नोकरी छोड़ब मनमे उठलैन। दस बर्खक अनुभवी शिक्षक जखन अप्पन अर्थशास्त्र पढ़लैन तखन मन उड़ैज गेलैन जइसँ उर्जावान भऽ गेला। अपन शक्तिक बोध होइते अपन भवितव्य देखलैन। देखिते तियाग पत्र दऽ कऽ गाम चलि एला...।

छोट भाए बुझि अपन फर्मेल्टी निमाहैले छीतन भाय लग पहुँच, चिक्कारीमे कहलयैन- "भाय, असगरे की विचारि रहल छी?"

चिक्कारी ई जे बुझल रहबे करए जे प्रोफेसरक जिनगी असगरूआक भऽ जाइ छइ। गाम थोड़े छी, जे चाहक चौखरी, पानक चौखरी, ताड़ीक चौखरी, तासक चौखरी हजारो किसिमक चौखरी लगा दस गोरे एकठाम हब-गब करैत रहता। एकांत बुझि पड़लैन तँए, कि की, आकि मन बेथाएल रहैन तँए, हमरो अर्थशास्त्रेक बात कहए लगला! आकि बजैक वेगमे जनु अपन कौलेजक किलास धियानमे चलि एलैन तँए, ओही लहजामे बाजब शुरू केलैन-

"बौआ, पहिने चाह पीबह। जेते हल्लुक माथ रहतह तेते नमहर मोटा उठबैमे हल्लुक बुझि पड़तह।"

जहिना चिल्होरिक टाँहि सुनि लोक बुझि जाइए तहिना भोजियो बुझि गेल रहथिन। भौजीकेँ अपन काजपर बिजलोका जकाँ नजैर रहै छैन। सेरिया कऽ नीक जकाँ बैसबो ने कएल रही, माने सोझहा-सोझही बैसी आकि कनछिया कऽ बैसी, ई सोचिते रही। कहुना भेला तँ जेठ भाय भेला तैपर पढ़ौनीक काज करै छैथ। तहूमे बामा भाग किनछिया कऽ बैसी आकि दहिना भाग। अही तारतम्यमे रही। तइ बिच्चेमे भौजी चाह नेने आबि बजली-

"गामक पुरुखकेँ बैसैयोक लूरि नै!"

मुदा धड़फड़ा कऽ किछु बाजबो नीक नहियेँ होइए। एके शब्द अगियाएलमे अगिया जाइए आ पानियाएलमे पनिया जाइए। तँए करखन रज तम भऽ जाएत आकि सत भऽ जाएत, तेकर कोन ठेकान। तेतबे किए, तमो रज आ सत बनिते अछि...।

मुदा चुटकी तँ चुटकी छी। एक बेरे थोड़े फरिआइए, ओ तँ दोहरा कऽ फरियाएत नै तँ तेहरा कऽ। जँ एक बेरे फरियाइत तँ तुलसी पात तोड़ैकाल तीन बेर चुटकी किए बजबए पड़ै छै..?

बजलौं- "भौजी, आब वसन्ती रंग चढ़ल हेन। बिआह मोन पड़ैए

की नै, हमहीं परोफेसर-भैयाक लोकनियाँ रहिऐन।”

तइ बिच्चेमे छीतन भाय बजला-

“तहूँ केते नाङेर भारी केने छह। एते दिन प्रोफेसर छेलौं, आब भैयारी भेलौं।”

हमरो सुतरल कहलयैन-

“भैया, अहीं सभ गाममे कटा-कटी कऽ गामकेँ दुइर कऽ देलिऐ, सभ दिन भैया कहैत एलौं जँ आब प्रोफेसर भैया नइ कहब तँ अहूँकेँ मनमे की हएत। भैयाक पाछू प्रोफेसरक नाङेर सटि गेल किने।”

छीतन भायकेँ बजैक मन रहैन, तँए हँसी-मजाककेँ हटबैत बजला-

“बौआ, हम तियाग-पत्र किए देलौं से तँ कहबे ने केने छेलिअ आ तोहूँ ने पुछलह?”

कहलयैन-

“भैया, अहाँकेँ की कहब, सभ गप लोक सभठाम बजैए मुदा पाइ-कौड़ीबला बात थोड़े बजैए। तँए अगुरबार पुछब अहूँकेँ थोड़े नीक लगितए।”

एकमुहरी विचार छीतन भाइक मनमे अँटकल रहैन तँए दोसर बातपर मने ने टिकैन।

बजला-

“बौआ, जड़ियेसँ कहै छिअ। जइ दिन नोकरी छोड़लौं तइसँ आठ-नअ दिन पहिलुका गप छी। मखना तारीकपर लहेरियासराय गेल रहए, घुमतीकाल डेरापर आएल। ऐबते बाजल ‘प्रोफेसर साहैब, अहाँ तँ राजा भऽ गेलौं...।

‘राजा’ सुनि अपन मन तँ कनी आगू-पाछू करए लगल जे राजा तँ भेल भूपति! से कहाँ अछि! मनमे भेल जे भरिसक राति-बीच दुआरे, गाम

नै जा हेतै तँए, रहत। अपन डेरा अछि, ओढ़ना-बिछौना सभ अछिए। किछु ने बजलौं।”

बिच्चेमे टोकि देलिऐन-

“भैया, ई तँ धरमक काज भेल। अनका जकाँ नै ने जे गौआँ-घरूआकेँ देखब तँ मुँह घुमा लेब जे दस टाका खरच ने भऽ जाए।”

हमर गप छीतन भायकेँ नीक लगलैन। बाढ़िक पलाड़ी जकाँ मन उमैड़ गेलैन। अपने मने बाजए लगला-

“राजा सुनि अपन मन तँ नै तर-ऊपर भेल मुदा पत्नीक मन भऽ गेलैन।”

मुस्की दैत पुछलयैन-

“की भऽ गेलैन, भौजीकेँ?”

बजला-

“भऽ ई गेलैन जे जहिना बिनु पढ़ल-लिखल गुरुक पत्नी गुरुआइन आ डॉक्टरक पत्नी डॉक्टर-साहिबा बनि जाइ छैथ। तहिना हुनको भऽ गेलैन। हमरा लगसँ मखनाकेँ उठा चुल्हिये लग बैसा फदर-फदर गपो करए लगली। बीच-बीचमे हँसबो करैथ आ नेपो झाड़ैथ। तैसंग केता बेर चाह दुनू गोरे पीलैन तेकर ठेकान नहि।”

बुझि पड़ल जेना छीतन भाइक मन औरो पला गेलैन अछि। टोकलयैन-

“मखनासँ कोनो गप भेल की नै?”

बजला-

“बड़ीकालक पछाइत जखन भानस लगिचा गेल, चुल्हि-चीनमार बहारै बेर भेल तखन ओ लगमे आएल। पुछलिऐ- सोझे भाटक राजा मखन बना देलह आकि भाटिक जैड़ोमे किछु छै?”

मखनोक मन फुलाएल रहबे करइ, बाजल-

“भाय साहैब, करोड़-पति भेने लोक राजा भऽ जाइए, से ते अहूँ भइये गेल छी।”

मखनाक बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे की कहि देलक। मुदा अपनो मन धिक्कारए लगल जे एकटा साधारण आदमीक बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं! मुदा दोहरा कऽ पुछबो नै सोहाएल। नै ऐ दुआरे सोहाएल जे केना कऽ एकटा बुझौनिहार अपने मुहेँ बाजी जे बातक गूढ़केँ नै बुझलौं। मन ठमकल। ठमैकते कनियेँ ठहरलौं आकि मन जिराएल। जिराइते उठल। किए ने मखनाक बाजल बात बुझलौं! मुदा जहिना ‘बाउ’ शब्दक अर्थ बुझैले आगू-पाछूक शब्दक ताल मिलबए पड़ै छै, नै तँ ‘बाउ’क माने बेटा भेल आकि ‘बाप’ से बुझिये ने पेबै तहिना भऽ गेल...।

चपाड़ा भरैत मखनाकेँ कहलिऐ-

“मखन, तूँ ते बड़का कवि बनि गेल छह। तोहर दोहाइ जरूर पड़बे करत। हमरा सबहक कमाइये की अछि जे तोरा सन-सन लोकक सुआगत करब।”

एक दिस जहिना पत्नीक मन रानीक गद्दीपर बैसल तहिना मखनोक। तहूमे केता बेर चाह पीलक तेकरो ठेकान नै, मन गरमाएल रहबे करइ, बाजल-

“भाय साहैब, अपने तँ आब राजा भऽ गेलिऐ। कोन चीजक कमी भगवान देने छैथ जे अनेरे बजरूआ लोहा महींसिक दूध खाइ छी, सुच्चा दही भोजे-काजमे खाइत हएब? ललमुहाँ रहुओ तँ बिसरिये गेल हएब?”

मखनाक एक-एक शब्द जेना हमरा छातीकेँ बेधैत रहए। विद्यापतिक उगना जकाँ अनेको विचार मनकेँ अलगा देलक। आगू की बाजी से विचारेमे उपरौंझ हुअ लगल। विचारक क्षेत्र आ सच्चाइक क्षेत्रक बीच एते दूरी बनि गेल अछि जे बेसी गोरे अही कटारिमे खसिते अछि।

मुदा पत्नीक फुलाएल मन फगुआ-जोगिराक भोलाबाबा जकाँ अन-धन सोनमा लूटबैले तैयार रहैन। तैयारो केना ने हेती वा रहितैथ, राजगद्दीक खुशनामामे जँ पमरियोकेँ साड़ी पहिरा नै नचैबतैथ तँ खुशीए की भेल। केबाड़क अढ़ेसँ बजली-

"मखन, भगवान अहाँ मुँह अमरीत बरसाबैथ।"

मखना की जानए गेल जे अमृताएले मुँह ने अमृत वरिसौत। अमृत सुनियेँ कऽ मन उधिया गेल छेलइ। कहलकैन-

"भौजी, अहूँ ससैर कऽ लगमे आउ। जे बात काना-कानीक छी ओ दोसराइतकेँ सुनब नीक नै हएत।"

मखनाक बात सुनि विस्मित भेल रही। मुदा पत्नीक जिज्ञासा आगूए-आगू गाइक ओइ बच्चा जकाँ रहैन जे दौड़ कऽ गाएसँ दू-लग्गा-चारि-लग्गा आगू जा ठाढ़ भऽ पाछू माए दिस तकैए आ आँखि मिलिते गाए अपन मातृत्व शक्तिक बोधक अमृत पीब आगू डेग उठबैत रहैए...। तहिना पत्नीकेँ लगमे ऐबते मखना बाजल-

"हम बीचमे बैसब।"

ओना, मखनाक मनमे उचड़ैत रहै जे हिनके सन-सन लोक ते गामो उजारलक आ भैयारीक सम्बन्धोकेँ मेटौलक...। मुदा लगले मनमे एलै जे ई कु-नजरिये देखब भेल। सती-सावित्री, सीता, अहिल्या, सुनयना इत्यादि सन-सन किए बिसरा रहलौं अछि। मुदा लगले मनमे एलै जे शहर-बजारमे के केकरा रहए दइए, तैठाम जँ भाय साहैब एते सुआगत केलैन ई हम हिनका विचारकेँ बधाइ दइ छिऐन। बाजल-

"भाय साहैब, अहीं सन-सन धरमतमा लोक सबपर ई दुनियाँ ठाढ़ अछि।"

बैशाख-जेठमे जहिना गैवार-महींसवार बाधमे तामल खेतक गोलापर गोला चढ़ा देबाल ठाढ़ करैए, तहिना हमरा मनपर गोला चढ़ल

जाइत रहए, तँए गुम्मी लधने रहलौं। मुदा पत्नी अपना मनक फुलवारीमे माइलिक बीच अपनाकेँ देखि आरो भकराड़ भऽ कऽ फुलाए लगली। तैपर चाहक चुमकी सेहो चढ़िये गेल रहैन।

बजली-

“मखन बौआ, अहीं सभ ने भाए-बोन भेलौं, हाथ-पएर भेलौं। अहिना जहिया-जहिया दरभंगा आबी तहिया तहिया अबैत रहब।”

ओना, पत्नीक जेहेन बोल निकललैन तेहेन बेवहार नै छैन। भलें वृन्दावनेक राधा अपनाकेँ किए ने मानैथ, मुदा अधलो केना कहेती। जे बेवहार मखनाक संग कऽ रहली अछि, ओकरा कम नै आँकल जा सकैए। भलें जँ काज आगूओ शेष अछि तँ आगू समैयो तँ शेष अछिए। की हुनका मनमे आबो नै आबि सकै छैन जे रोगाएल-टटाएल परिवारक मखन छी, किछु भड़ो-किराया-ले आकि किए कचहरीक चक्करमे पड़ल अछि, ओकरो मेटबैक उपाय सोचितैथ। खाएर जे से...। हमहूँ गुम्मे रहलौं।

ओना, हमर गुम्मी आ हुनकर चढ़ल मन देखि मखनोक मनक मृदंग, मृदंगे नै ढोल-मृदंग दुनू चढ़ल जाइत रहइ। कहलकैन-

“भौजी, देखले दिनमे जइ जमीनक दाम तीन हजार रुपैए कट्ठा छेलै ओ आइ तीन लाख रुपैए कट्ठा भऽ गेल। तहूमे अहाँकेँ तेहेन ओ चौक परहक बड़का कोला अछि, ओ तँ बुझू जे रजधानी भऽ जाएत। तेहेन जगजियार चौक भऽ गेल जे ओइठाम चाहब तँ बजार लगा देब। कमसँ कम बान्हक कात दिससँ दू साए घर बना दिऐ तँ लाखो भाड़ा हएत। अनेरे भाय साहैबकेँ अहाँ अपनो नोकर आ अनको नोकर बनौने छिऐन।”

मखनाक बात सुनि अपने उठि कऽ टहलए लगलौं। मने-मन विचारए लगलौं जे हजार-लाखमे फानि गेल! मुदा तखनो जँ अपने नै

ताकब तँ केकरा के तकलक जे हमरे ताकत। मुदा अखन दरबज्जापर आएल गामक भैयारीकेँ छोड़ि.., विचारो करैक उचित समय नहियेँ अछि। फेर घुमि कऽ आबि बैसलौं। तैबीच मखना बाजि चुकल छल, 'भौजी, उ बड़का खरहोरि जे अछि, ओइमे एकटा बोरिंग गड़ा देबै आ बीघो भरि हमरा खेती करैले जहिया दऽ देब तहियासँ दुनू साँझक तरकारीक भार अखने गछि लइ छी।'

मने-मन मखनाक बातकेँ हमहूँ नोट कऽ लेलौं। मुदा लगले मन उछैट गेल। उछैट ई गेल जे यएह मक्खन चोरि तँ वृन्दावनक लीला छी! मुदा घड़ीक चालिसँ चालि मिला पत्नीकेँ कहलयैन-

"दुनू भैयारी एकेठाम बैस कऽ खेबो करब आ किछु गाम-घरक गपो-सप्प करब आ अहाँ रूक्मिणी जकाँ बिअनि हौंकब।"

'बिअनि'क नाओं सुनि पत्नी उठैत बजली-

"मखन बौआ, अहूँ की पानिक मक्खन थोड़े छी, बकेनमा महींसिक ने दूधक मक्खन छी। ऐठामसँ गाम पहुँचते कोला-कोली सेरिया जोत-कोर करए लागब। जहिया हम सभ गाम आएब तहिया देखब।"

जेहने भूख जगल हुअए तेहने अनुकूल जगह जँ भोजनो-आरामोक हुअए तँ एहने संयोग संयमक बाटे चलैए। सएह भेल, चौपेतल कम्मलक आसनपर बैसते जहिना अपन मन मखनाक मन पढ़ए लगल तहिना पत्नी हाँइ-हाँइ कटोरा-कटोरी साँठए लगली। पानि ऐ दुआरे चढ़ि गेल रहैन जे मखनाक संग जखन भोजनक दौन मे ओझराएल रहब किने तैबीच अपन मैलकियतक गप पत्नी चला लेती। किएक तँ हमरा परोछेमे मखनाकेँ खेतक जुआन दऽ देने छेलखिन। मखनो खेती करैक भार उठा नेने छल...।

मनमे बेर-बेर उठए लगल जे अनेरे लोक अपन सम्पैतकेँ नै जगा दुनियाँ घुमि रहल अछि। मुदा से अपने बुझने हएत आकि अनको

विचारमे विचार साटि विचारैत करैयो पड़त? तहिना मखनोक मन जगलै। जगबो केना ने करितै, जखने दूध तखने मक्खन, जखने मक्खन तखने घी। मुदा भेड़ी-घी आब केतए भेटत जे माथमे लगा दरद भगाएब। भानसे बेर मखना माछक कुटियापर हीक गाड़ि अँखिया नेने छल।

भाय, भोजमे तँ वएह खेनिहार ने ठकाइए जेकरा पातपर भोजनक विन्याश आगू-पाछू परसल जाइए। मुदा मखनाक सोझमे भानस भेल, जीबलाह रहैत तँ लोहियेसँ निकालि-निकालि लोलक पानि मिझा नेने रहितए, मुदा मखनो अपनो अपन अस्तित्व तँ जनिते अछि। आखिर किछु छी तँ पुरुखक बेटा पुरुख तँ छीहे। एतबोकाल धिरित नै राखल हेतइ। एक तँ ओहिना अनठिया चाह पीनिहार जकाँ लोभे पेट फुला नेने अछि। मुदा भानसक संगी सेहो मखन रहबे करैन। केते खिस्सा-पिहानी कहि-सुनि दुनू गोरे एकबट्ट भऽ गेल, तँए अपनाकेँ भनसिया बुझि मखना आदर करैत कहलक-

“भाय साहैब, केतए गेल ओ पीड़ी सेरसोक तेल-मसल्ला आ केतए गेल ओ ललमुहाँ रहु आ बुआरीक पेटी?”

तैबीच पत्नी थारी नेने आबि गेली। जहिना हाट लगौनिहार हटवार अपन-अपन चीज-बौस पसारि हाट सजा तराजू पकैड़ हाथ पसारैए तहिना अपन काज उसारि पत्नी ओइ ताकमे लगि गेली जे पहिने दुनू गोरे मुहमे लऽ मुहकेँ बरदाबौथ ने तखन खुलल मुँहक सोहर केहेन होइ छै से सुना देबैन। जे कोन सोहर छी, जन्मौटी छी आकि मूड़नक, बिआहक छी आकि असमसानक। मुदा हमरा ऊपर एकटा आरो बड़का चेका माटिक चढ़ि गेल। चढ़ि ई गेल जे केना अपनो पिताक देल पनरह बीघाक किसान परिवारक छी, हमरा सन लोक अपनो आर्थिक विश्लेषण जँ अपने नै करत तँ जे कहियो स्कूल-कौलेजक आँखि नै देखलक ओ केते दूर धरि आगू लऽ जा सकैए? अपना सभ किछु अछि। मुदा मखना कोन नजरिये देखि रहल अछि! ई तँ भने दुनू गोरेक बीचक बात छी भने मुहोँक काज

नै बरदाएत आ जीहो चलबे करत। तँए सुनबे नीक। अपने चुप भऽ गेलौं...।

मुदा पत्नी तँ अपने नियारे तबाह जे धान-दौनक बरद जकाँ जहाँ दाँत, ठोर, जीह चौकल्ला चलए लगलैन आकि अपन प्रस्ताव पेश कऽ देबैन। प्रस्ताव ई जे अखन तक पुरुखक बिनु विचारल बात अछि तँए तीनू गोरेक बीच विचारो पक्का-पक्की भऽ जाएत आ काजोमे हाथ लगत। हेबो तँ अहिना ने करतै जे जे जहिना कले-कले लोक गाम छोड़लक तहिना कले-कले धरबो करत। प्रश्न तँ ओतए अँटैक गेल अछि जेतए संकल्पक दृढ़ताक बात अछि...।

पत्नी मखनाकेँ कहलखिन-

“मखन, अहाँ हमरा जे बीघो भरि खरहोरि उपजबैक बात कहलौं, से अखन मालिको छैथे, मुहाँ-मुहीं कऽ लिअ।”

पत्नीक बात अपना कोनो उझट नै बुझि पड़लैन, मुदा खरहोरियो तँ खढ़क खेतीए छी, तखन ओकरा उपटौल किए जाएत? प्रश्न मनमे उठलैन। मुदा तइमे अपन कोन दोख। जहियासँ हाइ-स्कूल धेलौं आ गाम छोड़लौं तहियासँ छोड़नहि छी, जँ कोनो काज उदेममे गाम एबो करै छी तँ काजे भरि अपनाकेँ समेट खँति नेने छी, मुदा परिवारो तँ पाँच सदस्यक देशे छी, जखने मातृ-भूमि भेल तखने राष्ट्र-भूमि सेहो भेल। जँ से खत्ती दऽ कऽ नै राखल जाएत तँ हूरारेक चालि पकैड़ ने मनुखो चलत जइसँ केमहर हुरैक जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। तँए गुमे-गुम सुनैक जिज्ञासासँ कान ठाढ़ केने रहलौं।

पत्नीक प्रश्न नीक जकाँ धरतीपर खसलो ने छेलैन आकि बानर जकाँ मखना बिच्चेमे लोकैत हमरा दिस तकैत बाजल-

“भाय साहैब, परिवारक भार जँ अहाँ उठा ली तँ अहूँक परिवारक भार हम उठा लेब।”

मखनाकेँ निच्चाँ-ऊपर देखए लगलौं। मनमे छगुन्ता लगल जे कहू एते पढ़ि-लिखि कऽ एतेटा नोकरीक आमदनी अछि तखन ते सदिकाल भूर फुटले रहैए, जे धिया-पुताक पढ़ौनीक फीस पछुआ गेल अछि तँ भारामे नून सठल अछि...। माल टेनक डिब्बा जकाँ ढकर-ढकर करैत परिवार चलैए। छगुन्तामे पड़ल रही तैयो मखनाकेँ पुछैक विचार भेल मुदा सोझे नै, कैरम-बोडक उल्टा गोटी जकाँ। अपन दुखसँ लोक आनोक दुख बुझैए आ आनेक दुखक उपायसँ अपनो दुख मेटबैए, मेटबैक लूरि सीखैए। पुछलिऐ-

"मखन, केते खर्चसँ तोहर घर चलि सकै छह?"

प्रश्न सुनिते मखन बकरी-घी जकाँ टभैक कऽ फद-फदाएल-

"दिन-रातिक समय तँ दिन-रातिक काजसँ चलै छै, भाय साहैब। तखन भेल धिया-पुताकेँ जिनगी चलै-जोकर बना दुनियाँकेँ देब। ई कोन बड़का खर्चक काज भेल।"

गमैया पनचैतीमे जहिना मुँह-दुबरा पञ्चकेँ रेलबे स्टेशनमे टिकट कटौनिहार जकाँ धकियबैत धकिया अपन काज मुँह-गरहा ससारि लइए तहिना पत्नी हमरा धकिया मखनाकेँ अपना दिस करैत बजली-

"बौआ, ओइ बीघो भरि खरहोरिमे की सभ उबजेबै?"

एक तँ ओहिना मखनाक मन थारीक आगत-भोगसँ गद्-गद् रहैए। तैपर एक विचारवान जकाँ विचारै-जोकर काज सेहो आगूमे आबि गेलइ। मुदा कोनो प्रश्नक जवाब ओइठाम देब भारी होइ छै जैठाम हजारो प्रश्न छै मुदा ओइठाम किए भारी रहत जैठाम एकेटा प्रश्न रहत। यएह तँ भेल हल्लुक आ भारी मनक ओझरी-सोझरी। एक तँ ओहुना मखनाक छोट जिनगी, तीन गोरेक परिवार। दू गोरे समकस कमौनिहार तेसर दू सालक बच्चा तँ अपने देह झाड़ि हँसुआ-खुरपी लऽ कऽ संगे-संग खेलाइत रहै छै, तँए किए मनपर कोनो भर पड़ल रहतै। पत्नीक बात सुनि मखनाकेँ कि

कोनो विधाता जकाँ विचारैक जरूरत रहइ, जे देरी लगितै ओ तँ मात्र खरहोरि तोड़ि खेती करैक रहइ। बाजल- “भौजी, बारहो मास तीमन-तरकारीक धनमण्डल घरमे लागल रहत। जक्खैन जे मन फुरत तक्खैन से अपना बाड़ीसँ तोड़ि आनब आ टटका-टटकी खाएब।”

मखनाक बात सुनि पत्नीक मन लोहियामे पड़ल मक्खन जकाँ टभकलैन। विहुँसैत बजली-

“से केना बारहो मास तरकारीक धनमण्डल लागत। ऐठाम बरसातमे तरकारी खाइले जी-जरैत रहैए आ अहाँ केना धनमण्डल लगा देब?”

प्रश्न सुनि मखनाक मनमे कोनो हिलकोर नै उठलै। एतबे उठलै, उपजाक बात तँ अन्तिम भेल, पहिने खरहोरि, जे कहियोक कहियौ आकि अखुनका कहियौ, घर बनबैमे आकि बरैब छाड़क भार उठौने छल आकि अछि, ओ आब कमि रहल अछि। घरोपर सीमटी, गिट्टीसँ लऽ कऽ चदरा-खपड़ा धरि चढ़ि रहल अछि, तैठाम खढ़क उपजाक की उपयोग? मुदा माटि उपयोगी नै अछि एहनो तँ नहियेँ कहल जाएत। तहूमे माटियो अपन-अपन गुण अपन-अपन शक्तिक अनुकूल सेहो होइते अछि। खेतक अनेको किसिम अनेको गाममे अछि। केतौ पानिक बाढ़ि तँ केतौ माटिक। मुदा अखन खरहोरिक बात अछि। कोनो गाममे गाछी-कलम आकि खरहोरि ऊँचरस जमीनमे लगौल जाइए, नीचरस जहिना पताल दिस ससरैत अन्नसँ निच्चाँ उतैर माछक उपजामे पहुँच जाइए तहिना ऊँचरस जमीन उपजाक अकास लगबैए आ तहिना घर ठाढ़ कऽ घराड़ी सेहो बनबैए। मखनाक मनमे, जेठुआ फुलाएल धारक अवारि जकाँ रंग-रंगक बात उठए लगलै। उठबो केना ने करितै, बारहो मास उपजबैबला खेतमे नजैर वौआइत रहै किने। वौआइत ई रहै जे जगहो तँ जगहे छी। मुहसँ फुटल तँ कहलयैन करोड़ पति राजा छी, मुदा अपनो तँ ओइसँ कम नहियेँ हएब। जे जमीन भौजी देलैन, ओ तँ घराड़ी छी, दस लाख-पनरह

लाख रुपैए कट्ठा। जँ दसो लाखे कट्ठा जोड़ै छिऐ तेयो 16x10= 160 लाख भेल। एक करोड़ साठि लाख...।

मुदा लगले मखनाक मन घुमलै बाजल- “भौजी, भैयाकेँ तइले तामसो उठतैन। तहूमे खाइकालमे। अनेरे मनमे हेतैन जे केहेन पतित अछि जे खेबो करैए आ घिनेबो करैए। मुदा से बात नै भैया। खटहा आमक गाछीमे पड़ि गेल छी। यएह ने सोचैत हेबै जे विद्या-दान करै छी। मुदा विद्या केतए हेराएल छैथ? जैठाम नै छैथ। कोनो काज बिना बुधिये थोड़े चलैए, जेते अहाँ नोकरीक दरमाहा उठबै छी तइसँ बेसी हएत। ओना, अपन सम्पैत बैंकोमे जमा रखि सकै छी, मुदा अनका हाथक काजो आ सम्पैतोक अशे केते। मुदा दुनूसँ नीक जे अपन सम्पैतकेँ सम्पैत बना जिनगीमे ठार करी।”

कहलिऐ- “बौआ मखन, बिनु विचार केने किछु निर्णय करब उचित नै, मुदा भौजीसँ पुछहुन जे गाममे रहथुन?”

ता अपन मनक उष्मा उष्मित भऽ उर्जवान बनबए लगल। एक-एक वस्तुपर नजैर उमड़ए लगल। जँ केकरो किछु बुझबैक अछि आकि कहैक अछि ओकरा बान्हि कऽ किए बाजब। किए ने अपन बोधक परीक्षण करैत चलब। पत्नीकेँ अपन गामक आ बजारक बाससँ पहिनेक, एक-एक कौशल जे माए जिनगीक लेल सीखौने रहथिन जे सागो खोंटि कऽ खेनिहारक जिनगी मिथिलाक धरती दैत आबि रहल अछि। चाहे वेपारीक दृष्टिए बारहो मास साग देखिऐ आकि भोजनक रूपेँ, मुदा होश तँ अपने राखए पड़त जे जाड़क मासमे पटुआ-पोरो आ गरमी मासमे सूआ-मेथी खाइ आकि नै खाइ। एक तँ ओहुना घरक बान्हल स्त्रीगण बाहर घुमबो-ले आ देखबो-ले फड़फड़ाइत रहिते छैथ तैपर अपन नव शक्ति जगैत जमीन, तैपर सासुरक गाम, जे अपन गाम भेल, तैपर हमर आग्रह सुनि दस-अनियाँ मुस्की दैत बजली-

“ऐमे पुछैक आ विचारैक कोन खगता अछि। जहिना पति घर जेबाले पत्नीकेँ कियो रोकिनिहार थोड़े होइए तहिना ई अप्पन घर छी। अइले पुछै आकि विचारैक कोन प्रयोजन अछि।”

बिच्चेमे ढकार करैत मखना कहलकैन-

“भौजी एतेकाल अपना मने कहियौ आकि भूखल पेटे कहियौ मुदा आब अहाँक बलजोरी खेनाइ खाएब। ओना, आगूमे आबि गेल अछि, छुताएब अन्नक अपमान भेल, तहूमे जे अन्न सभसँ ऊपरक ईश्वरत्वक शक्ति पौने अछि, तेकर अपमान करब मनुखता नै ने हएत।”

दोसर दिन कौलेज गेलौं, पढ़बैमे मन ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे जे किछु किताबमे पढ़ने छेलौं सएह विद्यार्थीकेँ पढ़बैत रहलौं! मुदा आइ अपना नजरिये दुनियाँ दिस देखि पढ़बए चाहलौं। जइमे सामंजस नै भेने ओझरी लगि जाइ छल। मुदा जहिना नव ओझरी मनमे लगैत रहए, तहिना दोसर ओझरी खुजितो छल। खुजैत ई छल जे जइ बच्चाकेँ मनक विचारसँ मन भरैत रहलौं, कहि देब जे बौआ मन आइ बेधाएल छह तँए पढ़बै दिस मन नै बढ़ि रहल अछि। अनमनस्क भेल डेरा आबि पत्नीकेँ कहलयैन-

“कनी नीक जकाँ कॉफीबला चाह बनाउ।”

जहिना लाबा भुजनिहारि उड़ैत लाबाकेँ लारैन सँ मारि-मारि दबैत रहैए तहिना लारैन चलबैत कहलैन-

“एकर माने आन दिन मनमाफित चाह नै बनबै छेलौं।”

पत्नीक लारैनपर धियान नै दैत कहलयैन-

“किछु विचार करबाक अछि, तँए अखन दोसर बात नै करू।”

अनायास हुनका मनमे सौनक गुम्हरैत मेघक शंका भेलैन जे भरिसक ठनका खसत। बजली किछु ने। गैस-चुल्हि, लगले चाह आनि आगूमे ऐ आशासँ कान ठाढ़ केली जे आगूक की आदेश होइए। मुदा

जेना-जेना चाह पीबैत गेलौं तेना-तेना विचारक गम्भीरता बढ़ैत गेल। चाह पीब गिलास रखैत पान मुँहमे लेलौं। जेना-जेना पान मुँहमे फुलाए लगल तेना-तेना मनो फुलाए लगल...। पुछलयैन-

"स्वतंत्र जिनगी की?"

मुँहक फटाहि तँ छथिये, हमरे प्रश्नक पुछरियो पाछूसँ पछुआएले रहैन, बिच्चेमे पकैड़ बजली-

"हमर की स्वतंत्रता। एतबे ने जे अहाँ संग करखनो बाल-बोध लग बैस भाए-बहिन जकाँ रहब, करखनो बाबा-दादी जकाँ घर-परिवारक विचार करब, करखनो संगे-संग आगि-पानिमे मरब, मुदा सभ कथुक बाबजूद एक मनुख बनि केना जीब, यएह ने भेल स्वतंत्र जिनगी। जाबे स्वतंत्र जिनगी नै ताबे स्वतंत्र नन्दन वन केना?"

पत्नीक विचार आरो ओझरा देलक। जेना मनक कोनो ससे-बस ने चलए दिअए। दौगैत घोड़ा जकाँ पत्नीक विचारक घोड़ाक छोर खिंचैत बजलौं-

"गाममे नीक लगत?"

अपन सम्पैतक आर्थिक विश्लेषण मने-मन कऽ रहल छेलौं जे जहिना भारत सरकारकेँ माटि छै, पानि छै तहिना तँ गाममे पनरह बीघाक चास-बास अपनो अछि। जेकरे अमार लागल अछि तेहीले नोकरी-चाकरी करै छी। मुदा तखन लोक जँ नोकरी नै करता तँ संस्था चलत केना? ऐठाम संस्था नै चलबक प्रश्नक पाछू वेरोजगारी सेहो देखए पड़त। तँए बौद्धिक समुचित बँटवारा। आठ बजैत-बजैत रातिमे निर्णयपर पहुँच गेलौं जे खटहा जिनगीसँ मीठहा किए ने जीब। कोनो कि अपना ओकाइत नै अछि जे स्वतंत्र जिनगी बना स्वतंत्र देशक नागरिक बनि बिनु मोलक ज्ञान-दान करब! मन दृढ भऽ गेल। काल्हि नोकरी छोड़ि देब। लगले मनमे भेल जे काल्हिक बीच राति शेष अछि तँए ओते बिलमब

उचित नहि। नीक रहत जे अखने फोनसँ कार्यालय सूचित कऽ दिऐ। जँ कनियोँ भनक बहराएत तँ रंग-रंगक दूत-भूत पहुँच मन-मोहैन चलबए लगत। मुदा तइसँ की, कियो अपन काजक मालिक अछि। काजे ने नीक बनैत-बनैत कर्म बनैए आ कर्म बनि धर्मक संगे चलए लगैए।

दोसर दिन कौलेजक ठीक समैपर घरसँ निकलैसँ पहिनहि पत्नीकेँ कहलयैन-

“अहाँक मनक बात मन मानि लेलौं। आगूक बात घुमि एला पछाइत कहब।”

❑

शब्द संख्या: 3515, तिथि: 22 नवम्बर 2014

ढकरपेंच

बैशाख मासक बारह बजे दिन। बाधसँ आबि एकचारीमे ई सोचि छहराइत रही जे रौदाएलमे नहाएब उचित नै तँए कनी जिरा लइ छी, पछाइत नहा-खा अराम करब। ओना, पानिक तरास सेहो लगल रहए मुदा रौदाएल दुआरे पानियोँ ने पीने रही। भीतरसँ मनो तबधले रहए। तबधल ऐ दुआरे रहए जे सजमैनक खेत पटबए गेल रही, वोरिंग-बलासँ रेटक दुआरे कहा-कही भऽ गेल, गरमाएलमे बजा गेल 'सजमैन उपजए वा नै उपजए मुदा पैछला रेटसँ एको पाइ बेसी नै देबह।' जहिना अपन खेतीकेँ जुआ-पाशापर रखि देलौं, तहिना बोरिंगबला अपन वेपारकेँ पाशापर रखैत बाजल-

"गनगुआरिकेँ एकटा टाँग टुटने की बिगड़तै, तूँ जे दू कट्ठा खेत नहियेँ पटेबह तइसँ हमर वेपार चलि जाएत? तोरा सन-सन सौंसे बाध लोकक खेत पसरल छइ।"

मन ऐ विचारमे ओझरा गेल रहए जे जखन एक रुपैआ डीजलक दाम बढ़ल तखन पाँच रुपैआ घन्टा बढ़ा कऽ साए रुपैए घन्टा पटौनी दर लगा लेने छल। हिसाब मिला कऽ देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जे उचिते दर छइ। महिनामे दू बेर मिसतिरिआइ लगै छै, पार्ट-पुरजा लगै छै, तेल लगै छै तैपर सँ अपनो बरदाइए। मुदा जखन तीन रुपैआ डीजलक दाम घटल तखन तँ पनरह रुपैआ रेट कम कऽ देबा चाही। सएह कहलिऐ, तहीपर बाता-बाती भेल रहए...।

थारी-बाटीक डोलैत पसरल पानि जकाँ डोलैत मन असथिर भेल

जाइत रहए आकि उतरबारि टोल दिससँ सोनमा काकाकेँ अबैत देखलयैन। देखिते टोकलयैन-

"काका, तमाकुल खा लिअ।"

हिसाबेसँ बजलौं। किए कहितिऐन जे बड़ झूर-झमान देखै छी आकि मन तरताएल जकाँ अछि। मुदा दुनियोँक तँ अजीव खेल अछि, जहिना गीत गौनिहारि आकि नचनिहारि अपन नाचो आ गीतो दोसराकेँ देखबैत-सुनबैत रस पीबैत रहैए तहिना दुखाएलो-दबाएल तँ अपन बेथा-कथा दोसराकेँ कहि-सुना रस पीविते अछि...।

रस्तासँ उतैर सोनमा काका एकचारी दिस बढ़ला। भुयैंमे बैसल रही। उठि कऽ कोणमे रखल पीढ़िया आनि आगूमे बैसैले देलिऐन। एकाएक बुझि पड़ल जे जहिना रौदाएल लोकक मनमे उठै छै, 'हे भगवान एकटा छाहैरक गाछ मेघसँ आगूमे खसा दिअ।' तहिना कक्काक चेहरा...। मुदा चेहराक सुरखीमे हरियरी उतरलैन, ठोरपर हाथ चलबैत बजला-

"भातीज, की कहियऽ बड़का ढकरपेँचमे फँसि गेलौं हेन!"

सोनमा काका जे सोचि बाजल होथि, किएक तँ केतौ लोक ओरियानकेँ ढकरपेँच बुझैए आ केतौ ओझरीकेँ बुझैए। तँए ढकरपेँचक माने नीक जकाँ बुझबे ने केलौं। बुझिमे आबि गेल, 'मुसकल'। जहिना गोटे बोल्ट नटसँ ने निकलबे करैए आ ने कस-कसा कऽ बैसबे करैए तहिना भऽ भेल। मुदा एते संयोग नीक रहल जे अगर-मगर नै जोड़ि सोझे बात उनटबैत पुछलयैन-

"की ढकरपेँच लगि गेल काका?"

ओना, दुनू कान ठाढ़ कऽ सोनमा काका सुनलैन मुदा पारिवारिक विचार मनपर जेना चाप दैत रहैन तहिना बुझि पड़ल। पाइक लेन-देनक जनु बात अछि जे चर्च लोक सभठाम नै करए चाहैए। ओना, यएह

भीतरिया घाव समाजकेँ सड़ा देने अछि। मुदा समाधानो तँ असान नहियेँ अछि। जँ प्रश्न उठत जे सबहक लेन-देन समाजमे सभ बुझहौ। मुदा आपराधिक समाज सेहो तँ ऐछे...।

सोनमा कक्काक पीड़ाएल मन भीतरे-भीतर जरैत रहैन। दोहरा कऽ टोकलयैन-

"काका, समस्तीपुरबला तमाकुल छी, बड़ टीपगर अछि। मुँहमे पड़िते मन मस्त भऽ जाएत।"

मनमे ई रहए जे हमहीं किए अगुआ कऽ किछु पुछयैन। पारिवारिक लोककेँ साइयो ओझरी लगले रहै छइ। करवनो धिया-पुताक तँ करवनो पति-पत्नीक, करवनो माल-जालक तँ करवनो खेत-पथारक। वनवासी ऋृषि-मुनी जकाँ थोड़े छै जे एकपेरिया जिनगी बना एकरस बनि चलैत रहत। जैठाम बारहो मास एक्के मौसम रहैए, चाहे जाड़क हौउ आकि गरमीक, तैठाम तँ जोगी-फकीरीक बढ़वारि अछि। मुदा जैठाम रंग-रंगक मौसम सालमे अछि, तीन-तीन रंगसँ लऽ कऽ छह-छह रंगक अछि, तैठाम की जोगी-फकीरी, आकि पारिवारिक एके रंगक हएत..?

'टीपगर तमाकुल' सुनि सोनमा काका टीपलैन-

"भातीज, सभ किछु हेराएल जा रहल अछि। अपने जेहेन छोटकी तमाकुल उपजबै छेलौं, तेहेन टीपगर थोड़े समस्तीपुरबला हएत।"

ओना, हमहूँ ओही तमाकुलक स्कूलमे पढ़ि अ-आ-सँ-ककहारा सीखने छी, मुदा आब ते ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा असथिर पानिकेँ पाछूसँ दोसर पानि धक्का मारि जहिना रेत आकि वेग आकि धार बनबैए, चाहे ओ पानिक हौउ आकि बाउलक, तहिना पुछलयैन-

"से की काका?"

जेना अपन उपारजित अमलक नशा मनमे चढ़लैन तहिना बजला-

"भातीज, तमाकुलक गुण जेकर जेहेन हौउ, मुदा अपन हाथक

उपजौलक गुण दोसर होइ छइ। भलेँ की उपजाबी की नै उपजाबी, ई दीगर भेल।"

कक्काक मन टोबाएल जे भरिसक काका सम-गमपर आबि रहल छैथ...।

कहलयैन-

"काका, नहाइबेर भऽ गेल, चलू असनान करि लिअ आ जे रूख-सुख हेतै, दुनू-बापूत खा कऽ अराम करब। बड़ रौद भऽ गेल।"

कहि हाथमे तमाकुल देलिऐन। बुझि पड़ल जे कक्काक मनमे कोनो विचार घुरिया रहल छैन, मुदा तेकरा जेना छिपबए चाहै छैथ, से भेल नहि। काका ओहन तमाकुल खबैया जे ठोरोमे रखै छैथ आ नाकमे नोइसो लइ छैथ। नाकमे नोइस लइते मन सुरसुरेलैन। छिक्का भेलैन। पहिल खेपक थूक फेकते मन सर्ड़ास जकाँ बुझि पड़लैन। मोन पड़लैन ढकरपेँच। बजला-

"बौआ, हम-तूँ ते बाप-बेटा भेलौं, अपन बात तोरा नै कहबह तोहर बात हम नै सुनब तखन समाजे की भेल।"

बजलौं-

"हँ, से तँ ठीके।"

जेना सोनमा काकाकेँ रस भेटलैन। बजला-

"बौआ, देखहक जे चौक परहक जे तीनिकठबा चौमास अछि ओकरे बेचैक गप केने छेलौं। पच्चीस हजार वेनो देने छल। आठम दिनक दिन बेटी बिआह ठेकने छी से आब मुँहमे धान दइ छी तँ लाबा होइए!"

एक्के रसमे हलुआ सोखर जकाँ तेते सोनमा काका सुना देलैन जे बुझबे ने केलौं, जे काका की कहलैन। कसमीरा सूत जकाँ जँ एक-एककेँ नै विलगाएब तँ बुझब कठिन अछि। मुदा तइले तँ समय चाही। अखन

नहेबाक अबेर अपनो होइए आ दुआरपर कियो-भूखल-पियासल रहैथ सेहो नीक नै बुझि पड़ल...। आग्रह करैत दोहरौलयैन-

“काका, नै खाएब तँ कमसँ कम नेबोक शरबतो पीब लिअ।”

सोनमा काका चुपे-चाप बात सुनि लेलैन। मनमे उठलैन, केतौ पहुँचैक जगहपर अपना मने ने पहुँच सकै छी, मुदा विदा तँ घरवारीए मने ने हएब। अपना मने विदा भेने जँ किछु ढेंस लगा दिअए! अपनाकेँ समटैत सोनमा काका बजला-

“बौआ, मनो पीताएल अछि। तहूमे तूँ तेहेन तमाकुल खुएलह जे आरो पीता देलह। जेतेकालमे शरबत बनेबह तेतेकालमे गपे खतम भऽ जाएत। तोरो मनमे किए हेतह जे काकाकेँ पानियोँ पीबैक आग्रह केलिऐन तँ नै पीलैन। पानि तँ कखनो लोक केतौ दू-घोँट पीब सकैए। एक गिलास पानि नेने आबह।”

मनमे भेल जे केकरो पानि आनए कहिऐ मुदा फेर भेल जे सोझहासँ हटने किछु नव विचार अपनो मनमे आ हुनको मनमे एबो करतैन आ किछु जेबो करतैन। तँए किछु समय एकान्त भेने विशेष बात हएत। अपने उठि कऽ आँगनसँ गिलास-लोटा लऽ कलपर पहुँच नीक जकाँ चिक्कन माटिसँ माजि-धोइ पानि नेने पहुँचलौं। देलिऐन। भरि छाँक पानि पीलैन। पीविते आरो असथिर भेला। बजला-

“भातीज, ओना काज उनटा भेल, मुदा आब दोहरा कऽ तमाकुल नै खेबह।”

कक्काक अधखरूआ बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। की उनटा कहलैन? आ दोहरा कऽ तमाकुल नै खेता? बीचमे कोन एहेन बात चलि आएल जे काका विगैड़ गेला। ‘दोहरा कऽ नै खाएब’ तेकर तँ दोसरो रूप अछि। रूप ई अछि जे कोनो काजक बाता-बाती भेने लोक, चाहे कुटुमैती होइ आकि दोसतियारे, आकि आने जगह, जँ दोहरा कऽ पानि नै

पीब, आकि कोनो साधारणो बेवहारमे छोटो-छीन गीरह जँ दऽ दैत तँ ओ सबदिना गीरहा जाइत...। कहीं से तँ ने भेल! मुदा आब उपय? हँ उपाइयो तँ अछिए। पुछलयैन-

"की उनटा भेल, काका?"

एक तँ काकाकेँ पेट रसेलैन तैपर मनुओं जागिये गेल रहैन, बजला-

"बेटा, जेहने अपन कुल-खनदानक बेटा-भतीज तेहने समाजोक, तँए जगह पेब जँ एकटा नीक बात नै बाजि भेल तँ अधले बजेक कोन दरकार अछि।"

अपना रसकेँ काका धऽ लेलैन, मुदा अपन सवालकेँ तर पड़ैत देखि मनमे भेल जे कहीं एहेन ने हुअए जे सन्दूकक धड़ाउ कपड़ा जकाँ तर पड़ैत-पड़ैत तेते तहक निच्चाँ ने चलि जाए जे सड़िये ने जाए आकि उचरीने ने काटि दिअए। मुदा दरबज्जापर आएल आगन्तुक मुँहक बातो नै सुनब, अनुचित...।

अपन गलती व्यक्त करैत बजलौं-

"काका, कहुना भेलिऐ अहाँ तँ बखारी भेलिऐ, जेते विचार अहाँ-मनमे अँटल अछि ओते हमरा थोड़े अँटत। अहाँ-आगू हम कहुना भेलौं तँ कोठीए-भुरकुड़ी भेलौं किने?"

ओना, अपनो मुँह झाड़ि नै बजलौं, जे काका यौ पहिलुक बात छुटि रहल अछि.., मुदा खग तँ खगक भाषा बुझिते अछि...। काका बुझि गेला जे पानि पीला पछाइत जे तमाकुल खाएब मनाही केने छेलिऐ..!

सम्हरैत काका बजला-

"भातीज, बिना तोरा बातक जवाब देने नै जेबह। मुदा भरिसक तूँ अगुताएल छह, तँए पहिने तोरे बातक जवाब दइ छिअ।"

कहि चुप भऽ निहारए लगला जे सुनैले सोल्होअना तैयार अछि की नहि। मुदा से मन मानि गेलैन बजला-

"बौआ, पहिने लोक पानि पीबैए तखन कोनो अमल मुँहमे लइए, अखन से नै भेल, पहिने तमाकुल खेलौं पछाइत पानि पीलौं।"

बजैक सुढ़िमे काका बाजि गेला। मुदा मन पाछू घुच-पुच करए लगलैन। घुच-पुच ई जे जँ हमरा पियासे रहए तँ रस्तोमे केतेको चापाकल छेलै, किए हम एतुक्के भरोसे अपना मनकेँ जरबैत रहलौं, मुदा, सभ ठामक पानियोँ हितकरे होइ छै सेहो बात नहियेँ अछि। केतौ पानि मक्खन छनैए तँ केतौ शरबत, केतौ नोन छनैए तँ केतौ अपने हजारो तरहेँ छनाइए...।

बातकेँ सम्हारैत घुचपुचाइत बजलौं-

"काका, अहाँ अपना जकाँ किए बुझै छी जे एते खोंइचा छोड़ाएब। अनेरे झूठ-फूसिमे मनकेँ लगौने रहब।"

हमर बात काकाकेँ नीक लगलैन। नजैरसँ बुझि पड़ल जे कक्काक मन कहि रहल छैन जे धिया-पुताक बीच बैस अहिना उनटा-सुनटा खिस्सा-पिहानी चलै छइ। जँ नै चलै छै तँ किए कियो चिक्कारी भाषा जनैए तँ कियो दृष्यकुटीय...।

बजला-

"बौआ, तमाकुल तेना ने मन घुमा देलक जे पानियेँ असथिर केलक नै तँ कण्ठो सुखाइत आ मुहसँ खखरियो उड़ैत।"

कक्काक बात सुनि बुझि पड़ल जे सिल्ली परहक धान जकाँ गरदे नै, खढ़ो-पात मनसँ उड़ि गेलैन। तखन तँ कनी खोंरना चलबैक खगता अछि। खोंरनो कि लकड़ीए टाक होइए, ओ तँ रूपोक होइए। रूप माने अंगीय भाषा। मुसकुरी मुँह बनेलौं। पारखी काका छैथे, बुझि गेला जे मनक बेथा बुझए चाहैए। ओहो मुस्की भरैत बजला-

"बौआ, आठम दिन कन्यादानक दिन छी। चौक परहक खेतक विकरीक गप राधेश्यामसँ केने छेलौं।"

बिच्चेमे टोकि देलिऐन-

"तेहल्लो कियो छला।"

'तेहल्ला' सुनिते जेना सोनमा कक्काक मन तरंगलैन। मुदा दबैत बजला-

"ओइमे तेहल्लाक कोन काज छै, एकटा होइ छै लोककेँ सामाजिक काजमे लगाएब आ एकटा होइ छै समाजकेँ अपना काजमे लगाएब।"

पुछलयैन- "जँ बेक्तिगत काज भारी हुअए तखन?"

जेना हमर गप कमल फूल जकाँ धारक ऊपरे-ऊपर काकाकेँ भँसा देलकैन। मुस्कियाइत बजला-

"बौआ, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। मुदा जे काज जमीन परहक भेल ओ ओहन नै भेल जइमे समाजकेँ लगौल जाए।"

गर बुझि पड़ल। बजलौं-

"काका, मोहना तीन लाखमे एक कट्ठा खेत बेचैक गप केलक, भरिसक अहूँकेँ बुझले हएत, अदहा रुपैआ वेनाक रूपमे डेढ़ लाख लऽ लेलकै आ जमीनक दखल देबे ने केलकै, जहियाक समय लेनिहार बनौने छेलै, तेकर पराते पनचैती बैसा, बितलाहा समैयक दोख लगा वेना बेइमानी कऽ लेलकै! कनी बलगर तँ ऐछे, छजि गेलै!"

सोनमा कक्काक मन ठमकलैन। मुदा जखन अपन काजकेँ निहारला तँ बुझि पड़लैन जे अपन काज ओहेन नै अछि। दोसर रंगक अछि। तँए केतौक पजेबा केतौक मसल्ला लगा जोड़ब उचित नहि। बजला- "बौआ, मोहनाक काजसँ भिन्न हमर अछि।"

कहलयैन- "काका, उड़ैत चिड़ैकेँ परखब चिड़हारक काज छी, सभ थोड़े परखत। जखन अपने दू गोरे गप करै छी, तेसर नै अछि तखन एते तेलिया-फुलिया लगा कऽ बजैक कोन खगता..?"

मने-मन सोनमा काका गाँजा पिआक जकाँ विचारकेँ मनमे घोँटलैन। घोँटिते मुँह सिहकलैन-

"बौआ, तीन भाँइक भैयारी अछि से ते बुझले छह?"

लगले बजलौं- "एकरा के काटत।"

जेना अपन पनचैती अपने केलैन, तहिना बजला-

"तीनू भाँइक हिस्सा हएत किने?"

ओना, कक्काक मनमे दोसर बात रहैन। दोसर बात ई रहैन जे अखन तक समाजमे एहनो चलैन अछिए। भलेँ कियो नोकरी करैले गाम छोड़ि किए ने केतौ बसि गेल होथि, घरवाली डेरावाली किए ने बनि गेल होथि आकि लोके बहरबैया किए ने कहैन, मुदा ओ तँ अपनाकेँ गामक बसिन्दे मानै छैथ...।

कक्काक भक्क हम नै बुझि पेलौं जे हिनका मनमे ईहो छैन जे भैयारीक बँटवारा कोलो-कोली होइ छै आ प्लौटो-प्लौट। भलेँ शहरक लोक प्लौटक माने कोला-कोली बुझए आ गामक लोक बाधकेँ कहए। कक्काक भकुआएल बातमे ओझरा गेलौं। गपक सुढ़िमे कहा गेल-

"हँ से तँ होइते अछि काका।"

मनमे ई भेल जे भरिसक टटका विचार काकाकेँ नीक लगतैन मुदा से भेल नहि। कक्काक मन तुड़ैछ गेलैन। तुड़ैछ ई गेलैन जे दुनू भाँइ करीब बीस बर्खसँ गाम छोड़ने अछि। ने कहियो खेतक आड़िपर गेल आएल आ ने ओकर खेनाइ-पीनाइ देलक, ओना उपजा सोल्होअना अपने खेलौं, मुदा ओ सभ तँ लगतो नहियेँ लगौने छल, जँ ओहुना जोड़ल जाए तँ तीन कट्ठामे एक-एक कट्ठाक हिस्सा भेल। सरकारी हिसाबे

चारिअना-बारहअनाक बँटवारा अछि, गमैया हिसाबे अदहा-अदही अछि। मुदा गामो-गामक तँ चलैन छै, केतौ मनखप चलै छै तँ केतौ मलगुजारीक हिसाब। सभ दिन मलगुजारी हम देलिऐ। रौदी-दाहीमे खेतक उपजा गेल! लगतो गेल! मुदा मलगुजारी थोड़े गेल? ओहुना रज-राजवारामे दू साल मलगुजारी नै देने खेत निलाम भऽ जाइ छेलइ। सरकारी भऽ जाइ छेलइ। जेकरा लोक निलाम चुका अपनो आ आनो लऽ लइ छल। तैठाम भैयारीक मलगुजारी-तरे हमरे ने भेल...।

अपन जीत सोनमा काकाकेँ बुझि पड़लैन। मनक तुड़छाहैट भागि गेलैन। विहुँसैत बजला-

"बौआ, कहुना भेलह ते बाले-बोध भेलह किने, सभ बातपर अखन तोहर नजैर नै दौड़ै छह।"

कक्काक विचार सुनिते मनमे भेल जे हिनकर मन करूएलैन नै मधुएलैन। हूँहकारी भरैत बजलौं-

"काका ईहो की कहब तखन बुझबै, बुझिते छिऐ जे अहाँ कोरा-कन्हा नेने छी। अहीं सभ ने सिखेलौं अमरूद माने लताम। माए-बाप तँ सोझे लतामक गाछ रोपि कहलैन जे बौआ ऐ गाछक नाओं लताम छी, जे पहिने लतामक बीआ अँकुरि आँखि फोड़ि गाछ भेल, जखन फड़ै-जोकर भेल तखन लताम भेल। ओना, दोसर-तेसर फलक बीच लतामक फल भेल मुदा असगरमे वएह लताम भेल। मुदा ओहीमे ने कोनो लतामक पात भेल तँ कोनो लतामक फूल, कोनो थुर्ड़ी लताम भेल तँ कोनो डम्हाएल, कोनो पाकल भेल तँ कोनो अधपक्कू। कोनो सुखल डारि भेल तँ कोनो जीत डारि।"

हमर बात सुनि जेना बुझि पड़ल जे काका अकछा रहला अछि। मुदा से बुझैमे भरम भेल। भरम ई भेल। जे हुनका पेटमे तँ ढेरो विचार उधकैत रहैन। बजला- "बौआ, दुनियाँमे बहुत बात अछि, अनेरे कोन

मगजमारीमे लगल रहबह। नहाइ-खाइबेर भेल।"

बुझि पड़ल जे काका अधडरेरेपर गपकेँ छोड़ए चाहै छैथ। कहलयैन-

"यौ काका, से भेल जाइए आकि खतम भऽ गेल। अहाँकेँ कहै छी जे चलू नहाइले सेहो ने तैयार होइ छी।"

खाइक आग्रह सुनि सोनमा कक्काक मन हरियेलैन। बजला-

"बौआ, कोनो बाँटल छी, मुदा जे गप उठल तेकरा बीचमे छोड़बो नीक नै ने हएत। तँए ओइ गपकेँ झब-दे उसारह।"

ओना, मन भेल जे की कहि देलैन। उसारबक माने भेल विसरजन। मुदा जँ काजेक विसरजन भऽ जाए तँ बाँकी की रहल तइले समय लगाएब। मुदा फेर मनमे भेल जे काका जे बजै छैथ ओ तँ अपना ताले बाजि रहल छैथ तँए ओइ तालपर खाली नजैर खिरबैक अछि जे कोन तालमे बाजि रहल छैथ...।

कहलयैन-

"काका, अहाँ ते तेहेन तितम्हाबला छी जे ने नहाइके बेर बुझै छिऐ आ ने खाइके। गप केतौ पड़ाएल जाइ छै?"

मुदा गप तँ काजमे सटल अछि। आठम दिन कन्यादान ठेकने छैथ, जे बिथुत भऽ रहलैन अछि। मन नाचि रहल छैन माने, नचबाकाल नचनियाँकेँ जहिना खाइ-पीबैक सुधि-बुधि नै रहै छै तहिना भऽ रहल छैन। बजला-

"बौआ, वेचारा राधेश्यामोक दोख नै छइ। वेचरा असामक होटलमे नोकरी करि कऽ पाइ कमेने अछि, सोझमतिया तँ अछिए। आब गामेमे रहत। मिठाइ बनबैक अपना रंग-रंगक लूरि छैहे, दोकान करत।"

जेना कक्काक एक-खण्ड बात समाप्त भऽ गेलैन तहिना कनी दम

लिअ लगलैथ। मनमे भेल जे भरिसक काका बेदम भऽ रहला अछि, गड़ूगर काजमे पड़ि गेल छैथ...।

कहलयैन-

"से तँ वेचारा सभ दिनसँ मुँहसच रहल अछि राधेश्याम। छ-पाँच किछु ने बुझैए।"

बजला-

"बौआ, भेल एना जे दू लाख रुपैये कट्ठाक हिसाबसँ तीनू कट्ठाक गप केलौं। हिस्सा तँ तीनू भाँइक हेबे करत मुदा मनमे ईहो भेल कोले-कोली बाँटि लेब। ओहो वेचारा पच्चीस हजार वेना देलक आ हमहूँ ओइ पाइसँ असारी-पसारीकेँ वेना दऽ देलिऐ। तही बीचमे ढकरपेँच ठाढ़ भऽ गेल अछि। लोको सभ तेहेन भऽ गेल जे ने हगत ने बाट छोड़त।"

'ढकरपेँच' सुनि जिज्ञासा औरो बढ़ल। पुछलयैन-

"बीचमे कोन ढकरपेँच आबि गेल काका?"

बजला-

"पहिने राधेश्यामकेँ नै बुझल रहै जे तीनू भाँइक हिस्सामे एक्के हिस्साक हिस्सेदारसँ बात भऽ रहल अछि। पछाइत जखन लोक सभकेँ पुछलकै तँ भाँज लगलै। छह-छह लाख रुपैआ हाथसँ केना छोड़त। जिनगी भरिक कमाइ छिऐ।"

कहलयैन-

"हँ से तँ छिऐहे। जँ रुपैआ बुड़ि जेतै तँ अपना संग-संग परिवारो बेलल भऽ जेतइ। तखन नीक हएत जे अखन काजेकेँ अनठा आगू दिन बढ़ा लिअ।"

सोनमा काकाकेँ हमर बात कनी-मनी नीको लगलैन आ बेसी अधले लगलैन। अधला ई लगलैन जे जिनगीक परीक्षाक घड़ी छी, बेटा-

बेटीक पैतपाल करब। तैठाम काजमे चूकि रहल छी। ओना, अखन बैशाख छी, अखारोमे बिआह कएल जा सकैए। बजला-

"लोक तँ पीहकारी भरबे करत जे फल्लाँ-भाय सबहक हिस्सा जमीन चोरा कऽ बेचै छला।"

कहलयैन-

"से किए कियो कहत। ओकरा एतबो नै बुझऽ औते जे काजक बीचक गलती काज करैक लूरिक भेल आकि मनुखक। आ जँ मनुखक नै भेल तखन ओकर गलती मानब गलती की नै हएत?"

हमर बात सोनमा काकाकेँ कनी-मनी लगबो केलैन आ नहियोँ लगलैन। मुँह दिस देखिऐन तँ पारखेमे ने आबैथ। किएत तँ सुखाएल गाछक पात जकाँ हरियरी तँ रहैन मुदा चुहचुही मन्हुआएल जकाँ रहैन। मुदा से भेल नहि। जहिना कोनो गाछ लगिते मुँह फोड़ैए तहिना कक्काक मुँह फुटलैन-

"बौआ, गामक लोक केहेन तीनितसिया अछि से तूँ नै बुझै छहक। जहिना तीनितसिया बात बजतह, तहिना तीनितसिया काज करतह। तहूमे तोरा बुझले छह जे गाममे केहेन लोक सभसँ मिलान अछि। अनेरो तिलकेँ करवनो तलवार बनाएत जे दाना निकलला पछाइत ओकर घर तलवार जकाँ धरगर भऽ जाइ छै तँ करवनो तिलिया पहाड़ कहि पहाड़ बना दइए। तहिना तिलिया-फुलिया लगा बातकेँ बतंगर सेहो बनैबते अछि।"

कक्काक बात दमगर बुझि पड़ल। मुदा हल्लुक-फल्लुक काजक सहमत बनाएब आ भारी काजक सहमत बनाएब, कोनो कि एक्के भेल। मुदा ओहनो बात तँ नहियेँ बाजल जा सकैए जे कक्काक विचारक प्रतिकूल हुअए। जँ नै बुझि पाएब तँ पुछि लेबैन, मुदा अही पुछा-पुछीमे तँ नहाइक बेर हूसल, खाइक बेर हूसल आ अखैन तक विचारक तरियो ने

पड़ल। मुदा खिस्सकरकेँ खिस्सा कहैकाल जँ हूँहकारी नै भरल जाएत तँ लोरिक संग मनियार केना चलत...।

जहिना भीतरसँ लोक जखन खुशी रहैए तखन जे वगे-वाणिक चुह-चुहीसँ चेहरापर रौहानी बनल रहै छै, तेहने चुह-चुही चेहरापर आनि बजलौं-

“काका, आन जे बुझए मुदा हम अहाँकेँ सभ दिन पैघ मानैत एलौं आ मानिते रहब।”

हमर बात काकाकेँ नीक लगलैन। दुइए गोरेक बीचमे बात भऽ रहल अछि तँए, आकि भीतरसँ मन कलहंत रहैन तँए, बमछैत बजला-

“बौआ, ओहन ढकरपेँचमे फँसि गेलौं जे केना कुटुमकेँ काहा पढेबैन जे अखन ओरियान नै भेल, तँए समैपर रुपैआ नै गनि सकब! तोहीं कहऽ..?”

सोनमा काका किछु आगू सेहो बाजए चाहै छला मुदा जहिना रस्ता-बाटक कोनो कटारिपर एकाएक नजैर पड़िते डेग ठमैक जाइए तहिना कक्काक बोल ठमैक गेलैन। मुदा अपना मनमे अधखरूआ गप उठिये गेल। गपक नाङैर पकैड़ सेरिया कऽ पुछलयैन-

“की पुछए लगलौं काका आ किए अँटैक गेलिऐ?”

विस्मित होइत काका बजला-

“बौआ, जे माए-बाप बाल-बच्चाकेँ समैपर बोध नै दऽ सकल, समैपर बिआह-दान करा परिवार ठाढ़ नै कऽ सकल ओ माए-बाप अपन मातृत्व-पितृत्वसँ चूकल की नै? ई दोख तँ अपने ने हएत? तोहीं कहऽ गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए मुदा घरदेखी-भोजमे एकावनटा विन्यास नै पुड़ौत तँ भगवती थोड़े ओकरा बुझथिन जे नीक बास अछि। तैठाम तोहीं कहह जे हम केना हारल सिपाही जकाँ दुनू हाथ उठा दिऐ।”

कक्काक बातक कोनो अर्थे ने लगए जे की बाजि रहला अछि। एक

दिस देखै छिऐन हाथ सफाचट छैन। एकोटा रेखा हाथक जीवित नै छैन, जेना सभ घँसा गेल छैन आकि कटि गेल छैन, आकि रेखा बनबे ने केलैन। आ दोसर दिस एकावन तरहक विन्यासक परसादीक पूजा करए चाहै छैथ..!

हुनके विचारकेँ आगू बढ़बैत पुछलयैन-

"एहेन कु-समैमे की उपय?"

"उपय तँ बुझि पड़ैए।" सोनमा काका कहि चुप भऽ गेला।

मनमे भेल जखन उपय सुझिते छैन तखन किए ने हुनके विचारमे हमहूँ हूँहकारी भरि दिऐन। रस्ता-बाट देखनिहार-जननिहार जँ केतौ हेराइए तँ ओ धोखे-धोखीसँ हेराइए। तइ हिसाबसँ तँ सोनमा काका सक्षम छैथ। कहलयैन-

"काका, अहूँ बड़ लाथी छी, मुँगबा मुँहमे चोरा कऽ रखि लइ छी!"

जहिना मुँगबा संग भूजल मरीचक टुकड़ी मुँहमे पड़िते कड़ू-मीठक बीच पटका-पटकी भेने जेहेन मन होइ छै, तहिना सोनमा काकाकेँ भेलैन। बजला-

"बौआ, कनियेँ जँ तूँ संग देबह तँ एक्के घुरछीमे अपन इज्जत बँचा लेब।"

कक्काक मन खुशी देखिऐन, मुदा बातक कोनो अरथे ने लगए जे काका कथी बाजि रहला अछि। मन भेल जे कहिऐन, नीक जहाँति नै बुझलौं काका..?

मुदा फेर हुअए जे जँ कहीं रूसिनिहारि जकाँ काका ने सासुरक रस्ता पकड़ैथ आ ने नैहरक आ पकैड़ लैथ कोनो तेसरे तखन तँ आरो पहपैट हएत! केते सोझरबैत-सोझरबैत तँ जगहपर अनलयैन, जँ फेर कहीं विरहा जेता तँ अनेरे रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ दिन-राति लागल रहब। जे ठौर-ठेकानपर नै आबि सकता। अनेरे मन कहतैन जे की गइ

रजनी धान कुटलैं, तँ हमरा उखैरे ने अछि। तँए से नै पुछि, कहलयैन-

"ढकरपेँच केने सभ काज होइ छै काका, कोनो-ने-कोनो ढकरपेँचे सँ काज असान हएत।"

जेना सोनमा काकाकेँ सह भेटलैन तहिना बजला-

"एक संग केते काज ओझरा गेल अछि बौआ, एक दिस जेकरासँ रुपैआक ओरियान केने छेलौं से पछुआ गेल, दोसर दिस जहिना हमरा वेना देलक तहिना हमहूँ केकरो देने छिऐ।"

बिच्चेमे फेर रूकि गेला। पटरीपर आएल गाड़ी ठाढ़ भऽ गेल। आब की करब! चलैत गाड़ी ने कनियोँ सह पेने चलैत रहैए, मुदा ठाढ़ तँ ठाढ़ भेल...।

फेर पाछूसँ ठेलैत कहलयैन-

"गाड़ीकेँ रोकलिऐ किए काका?"

बजला-

"हौ वेना तँ घुमा देबै, मुदा ओ रुपैआ ते वेनेमे चलि गेल। असारी-पसारीकेँ दऽ देलिऐ।"

बजैक वेगमे बजा गेल-

"ओहो घुमा देत।"

जेना काका बुझि गेला जे एकटा होइ छै बड़का जाल जइमे बड़का माछ तँ फँसि जाइए, मुदा छोटका माछ छोटका नोकर जकाँ गली-कुची सगतैर घुमैत रहैए! ओकरा लिये कोनो जाले ने भेल! मुदा पोठिया जाल लगने ने ओकरो बुझि पड़ै छै जे केहेन होइ छै..!

बजला-

"जमीनक ओझरी भैयारी दिस बढ़ि जाएत, आ दिन बढ़ौने कुटुमैती दिस बढ़ि जाएत...। मुदा जँ एक मासक बीचक समय भेट जाए

तँ काज ससारि लेब।"

सह पाबि बजा गेल- "हँ, केहेन तँ नीक विचार अछि।"

मुदा सोनमा कक्काक मनमे ईहो होइत रहैन जे हमरा वेना देलक, हम साय देलिऐ, दुनू एक केना भेल? मुदा जेना एक्केबेर सभ काजकेँ फानैत सोनमा काका बजला-

"बौआ, एहेन युक्ति लगाबह जे समगममे सभ काज ससैर जाए। दू मास थोड़े बहुत भेल।"

हमरो अपन अनुभव रहबे करए, बिआहक समय घुसकैत-घुसकैत साल टपले रहए, कहलयैन-

"दू मास कोनो बेसी भेल। हमहीं ई भार लइ छी, जा कऽ कुटुमकेँ कहबैन जे कन्याक नानीक नानी मरि गेलखिन, तँए अशौच भऽ गेलैन, अखारमे काज हएत।"

जेना काका कुटुम लगसँ निरदोख निकैल गेल होथि तहिना मुँह विहुसलैन, बजला- "बौआ, की कहबह। समाज पतीत अछि। नीक लोकक बास कठिन भऽ गेल। जेहो अपना बेटा बिआहमे दहेज नै लइ छैथ, हुनकोसँ बेटीक प्रति दहेज मांगल जाइ छैन। तखन तँ सवै नचाबै राम गोसाँइ, नर नाचे मरकट के माहीं।"

कहि उठि कऽ बिना किछु बजने सोनमा काका विदा हुअ लगला। पाछूसँ टोकलयैन-

"काका, जिनगीमे अहिना कखनो चढ़ा तँ कखनो उतरी ऐबते छै तइले सोग-पीड़ा केने काज चलत।"

हमरा बातमे सोनमा काकाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन खनहन जरूर भेलैन...।

खनखनाइत बजला- "एक लोटा पानि पीआबह, तमाकुल

खुआबह। जखन एते गप भइये गेल तखन लागल-भीरल जे अछि तेकरो उसारीए लेब।”

कक्काक मनमे बेसी खुशी देखलयैन। तँए काजक नजैर पछुआ गेल आ गप करैक आगू बढ़ल। पुछलयैन-

“की कहलिऐ जे उसारि लेब?”

मुदा काका गपपर धियाने ने देलैन। जेना सुरता किम्हरो और भागि रहल होनि...। बजला-

“बौआ, भिनसरसँ जइ काजक पाछू मन घुरियाएल छल से जेना हल्लुक भेल। अखन जाए दाए फेर आगू गप-सप्प हेबे करतै।”

पानि पीलैन, तमाकुल ठोरमे लइते उठि गेला। अरियातैत चारि डेग आगू बढ़लौं आकि अपने मने सोनमा काका बजला-

“बड़-बड़ लीला देखलौं रजनी-सजनी केर सिंगारमे!”

❑

शब्द संख्या: 3759, तिथि: 30 नवम्बर 2014

असहाज

साढ़े नअ बजेक समय, फागुन मास। बाड़ी-झाड़ीक जेहने उतार समय तेहने चढ़न्तो। उतार ई जे फुल-कोबियो आ बन्हो-कोबी कटै-जोकर भऽ गेल, अल्लुओ अपन पाँतमे दरारि फारि-फारि ऊपर अबैक जिज्ञासा कऽ रहल अछि। तहिना आनो-आन तीमन-तरकारीक भऽ रहल अछि। मुदा दोसर दिस बैशाखा तीमन-तरकारी लगबैक समय सेहो तँ ऐछे, तँए चढ़न्तो समय भइये गेल अछि...।

हाँसू-खुरपीक संग रघुनी काका खेतमे काज करैत रहैथ, तखने अँगनामे हल्ला होइत सुनलैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीएमे छोड़ि सहैट कऽ आँगन एला तँ देखलैन दस बर्खक पोता आँगनमे ओंघराइयो रहल अछि आ चिचिएबो करैए! परिवारक कियो कानि रहल अछि तँ कियो शिक्षककेँ गरिया रहल अछि। पोता लग पहुँच हाथ-पएर असथिर करैत पुछलखिन-

“बाउ, किए एना करै छह!”

जोर-जोरसँ कनैत दुलारचन बाजल-

“बाबा, मास्टर मारलक!”

“की केने छेलहक?”

“किछु ने, विनती होइ छेलै, सोझ भऽ कऽ नै ठाढ़ रहिऐ, तँए...।”

दुलारचनक बात सुनिते रघुनी कक्काक मन खरड़ऽ लगलैन। वाणीमे ओज आबए लगलैन। अखन धरि जे सहज छला ओ असहज होइत असहाज हुअ लगला। शुभ काजमे बिलम उचित नै, रघुनी कक्काक

मनमे उठलैन। परिवारक सभकेँ शान्त केलैन। पोताकेँ पुछलखिन-

"बौआ, केतए चोट लगल छह?"

दहिना पाँखुर देखबैत दुलारचन बाजल-

"ऐठीम!"

हाथसँ टोबि कऽ काका अजमबए लगला जे केतौ टुटल तँ ने छै, पाँखुरपर हाथ पड़िते दुलारचन लोहैछ उठल। जेना आगिक ताउमे होइए...।

पुछलखिन-

"कथीसँ मारने छेलखुन?"

"ठुस्सासँ!"

"कए ठुस्सा?"

"आठ ठुस्सा तँ गनलिऐ मुदा तेकर बाद नै बुझलिऐ।"

"एक्केठाम मारने छेलौ?"

"हँ!"

रघुनी कक्काक मन असहाज भऽ गेलैन। जिनगी-ले लोक पढ़ैए, जँ जिनगीए नै तखन पढ़बे की? असहाज होइते मनमे उठलैन, ओ हमर ऐगला सीढ़ी तोड़ए चाहैए! एक जगहपर, दस बर्खक बच्चाक पाँखुरपर ठुस्सासँ मारल जेतै तँ की ओइ बच्चाक पीठक हड्डी कामयावी रहतै? जँ शरीरक पाँखुर अबाह भऽ जेतै, तखन की ओ मनुख काजक रहत..?

मन अगियेलैन! अगियाइते धधरेलैन! धधरेलैन ई जे जुआक पाशा होइ छै जे केतौ चारिअना-आठअनाक होइ छै तँ केतौ घर-परिवारसँ लऽ कऽ पत्नी धरिक होइ छइ। केतौ खूनक जगह खून होइ छै, तँ केतौ हत्याक जगह हत्या...।

पोताक बामा डेन पकैड़ उठबैत रघुनी काका कहलखिन-

“इस्कूलपर चल तोरा संगे चलै छियौ, तूँ देखा दिहें जे कोन मास्टर छी।”

दुलारचनक डेन पकड़ने काका आँगनसँ निकलला। घरक धिया-पुतासँ लऽ कऽ स्त्रीगण धरि संग लगि गेलैन। मुदा स्त्रीगण सभकेँ जाइसँ मनाही करैत मरदा-मरदी सभकेँ सोर पाड़ि कहि अपने आँगनसँ निकलला।

रघुनी काकाकेँ जेहने परिवारक लोक बुझै छैन तेहने समाजोक। माने टोलसँ लऽ कऽ गाम धरि। तेकर कारण छैन जे जहिना गामकेँ तहिना घरोकेँ बुझै छथिन जे ने उधोसँ लेन छेलैन आ ने माधोकेँ देन छेलैन। परिवारमे रहै छी, परिवारक सभकेँ अपन अनुकूल काज जहिना छै तहिना अपनो अछि। अपन उत्तरदायित्वक निरवहने करब ने अपन भार भेल। मुदा काजेक झीक-तीरमे ने परिवारो आ समाजोमे ओझरी लगै छइ। अपन इमानदारीक जेहने परीक्षार्थी रघुनी काका तेहने परीक्षक बनि सेहो अपनाकेँ जँचैथ-परखैथ। स्पष्ट परीक्षण छेलैन जे जेते अपन-देही खर्च अछि तेकर सवैया कमसँ-कम उपारजन करब अछि। बेसीक ठेकाने कोन, जहिना करैक नै ठेकान, तहिना खगतो बेठेकान...। अपना लगसँ लऽ कऽ मनुखक अन्तिम छोर धरिक खगता तँ अछिए। एक दिस आँगनसँ रघुनियोँ काका पोताक बाँहि पकड़ने स्कूल विदा भेला, आ दोसर दिस घरक धियो-पुता आ चेतनो स्त्रीगण समांग सभकेँ बजबए खेत दौगल। चारू दिस दौगल जाइत देखि टोलो-पड़ोसक आ आनो-टोलक लोक देखलक। देखिते पुछि-पुछि सुनबो केलक। जइसँ दुलारचनकेँ देखैले समाजोक लोक रघुनी कक्काक घर दिस उमड़ल। समदिया सभ चारू दिस दौगल, मुदा आँगनसँ निकैल दुलारचनकेँ नेने रघुनी काका सड़कपर चढ़लो ने छला आकि दुलारचनक माए माने रघुनी कक्काक जेठकी पुतोहु ललैक कऽ कहलकैन-

“हम जानक बदला मसटरबाके जान लेबइ!”

पुतोहुक बात सुनि रघुनी कक्काक मन धकधकेलैन। मुँह बन्न केने रहला। बन्नो केना ने करितैथ, जेकर कोखिक सन्तानकेँ कियो नष्ट कऽ देत तँ की ओ कोखिया चुप-चाप मुँह देखैत रहत...।

फेर मनमे उठलैन परिवारक सभ गारजन जकाँ बुझैए, जे सोभाविको छइ। पत्नी आ सन्तानक संग-संग पुतोहुओ ने परिवार छी। मुदा प्रश्न की अछि? पोताकेँ जान मारैक अपराध। मनमे रघुनी काकाकेँ नचिते रहैन आकि लंगोटिया संगी विसुन काका धड़फड़ाएल लगमे आबि पुछलकैन- "मीत, अखने उड़न्ती सुनलौं जे इस्कूलक मसटरबा बच्चाकेँ जानसँ मारए चाहै छल?"

संगी पाबि रघुनी कक्काक मन सहमलैन। बजला- "मीत, बहुत चोट बच्चाकेँ लगल अछि!"

रघुनी कक्काक बात सुनि विसुन काका विचार देलखिन-

"मीत, ने इस्कूल पड़ाएल जाइए आ ने मास्टर, तहूमे नोकरिहारा छी जाएत केतए। से नै तँ पहिने डॉक्टर ऐठाम चलू।"

विसुन कक्काक विचार रघुनी काकाकेँ जँचलैन। स्कूलक बाट छोड़ि डॉक्टर ऐठाम चलबाक विचार करैत बजला-

"मीत, ओना डेढ़-दू किलो मीटर बहुत नै भेल, मुदा नीक हएत जे अपना दुनू गोरे पएरे-पएरे आ दुलारचनकेँ साइकिलपर चढ़ा डॉक्टर ऐठाम चली।"

सहमत दैत विसुन काका बजला- "बड़ नीक। अखन झँपाएल चोट छइ। जाँचक पछाइत ने बुझबै जे की छै, तँए नीक हएत जे ओकरा अरामसँ लऽ चली।"

दुलारचनकेँ रस्तेपर छोड़ि रघुनी काका साइकिल आनए आँगन दिस बढ़ला। जेठकी पुतोहु डेढ़ीएपर ठाढ़ अष्टमी-भगवती जकाँ लहलहाइत। मुदा रघुनी काका भरमे-सरमे आगू बढ़ि गेला। साइकिल

नेने चुपचाप सड़कपर एला। साइकिल देखबैत काका दुलारचनकेँ पुछलखिन-

"बौआ, अपने बुते साइकिल चलौल हेतह?"

अखन धरि जे मौलाहैट दुलारचनक मनमे छल ओ एकाएक छँटि गेल। मौलाहैट ई छेलै जे जखन रघुनी बाबा डेन पकड़ने असगरे स्कूलपर जाइले विदा भेलखिन, तखन दुलारचनक मनमे उठि गेल छेलै जे बारह-चौदहटा जवान शिक्षकक बीच बाबाकेँ बँचौल हेतैन? जँ कहीं फेर मारए! होइतो अहिना छै जे मारि खेलहाकेँ जहिना मारिक डर घर करै छै तहिना मारनिहारकेँ मारैक घर करै छइ। मुदा जखन स्कूलक बाट छोड़ि डॉक्टर ऐठामक विचार सुनलक तँ मनमे मारिक डर छँटि नीकक भान भेलइ। तँए दुलारचनक मनमे उत्साह जगि चुकल छेलइ। बाजल-

"हँ, ताबे आगू बढ़ि डॉक्टर साहैब ऐठाम जाइ छी। अहाँ दुनू गोरे पाछूसँ आउ।"

दुलारचनक बात सुनि रघुनी काका किछु ने बजला मुदा विसुन कक्काक मनमे शंका उठिये गेल रहैन जे जँ कहीं हुरथुराएलमे विदा हएत आ रस्तामे चोटक निजाएबसँ खसि-तसि पड़त तखन तँ...। मुदा संगमे रहने से तँ नै हेतइ। दोसर दिस रघुनी कक्काक मनमे उठैत रहैन जे चोट-चोटो लगने निजाइए। देह-हाथ डोलतै, तइसँ शरीरो सर्ड़ास हेतइ। मुदा एक-दोसर मुँह-तक्का-तक्की करिते रहैथ आकि बिच्चेमे दुलारचन साइकिलपर चढ़ि विदा भेल। चढ़ल जाइत देख, रघुनी काका टोकलखिन- "रौ दुलारचन, ऐगला जे खुट्टा अछि तैठीमसँ पहिने घूमल आ ते।"

दुलारचन आगू बढ़ि गेल। शंका करैत विसुन काका बजला-

"मीत, घटनाक पाछू जरूर किछु भीतरिया बात अछि। मुदा अनठेकान किछु दोखो केकरो ऊपर लगाएब उचित नै हएत। तखन तँ

पहिने ई भाँज लगाउ जे कोन मास्टर मारलकै?”

ताबे दुलारचन दू-तीन लग्गी बढ़ि गेल छल। पाछूसँ रघुनी काका शोर पाड़ि कहलखिन-

“बौआ, कनी साइकिल रोकह।”

दुलारचन साइकिल रोकि ठाढ़ भेल। लगमे जाइते विसुन काका पुछलखिन-

“बौआ, तूँ ते सभ मास्टरकेँ चिन्हते छहुन, के मारने छेलखुन?”

दुलारचन-

“विलासबाबू।”

नाओं सुनि विसुन काका बजला-

“अच्छा, तूँ बढ़ि जा हम दुनू गोरे गप-सप्प करैत पाछू-पाछू अबै छी।”

दुलारचन आगू बढ़ल, जेना किछु विसुन काकाकेँ मनमे उचड़लैन तहिना चौंक गेला। विलासबाबू? ...वएह जे वीमा-एजेंसी करैए। मने-मन जेना सर्द पैसए लगलैन। रघुनी काका दिस नजैर उठा विसुन काका बजला-

“मीत, कहियो किछु विलास बाबूक सम्बन्धमे बजलो छी?”

विसुन कक्काक बात सुनि रघुनियोँ कक्काक मनमे ठहकलैन। बजला-

“हँ, एके गोरेक किए सबहक चालि-ढालि देखि बजबो करै छी आ आगूओ बजैत रहब। तइले जे केकरो अभाँत लगतै तँ लागह। अधला वृत्ति नै करह किए कियो किछु कहतै।”

दू गामक बीच पाँतरमे एकटा आमक गाछ, समैयो रौदियाएल जाइत रहइ। दुलारचन सेहो आगू बढ़ि ओही गाछक छाहैरमे ठाढ़ भेल।

दुनू गोरे गाछ लग पहुँचते विसुन काका दुलारचनकेँ पुछलखिन-

"बौआ, मन हल्लुक बुझि पड़ै छह कि भारी।"

साइकिलक चाल पेब दुलारचनक देहक दर्द देहेमे निजाएल। मन हल्लुक जकाँ भइये गेल रहइ। बाजल-

"बाबा, छुटि गेल। नीक मन लगैए।"

काजक अराम देखि विसुन काका बजला-

"मीत, कनीकाल छाहैरमे छहरा लिअ। रौद तीख भऽ गेल। काजोक धड़फड़ी आब ओते नहियेँ रहल जेते छल, मुदा डॉक्टरसँ जाँच कराएब जरूरी अछिए।"

अपन छुटैत जिनगीपर सँ रघुनी कक्काक मन सहटलैन। मुदा मीतक मीठ बोल- 'काजक धड़फड़ी' सुनि मन मधुआइत रहैन। मधुआइत ई रहैन जे अपन परिवारक प्रति दायित्वकेँ जीबैत-चलैत देखलैन। यएह जिनगीक धार छी। जिनगीक धारमे सदैतकाल प्रवाहित होइत अनवरत गतिये चलैत रही.., चलैत रही...।

मुदा आगूमे लंगोटिया संगीक बीच रहने मुँहकेँ चुपो राखब केहेन हएत। जिनगीक कोन ठेकान छइ। सभ जनिते छी जे जहिना जन्म दुनियाँमे प्रवेश करबैए, आ ओ ता-धरिक छी जा-धरि आँखि तकै छी, तहिना मृत्यु दुनियाँकेँ उसारितो अछि। तैबीच जँ मनक बात मनेमे रहि जाए सेहो नीक नहि। नीक ऐ दुआरे नै जे वएह भविसमे बौआएत..!

जेना किछु मुहसँ निकलै-ले रघुनी काकाकेँ कण्ठमे गुदगुदाइत जीहक लबलबी लग पहुँच गेलैन। तहिना विजकैत ठोर खुजिते हरहरा कऽ निकललैन-

"मीत, आब तँ अपना सभ ओइ अवस्थामे पहुँच गेल छी जइ सीढ़ीपर सहियो गलत आ नीको अधला हएत।"

रघुनी कक्काक दृश्यकूट शब्दक माने विसुन काकाकेँ नीक जकाँ नै लगलैन। अपना दिस देखैथ तँ बुझि पड़ैन जे एहेन भाषाक प्रयोग तँ दुनू गोरेक बीच कहियो ने भेल, आइ किए एहेन शब्दक प्रयोग केलैन? फेर लगले मनमे भेलैन जे नव घर बनैले नव समचाक जरूरत होइ छइ। जेना घर भेल। घर तँ घरे भेल। माने ओइमे रहब। मुदा फूसक घर जकाँ बाँस खढ़क समचा जेना- डोरी, बत्ती, करची, खरही, झाझन, खुट्टा, खाम्ही इत्यादि- थोड़े पजेबा घरमे रहत। ओ तँ बदैल पजेबा, गिट्टी, बाउल, सीमटी इत्यादिक रूपमे एबे करत, तँए भऽ सकैए जे नव काजक दौड़मे मीतक मनमे किछु एहनो भऽ गेल होइन। मुदा अवस्थाक चर्चक संग नीक-अधलाक चर्च तँ मीत कइये देने छैथ...।

दोहरा कऽ बात नै उठबैत विसुन काका सुसकारी भरलैन-

"मीत, तहूमे कि कोनो कहैबला अछि।"

मीतक सुसकारी पेबते रघुनी काका बजला-

"मीत, कोनो पर-पनचैतीमे छौड़ा-मारड़िक जेरमे पनचैती विगैड़ जाइए आ तइसँ विचार करैबला काजे विगैड़ जाइए, सेहो नीक नै बुझि पड़ैए।"

रघुनी काकाकेँ दोहरी सुसकारी भरैत विसुन काका कहलखिन-

"से जे नै पड़त तखन ते समाजक रस्ते टुटि जाएत। केकरा मनमे नै छै जे नीक करैत, हँसैत हंसक जिनगी बनि छीर-सागरमे समाहित नै हुअए। मुदा से होइ किए ने छइ?"

विसुन कक्काक सुसकारी सुरकैत रघुनी काका बजला-

"मीत, अखन जे घटना-समस्या उपस्थित भऽ गेल अछि तइमे हमरा की करक चाही? ओना, अहाँ जँ नै भेँट भेल रहितौं आ डॉक्टर ऐठामक विचार नै केने रहितौं तँ बच्चाकेँ की इलाज करैबतौं, इलाज होइत ओइ मसटरबाकेँ...।"

बिच्चेमे विसुन काका टोकि देलकैन- “बारह-चौदह गोरे ओ सभ अछि तैबीच अहाँ असगरे केना असल जवाब दऽ सैकतिऐ?”

विसुन कक्काक बात सुनिते, जहिना पाछूसँ अबैत धारा आगू बन्हाइते, दोसर दिस मुँह करैत बोहैए, तहिना रघुनी कक्काक बोल बहलैन-

“भाय, आब की केतौ कोनो संस्था रहल, आब ओ धंधावाजक अड्डा बनि गेल अछि!”

दछिनसँ एकटा शिक्षक, जे गामेक विद्यालयमे कार्यरत छैथ, मातृकसँ ममियौत भाइक बिआहक बरियाती पुइर अबैत रहैथ। रामरतन रघुनी कक्काक दियादी परिवारक भातीजो, कनी हटलेसँ रामरतन रघुनी कक्काक मुहसँ ‘धंधावाज’ सुनि नेने छला। मनमे जिज्ञासा जगिये गेल रहैन। तैबीच दुलारचन परिवारेक नै, स्कूलक विद्यार्थी सेहो छी, तेकरोपर नजैर पड़ि गेल छेलैन। ओना, रामरतनक मनमे उठि चुकल छल जे स्कूलक बच्चा छी तीन दिनसँ नै छेलौं, तँए पहिने स्कूलेक समाचार पुछिऐ। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे जखन तीन दिनक सी.एल. गमेबे केलौं, तखन समाचारे बुझब कोन जरूरी अछि। पहिने जे आगूमे पड़ल अछि तेकरा देखब आकि मुइलहा पकड़ी जीतहा छोड़ी...। साइकिल रोकि रामरतन टोकलकैन-

“बड़े देखै छी एते रौदमे दुनू अपेछितकेँ घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलाइत?”

अपनाकेँ तिदिसिया होइत रघुनी काका विचारए लगला जे रामरतन शिक्षक सेहो छी, अंगीत सेहो छी, तही बीचक समस्या अछि। केना आगू भऽ कऽ बाजब। नवतुरिया अछि, दब-उनार ओते नै बुझैए। मुदा विसुन काकाकेँ गर भेट गेल रहैन। गर ई भेट गेल रहैन जे आब धंधावाजक भाँज लगि जाएत। बजला- “बौआ, आब कि कोनो शिक्षण

संस्था शिक्षण संस्था रहल, आब ओ तँ धंधावाजक अड्डा बनि गेल अछि।"

मामा गामक ममियौत भाइक बिआहक बरियाती-भोजक रसगुल्लाक गदगदी रामरतनकेँ रहबे करैन, मधुमाछीक छत्ता जकाँ मधुक रस चुबबए लगला-

"काका, दुनू गोरे श्रेष्ठजन छी। संगी-साथीमे झूठ बाजब समैयक मांग अछि। मांग ई जे मुँह फोड़ि जँ कियो कहैथ- 'बोतल पिआउ', तैठाम की कएल जाए? मुदा से नहि। अपन जिनगीक अनुभवक बात कहै छी। ओना, बोतलक माने बनौल पानि, दूध, फलक रस सेहो होइए, तँए ओम्हुरका बात छोड़ि, अनुभवक बात कहै छी, जेते मनुख तेते जिनगी, जे सदैत एक-दोसरकेँ जहिना जिज्ञासु बनबैए तहिना... ।"

बिच्चेमे विसुन काका बजला-

"बौआ, भने गप-सप्पमे बेरो-विपैत कटत। समांगो सभ ऐबते हेतैन। अपन की अनुभवक बात कहए चाहै छेलह से कहऽ?"

रामरतन-

"काका, गामक इस्कूलमे नोकरी भेटने तेते मन खुशी भेल जे की कहब। एकाएक किसान परिवारमे दुदिसिया आमदनी बढ़ल, बाढ़ि-रौदीक दाबल परिवारमे आशाक जिनगी फुदफुदाइत मुदा से नै भेल।"

अकचकाइत विसुन काका पुछलखिन-

"किए ने भेलह? केहेन बढ़ियाँ कहलह जे परिवारकेँ आशा भेल, आ लगले उनैट गेलह, नै भेल?"

विसुन कक्काक प्रश्न सुनि रामरतन ठमकल। रंग-बिरंगक बात विचार रूपमे पनपऽ लगल। मुदा सभठाम सभ बात बजलौ तँ नहियेँ जाइ छइ। तहूमे अखन काजक अनुशासनमे बान्हल छी। केना कोनो शिक्षक समाजक भीतरिया काज आन-समाजक बीच बाजत। मुदा तँए की ई

बात झूठ अछि जे एक-एक शिक्षक, सरकारी हौउ आकि गैर-सरकारी वीमा-एजेंसी, चाहे आनो-आन एजेंसीसँ जुड़ल नै अछि। मुदा लगले रामरतनक मन भभैक उठलै। गामकेँ एहेन बाजार बना बजारि रहल अछि जे कहियो जमीन छोड़ि उठि कऽ ठाढ़ नै हएत..!

पाशा बदलैत रामरतन बजला-

"केमहर-केमहर एते रौदमे दुनू भजारक सवारी चलल अछि, काका?"

ओना, विसुन काकाकेँ दुलारचनक सम्बन्धमे नीक जकाँ नै बुझल रहैन मुदा टटका घटना रहने बजैले मन उबियाइते रहैन। उबियाइत ई रहैन जे, जहिना कोनो नव घटनाक समाचार जे जेते- जहिना सुनैए, से तेते दोसरकेँ सुनबए चाहैए। भलेँ कियो हाथीक सूँढ़क गप करए आकि नाङैरक, तहूमे दुनूक नमतियो तँ एकरंगाह होइते छै, भलेँ कनी मोट आकि पातरक अन्तर किए ने हौउ। जखन महिक्का अरबा चाउर ओहेन धपधपौआ उज्जर होइए, तइमे जखन मोटका पचिये जाइए, भलेँ अपनो खुद्दी किए ने फटकलासँ बेरा जाए, मुदा मोटका थोड़े बेराइए..?

तरे-तर विसुन कक्काक मन फुदफुदाइते रहैन, बजला-

"बौआ रामरतन, जेहने भातीज तूँ मीतक छहुन तेहने हमरो भेलह। आन नहियेँ भेलह। तहूमे समाजक बेटा तोंहू छेबे करह। समाजक प्रति केहेन बेवहार मनुखक हेबा चाही ई तोरा हम कहियऽ से उचित हएत।"

विसुन कक्काक 'उचित' सुनि रामरतनक मुहसँ निकललैन-

"काका, समाज-समाज छी, ऐमे ने कियो केकरो भातीज छी आ ने पीत्ती। समाज चलैक प्रश्न अछि। केना लोकक पेटक पानि धारा बनि बोहैत रहतै, एकर निमरजने ने सबहक करतबे नै धर्म-कर्म सेहो छी।"

रामरतनक विचार विसुन काकाकेँ नीक लगलैन। मन उमैड़ गेलैन।

बजला- “बौआ, ऐठाम ओना चारि गोरे छी, मुदा दुलारचन बच्चो अछि आ मारियो खेलहा अछि, तँए ओकरा घटनाक सत्यापन-ले रहए दहक। अपना तीनू गोरे विचार करह जे आगूक लेल की नीक हएत।”

ओना, विसुन कक्काक इशारा रामरतनपर रहैन, मुदा रघुनी काका बिच्चेमे बात पकैड़ बजला-

“मीत, एना नै ओझराएल लत्ती बेड़ौल जाइ छै, सबहक पहिने बीह भँजियाबऽ पड़त, तखन ओकर ऊपर-निच्चाँक मुड़ी सोझ कएल हएत।”

खग जानए खगक भाषा आ बजन्त्री जानए नचनियाँक भाषा। विसुन काका अपन बात सम्हारैत कहलखिन-

“बौआ, भने मीत नजैरपर दऽ देलैन, ओना हम एकरा अनठाबऽ चाहै छेलौं, मुदा... ।”

बिच्चेमे रामरतन टोकि देलकैन-

“अनठबै किए छेलिऐ?”

जेना जीहेपर विसुन काकाकेँ रहैन तहिना बजला-

“बौआ, पिआजुकेँ सोहै छी तँ केतौ ने गुद्दाक ढेरी भेटैए, सगतैर खोंइचेमे गुद्दा भेटैए, मुदा तँए ओकर गिनती गुदादारमे नै होइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। दुलारचनकेँ किए मारलक ताबे एकरा छोड़ह। ई विचारक सीमामे सेहो अबै छइ। मानि लेलौं जे बच्चा किछु गलती केलकै। मुदा ओकरा तँ हाथो पकैड़ आकि मुहोँसँ कहि सुधारल जा सकै छल, तैठाम एते मारिक कोन प्रयोजन छल?”

विसुन काकाकेँ मनमे जेते चोट लगल छेलैन, तइसँ दोबर चोट रामरतनकेँ लागल। दोहरी ई जे एकहरी तँ समाज-परिवारक भेल, मुदा दोहरियो तँ भेबे ने कएल जे ओकर गुरुतुल्य सेहो छिऐहे। की ओकरा मारिये-पीटकऽ सिखौल आकि पढ़ौल जा सकैए। शिक्षकक (बाल शिक्षक) काज छिऐन बच्चाक नजैर पकैड़ ओइ दिशाक ज्योति दी जे

दिशा पाबि ओ हलसैत-कलसैत रहए।

रामरतनक मन सहैम गेलइ। मन मानि गेलै जे गलती शिक्षकक भेल। मुदा एवजी-गलती के केकर मानए ईहो तँ विचारणीय अछिए। रामरतनक मन ठमकल। ठमकल ई जे जखन हम विद्यालयसँ छुट्टी परिवारक काज-ले नेने छी, तखन अपनाकेँ शिक्षक मानब उचित नै, एकटा मनुख छी। किए हम एहेन शिक्षकक गलती अपना ऊपर लेब। समाजेक अंग ने हमहूँ भेलिऐ। मुदा समाजो तँ समाज छी। रघुनी काकासँ केते चीज सीखनौं छी आ संगे-संगे भोज-काजमे एकसत्तैरमे बैस खाइतो छी। तहिना विसुन काका सेहो छैथ, तैबीच अपन विचारकेँ ओहन बना किए ने बाजब जे सभकेँ सोहनगर लगैन। बाजल-

"काका, जहाँ धरि घटना आबि चुकल अछि ओकरा उनटाएलो तँ नहियेँ जाएत, मुदा आगूक धारा तँ बदलल जा सकैए...।"

सहमत जतबैत रघुनी काका बजला-

"ई बात बिल्कुल सत् जे नीक काज हौउ आकि अधला, ओ इतिहासक कड़ी बनैए, मुदा अखुनक परिवेशमे जँ एना भेल तँ की ओकरा लोक मुँह दाबि सहि लेत?"

रघुनी काका आ विसुन कक्काक बीच एहेन विचारक सम्बन्ध शुरूहेसँ रहलैन जे एक-दोसरपर अकाट्य जिनगीक सम्बन्धक रंग चढ़ल छैन...।

रघुनी कक्काक विचारमे सहमत दैत विसुन काका बजला-

"लाख रुपैआक बात मीत बजलौं। जाबे लोक अपन रक्षा करैक शक्ति अपने नै जगौत ताबे अहिना होइत रहलै हेन आ आगूओ होइत रहतै।"

दुनू गोरेक बीच रामरतन अपनाकेँ तर पड़ैत देखि बाजल-

"काका, आब ऐ उमेरमे एते औगतेलासँ उमेर कलंकित हएत।

जखन जुआन-जहान हम तैयारे छी तखन अनेरे अहाँ सभ मनकेँ छोट करै छी।"

रामरतनक बात जहिना रघुनी काका तहिना विसुन काकाकेँ सेहो नीक लगलैन। थर्मामीटर जकाँ चढ़ल पारा निच्चाँ उतरलैन। अपन बात फेकैत रघुनी काका विसुन काकाकेँ कहलखिन-

"मीत, अहाँ तेहल्ला भेलौं, अहाँ सभ जे विचार करब से मानि लेब।"

रघुनी कक्काक विचार सुनि रामरतनक मनमे आशाक बिसवास जगल। मुदा धड़फड़ा कऽ बीचमे केना बजैत। सुग्गा जकाँ विसुन कक्काक मेना-मुँह दिस देखए लगल।

रेखा गणितक त्रिभुज जकाँ एकटा कोणपर अपनाकेँ पेब विसुन काका बजला-

"बौआ रामरतन, जखन तूँ बीच सिमानपर ठाढ़ छह, तखन तोरे अगुआएब नीक हएत। बीचमे पड़ि समुचित निराकरण कराबह। जइसँ समाजमे कोनो तरहक ने विस-विसी आबए आ ने विस-विसाइन हुअए।"

रामरतन-

"अपना भरि परियास करब, मुदा..?"

❑

शब्द संख्या: 2865, तिथि: 04 दिसम्बर 2014

समरथाइक भूत

आन गामसँ हमर गाम सात कच्छे नीक अछि से आन मानए आकि नै मुदा अपने तँ मानिते छी। अहीं कहू जे हमरा गामसँ बेसी कोन गाममे चटवाह अछि? भज्जू काकाकेँ देखियौन जे एते दिन अपनेटा सासुरक सीखिसँ ओझहा छला आ आब केहेन खनदानी भऽ गेलैन जे बेटो ओझहा बनलैन आ आब पोतो झाड़-फूक करब शुरू केलकैन अछि। ओना, अखन सड़ाना परहक नै भेलैन अछि मुदा दोग-सान्हिमे लोक ओझहा तँ कहबे करै छैन।

हँ तँ कहै छेलौं- गामक गप। रंग-रंगक ओझहा-गुनीसँ भरल गाम हमर अछि तैठाम जे कियो जिद्दे करता तँ पुछबे ने करबैन जे अहाँ गाममे भूत बेसी अछि कि ओझहा? जँ भूतसँ कम ओझहा रहत तखन तँ छजतै, मुदा जखन भूतसँ बेसी ओझहे भऽ जाएत तखन केना छजत! कटौझ हएत की नै? से कटौझ कहाँ कोनो गाममे अछि? तइमे तँ हमरे गाम ने बीस भेल...। ऐबेर जे गाम सबहक नाओं उनटा-फेरी भेल तइमे ओझपुरिया गाम सेहो बना लेलौं। आब सरकारी रेकटमे चलि गेल। जखने रेकटमे गेल तखने ने मालो-माल भेलौं। चलू भाय जे भेल से भेल। सभ अपन-अपन गामक मालिक भेलौं।

जेहेन जे मन बनाएब तेहेन तेकर मैलकियत रहत आ मैलकान चलत। जे जेते भोरमे जागब तेकर तेते नमहर दिन हएत आ जे जेते वसन्ती हवामे अलिसाएल पड़ल रहब, से तेते बैशाखा पान जकाँ अलिसाएल कहिऔ कि मौलाएल आकि अधसूखू, भेल कातमे पड़ल

रहब! आन जकाँ तँ ने बेसी हमरा मनतर अबैए आ ने चाटीए चलैए आ ने तुलसी फूलक मुड़ी लऽ कऽ आकि कुश लऽ कऽ आकि करूतेल आकि गंगाजल लऽ कऽ झाड़ऽ अबैए। खाली वतरसिया हूक झाड़ए अबैए। मुदा अपना मंत्रपर सोलहन्नी बिसवास तँ ऐछे, बस किछु ने मूसक माटिमे मंत्र मिला फेकयौ, डाँड़पर दुनू हाथसँ पकड़ल चीरल-कड़चीक दुनू भाग अपने सटए लगत। ओइमे झूकि कऽ हूकवाहकेँ डाँड़ रगैड़ तरे-तर टपए कहिऔ, जँ टपि गेल तँ छुटि गेलै, नै टपि भेलै तँ डँड़-टुट्टा बुझियौ। छुटै वा नै छुटै से ओ जानए, मुदा तत्वनात ओकरासँ कहाइए लइ छिऐ जे अपना मुहेँ बाजह- छुटि गेल। ओहन ओझवाहि करैबला ओझहा हमहूँ छी। मुदा तँए कि गाम हमर नै छी, हे नै जेबइ झाड़-फूक करए, मुदा जिगेसो करए नै जेबै? से तँ जाइते छी आ जा-जीब जेबे करब। से जँ जाइते छी, तखन ओझहा-लिस्टमे हमर नाओं दर्ज किए ने हएत। द्वारिका-छाप भेटने तँ मुखाग्निसँ छूट भेटै छै, आ गाम-छापकेँ किए नै भेटत? मुदा से अनेरे कहलौं। एते दिन हूकेटा झाड़ैक मंत्र अबै छल, आब जोड़ीक सेहो अबैए...।

पैछला दसमीमे चनौरा स्थानमे सीखलौं। अहाँ सभसँ लाथ कोन, चलती एने चाहो-पान बेसी भेटए लगल अछि। जखन गामक लोक ओझहा मानियेँ नेने अछि, तखन आन गामबला किए ने मानता। आन गामवालीक मुहेँ सुनि जँ नै मानता तँ अपना गामवालीकेँ झूठा बनौता! ऐमे हमरा की। नहियेँ जानता तँ नै जानौथ। अपन अपना गाम-घरक चीनमारपर तसली-बटुकेँ ओहो हड़बड़बौथ, हमहूँ हड़बड़ाएब। तइले हुनकर मन किए कठाइन हेतैन आकि हमरे हएत। आब कि ओ कहबी रहबे कएल जे 'घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे..?'

आब तँ घरोवाली डेरावाली बनि छुच्छे वौआइ छैथ।

गाम तँ गामे छी। किए लोक बुझत जे फल्लाँ जोड़ीए आ हूकेक मंत्रटा जनैए। जहिना एकटा मूसक माटि आ दोसर पञ्चमीक माटिसँ

झाड़ल जाइए, हमहूँ तहिना झाड़ै छी। साँपक मंत्र तँ हमर एहेन पक्का अछि जे नब्बे प्रतिशत गारंटी दइ छिऐ, दस प्रतिशत राजा-दैवक हाथक छी। हरहाड़ाक बीख रहौ आकि ढोढ़क, गारंटी दइ छिऐ। दुनियाँक कोन आदमी अछि आकि करखन्ने अछि जे शत-प्रतिशतक गारंटी देत। जँ भगवाने दऽ सकितैथ तँ नेङ्गरा-लूल्हा केतएसँ आएल?

आब तँ तोहूमे तेहेन-तेहेन घटिया कम्पनी सभ भऽ गेल अछि जे पीओ-फेको आ लिखो-फेको माल बनबए लगल अछि। तइसँ तँ सात कच्छे नीक छीहे ने। एकबेर जेकरा झाड़ै छिऐ तेकरा कहाँ कहै छिऐ जे तीन बर्खक पछाइत फेर बीख जगतह। जिनगी भरिक गारंटी दइ छिऐ। भलेँ फेर हौउ।

दिने-देखार मैनजनक अँगनामे भूत लगि गेल। दरबज्जापर बैसल-बैसल टोल-पड़ोसक लोक सभकेँ जाइत देखिऐ। एक मन हुअए जे रस्ते-रस्ते टहैल कऽ अपनो देखिऐ जे की बात छिऐ मुदा फेर धकमका जाइ। धकमका ऐ दुआरे जाइ जे गामेक एक गोरेक घरमे आगि लगलै अपना चुल्हिसँ, आ अरारि चुकबै दुआरे चारि गोरेपर केस कऽ जहल कटा देलक। तेहेन गाममे डेग उठबैसँ पहिने विचारणीय तँ अछिए। मुदा गामक बातक दाब ओते मनमे नै पड़ल, जेते पड़ल छल मैनजनक किरदानीक। आगि लगौ, बज्जर खसौ ओहन लोक आ ओहन परिवारमे जे कुकुर्मी-विधर्मी अछि, तैठामक घटना छी। सात-आठ बर्खक एक बच्चिया बगलेक खेतमे बकरी चरबैत रहए, लोक सभकेँ जाइत देखलक तँ दौग कऽ ओहो गेल, सुनलक जे मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै, आँखिसँ किछु ने देखलक, एतबे देखलक जे चारू-कातसँ स्त्रीगण सभ बका रहल छइ। मुदा तही बीच ओइ बच्चियाकेँ सोह खिंचलकै जे बकरी केकरो बाड़ीमे किछु खा ने लइ। तँए घुमि कऽ आबि गेल। अपन आ मैनजनक घरो बेसी हटल नहियेँ अछि, बीघा डेढ़ेक हटान छइ।

पुछलिऐ- "बुच्ची, केतए गेल छेलौं?"

बाजल- “मैनजन बाबाक पुतोहुकेँ भूत लगल अछि।”

मनमे भेल जे आरो किछु पुछिऐ मुदा अपने मन रोकलक जे ऐ बच्चासँ बेसी पुछबो उचित नहि। तहूमे लगले गेल आ आएल। जैठाम देखनिहारक भीड़ छल, तैठाम जँ एक नजैर ओ बच्चिया देखिये लेलक, सएह बहुत भेल। आगू किछु ने बजलौं। मुदा अपने मनक विचारमे ओझरा गेलौं। ओझरा ई गेलौं जे एकटा मन कहए जे की बात छिऐ से कनी नीक जकाँ बुझिऐ, मुदा दोसर कहए जे एहेन-एहेन पतीतक चरचो करब समैकेँ गोबराएब भेल। मुदा ईहो भेल जे गाममे हजारो रंगक लोक अछि, हजारो रंगक चालि छै, तइसँ हमरा की? मुदा समाज हमरो छी आ हमहूँ छिऐ तइ हैसियतसँ तँ किछु-ने-किछु जवाबदेही बनियेँ जाइए, तँए...।

एक गरे देखी तँ बुझि पड़ए जे अपना चसमसँ जा कऽ देखिऐ, मुदा लगले तमसेलहा मन आगूमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाए, जे आगि लगौ आकि बज्जर खसौ, रीतिकेँ कुरीति बनौनिहारक पीठपोहू नै होइ, तँए देखब कोन जरूरी अछि। मन घिच-पिच करए लगल। दोसरो आफत आगूमे ठाढ़ भऽ गेल! अपनो काज दिस नजैर ढुकबे ने करए..!

मन उड़िया-बिड़िया ओही समरथकी भूतपर चलि जाए! गहवरिया भगता जहिना देवी-देवता बनि स्वर्ग-नर्कक पासपोर्ट बना बँटैए तहिना भूतो ने जुअनकी-जुअनका देहपर चढ़ि कुदबो करैए। किछु फुड़बे ने करए जे की करब की नै करब। मुदा संयोग नीक रहल। लालमणिकेँ ओम्हरेसँ घुरल अबैत देखलिऐ।

चौबगली छिड़िआएल मनकेँ समेट एकबट केलौं। दरबज्जाक आगू जखन रस्तापर लालमणि टपैत रहए आकि सोर पाड़ि बजलौं-

“नेताजी, कनी छहरा लिअ। केमहर-केमहरसँ सवारी एलैए?”

लग ऐबते देखलिऐ लालमणिक चेहरा उदास! बिनु किछु बजने

लालमणि चौकीपर आबि बैसल। गुम-सुम। आगू किछु पूछब उचित नै बुझि पड़ल। किएक तँ 'केमहरसँ अबै'क चर्च तँ कइये चुकल छी। जवाब तँ वएह ने देती...।

फेर मनमे भेल जे भऽ सकैए किछु गंभीर बात होइ, जेकरा मने-मन मथैत हुअए। तँए अपनो प्रतीक्षित बनि उनटनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

लालमणि गामक बेटी। बच्चेसँ चंसगरो आ चंगलो। मुदा हवा-विहाड़िमे उधिया गेल। मैट्रिक पास नै कऽ सकल, मुदा बजै-भुकैक लूरि भऽ गेलइ। एकबेर जिला-परिषदक चुनावमे पार्षदो बनल। बिआह ताबे धरि पछुआएल रहइ। ओना, शुरूहेसँ गाम-समाज देखैक अपन नजैर बनि गेल रहइ। जइसँ जिज्ञासा बच्चेसँ जगि चुकल छेलइ। जेकरा जगत देखैक जिज्ञासा रहत सएह ने दोसरसँ पुछि गुरुद्वार बनौत। आकि जेकरा जिज्ञसे नै रहत ओ तँ अपने ने द्वार-गुरु भेल। सभ किछु ओकरा बुझले रहै छै, खगते की छै जे दुनियाँ दिस देखत। खाली एकटा मोबाइल रहक चाही। चौबीस घन्टा हँसैत-खेलैत तेना कटि जाएत जे दुनियाँ समटा कऽ चारि ओंगरीमे बसि जाइए।

ओना, जिला-परिषदक चुनाव जीतने, एते तँ लालमणिकेँ भइये गेल जे इन्दिरा आवासक घर भेने, रहैक गर स्थायी भऽ गेलइ। ओना, माए-बाप बहुत दबल नै रहथिन मुदा बिआहक पछाइत बेटी परधन भऽ जाइ छै तँए मोह-माया छुटिते छइ।

सरकारीए दस कट्ठा परती कब्जा कऽ अपन घरो अलग बनौने अछि। दोहरा कऽ जिला-परिषदक चुनाव लड़ैसँ पहिनहि हारि गेल छलि। जे कोटा आरक्षित छेलै ओ आब सहरगंजा भऽ गेल। अकास उड़ैत चिड़ैकेँ जँ अकास-भोज्य नै भेटै तँ ओ केते दिन रौद-वसातमे जिनगी काइम रखि सकैए। लालमणि भटकल। एकटा विधायक संगे बिआह

कऽ लेलक। बिआह तँ कऽ लेलक, मुदा साले भरिक पछाइत दुनूक बीच खट-पट शुरू भेलइ। खटपटक कारण विचार-काजक अन्तर छल। 'बाजल किछु, केलक किछु।' एहेनसँ लालमणिकेँ रीश उठइ। वएह रीश रिसाइत-रिसाइत लालमणिकेँ पतिसँ अलग केलक।

समाजक नजैरमे लालमणि अजाति आ जिनगीक नजैरमे छिड़ियाएल देखि अपन आत्म-चेत चेतल। चेतल ई जे ओही दसो कट्ठाक परतीकेँ तोड़ि कट्ठा भरिक बास आ नअ कट्ठाक चास बना एकाकी जिनगी जीब रहल अछि।

शुरूहेसँ लालमणिक संग हमरा गप-सप्प चलैत आबि रहल अछि। सभ रंगक गप, समाजक गप, अपन गप। ओना, लालमणिक किछु काजपर तमसाएलो रहै छी, मुदा सबटा तामस तखन मिझा जाइए जखन आँखिक सोझ लालमणिकेँ एकाकी जिनगी जीबैत देखै छी। की दुनियाँ अन्हार छै आकि लालमणि अपने अछि?

किछु समय बीतला पछाइत लालमणि अपन मुँह खोललक-

"भैया, भाए-बहिन जकाँ सभ दिन एकठाम रहलौं तँए कहै छी। जिनगीक अनेको किरिया-कलाप छै..?"

लालमणिक बजैक टोन सुनि मन टोनिया गेल। कुशियारक टोनी जकाँ पोरे-पोर आँखि झक-झक करए लगल। बजलौं-

"गाम-समाजमे कोनो गप केकरोसँ छिपेबा नै चाही। जेते विचार फरिछाएल चलत तेते गामक सीमा मजगूत बनैत चलत।"

हमर बात जेना लालमणिकेँ रूचलै, बजैसँ पहिने मुस्कियाएल। मुस्की देखि बुझि पड़ल जे सौनक मेघ उमड़ल। आब किछु बरखा हेबे करत...।

बर्खाक आगम देखि लोक जहिना अपन घर-अँगनाक काज सम्हारि लइए तहिना अपनो सम्हारलौं। लालमणि बाजल- "भाय साहैब,

मैनजनक अँगनाक भूत की छी से आन जे बुझौ मुदा हम बुझै छी जे अखन धरि सोतिये-डाह टा होइ छेलै ऐठाम तँ ससुआ-डाह भऽ गेल अछि।”

लालमणि एक संग अनेको बात चालि देलक। कोन बातकेँ केते मानी आ केते नै मानी? मुदा एहनो तँ भइये सकैए जे लालमणि अपना विचारे बाजल अछि। गामे छी, रोटी जकाँ केतौ मुँह थोड़े छइ। मुदा जखने जेतइ तोड़ब तखने तेतइ मुहोँ बनि जाइए। के की बाजत, केकर बात केते तर पड़तै की ऊपर हेतइ, ई के बुझत? मुदा लगले मनमे भेल जे जँ लालमणि किछु अपन विचार रखलक तँ की हेतइ, अपनो तँ बुधिये-अकीलबला छी किने, किए ने ओकरा मनमे घोंटि दूध-पानि बेरा बुझब।

ऐगला बात बुझैक खियालसँ बजलौं-

“लालमणि! एक दिस भूत कहै छहक, दोसर दिस ससुआ-डाह?”

हमर बात सुनिते लालमणि चौंकल। चौंकल ई जे जे बात भाय-साहैबकेँ कहए चाहलयैन से भरिसक नीक जकाँ नै बुझलैन। मुदा बुझबो तँ सहज नै अछि। पुरुख-नारी बीचक जिनगीक समस्या छी। ऐ समस्याक समाधान ताधैर नै हएत जाधैर समकस-समाधान नै हएत। मुदा तइले बोल-बम नै श्रम-बम बनैक खगता अछि। खलिया गोलीसँ शिकार करब नेनमैत भेल।

समकस समाधान-ले ओइ सीमापर लिंग निरमबए पड़त जेतएसँ शिवलिंगक निरमान हएत। मुदा इतिहासक पन्ना विपरीत रहल। ओना, कहैले तँ कहलो जाइए जे युग सदैतकाल बदलैत रहल अछि कहियो पुरुख प्रधान इतिहास रहल तँ कहियो नारी-प्रधान। मुदा नारी-प्रधान आकि पुरुख प्रधान भेल केना?

जँ एक कोखिक पुरुख-नारी छी, दुनूकेँ अपन-अपन जिनगीक क्रियाक दायित्व अछि तखन ओकरा जिनगीक दायित्व बना चलब ने

दुनूक बीचक जिनगी भेल। तइले फल्लाँ-प्रधान आकि चिल्लाँ-प्रधानक की प्रयोजन? सबहक सोझहामे अपन-अपन गाम अछि, पुरुख-प्रधान परिवारक की गति छै आ नारी-प्रधान परिवारक की गति छै? सेहो कोनो एके सीमामे नै जिनगीक असीम अनन्त किरिया-कलाप सभमे। जेकरा तीन डिसमिल जमीन बासभूमि नै छै ओकर मातृभूमि की भेल? केकरा कहबै?

मुदा खोलि कऽ बजैक साहस लालमणिकेँ नै होइ। ओना, मनक संतापसँ बुझि पड़ैत रहए जे लालमणि भीतरे-भीतर जरि रहल अछि, मुदा धकमकी तँ रहबे करइ। धकमकीक कारण रहै जे जहिना रंग-रंगक नशाखोर अछि, रंग-रंगक नशासँ प्रेम छइ। केकरो भाँग प्रिय छै तँ केकरो ताड़ी, केकरो अफीम प्रिय छै तँ केकरो दारू। मुदा ऐमे कियो प्रेमी नै भेल, से केना कहल जेतइ। ओना, भाँग पीनिहार ताड़ीबाजकेँ कहै छै जे सड़कपर अर्र-दर्र बजबो करैए आ अपनो वेनग्र होइए...। मुदा ताड़ीबला की मुँह बन्न राखत? ओहो ने भांग खाइबलाकेँ कहत जे बाड़ी-झाड़ीक भाँगक पात आ फूल पीनिहार, मुफ्तक माल चटैबलाक बातक मोजरे केते..? अस्सी रुपैआक कमाइमे साठि रुपैआ, अदहोसँ बेसी भरि दिनमे प्रेमीक ऊपर तियाग हमर आ गलथोथरी करत आन? तहिना लालमणिक मनमे सेहो उठैत रहै, जइसँ मनमे धकमकी अबैत रहए। लालमणिक अपन किरदानी- बिआह- मनमे नचैत रहइ। जँ रणभूमिक विचार करै छी तँ अपनो बेधाएले छी। मुदा तँए कि इतिहास उनटौलासँ थोड़े उनटत, ओ तँ समयक संग जुड़ि गेल अछि। मूल विचार आजुक अछि जे सबहक दायित्व बनैए। लालमणिक धकमकी देखि बजलौं-

“नेताजी, गामक कोनो बातक विचार अपने सभ ने करबै। की मुइलहा लोक आकि पचास बर्खक पछाइत अबैबला लोक करत?”

हमर बात जेना लालमणिकेँ करेजमे लगलै। कोनो गाछ लगिते जेना कलशैक टुस्सा दइए तहिना लालमणिक टुसियाएल मन बुझि

पड़ल। ओइ टुस्साकेँ जँ बँचौल नइ जाएत तँ रौदमे जरियो सकैए आ पालामे ठिठुरियो सकैए किने! तँए अनुकूल संयोग भेटने ने ओ कलशत। बजलौं-

“नेताजी, मन खनहन नै बुझि पड़ैए तँए एकबेर चाह पीलासँ मनो खनहन हएत आ गपो-सप्प खनखनाइत चलत।”

लालमणि चाहक आग्रह मानि नै बाजल आकि मनमे कोनो दोसर बात घुरियाइत रहै, से ओ जानए, मुदा बाजल किछु ने। तैबीच अपनो मनमे भेल जे पत्नीकेँ बजा अपन एवजी पञ्च बना किए ने लालमणिक संग उतराचौरी करा दिऐ। अपने गपकेँ सोझ-साझ करैत रहब आ पत्नी-मुहेँ करा-बजा लेब। दोसर ईहो हएत जे धाक लालमणिकेँ हमरा मुहेँ गप करैमे हेतै ओ तँ पत्नीक संग नै हएत। जँ हमर पत्नी तँ ओकर भौजाइए ने...।

बहन्ना बना पत्नीकेँ सोर पाड़लयैन।

ऐबते पत्नी पुछली-

“किए सोर पाड़लौं। मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै सहए गप लोहनावाली मुहेँ सुनै छेलौं।”

गर भेटल बजलौं- “ओही गप्पे तँ सोर पाड़लौं हेन। कोनो कि सोर पाड़लौं हेन खाएक नेने आउ। तखन तँ नेताजी दरबज्जापर आबि गेल छैथ तँए हुनकर सुआगतो ने हेबा चाही।”

लालमणिकेँ चौकीपर बैसल देखि आकि की, पत्नी दरबज्जेपर सँ पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, तीन गिलास चाह झब-दे पठा दिअ।”

कहि लालमणिक आगू पत्नी बैसली। तीन गोरेक बीच पाबि जेना लालमणिक अलिसाएल मन कनकनाएल तहिना बाजल- “भाय साहैब, एकटा पुरुख जँ दू-तीनटा पत्नीक बीच रहत ते चाह-पानसँ लऽ कऽ खाइ-

पीबैमे किछु-ने-किछु घटी-बढ़ी भइये जेतइ, जइसँ डाह हेबे करतै। मुदा मैनजनक ऐठाम तँ तेसरे भऽ गेल अछि... ।"

कहि फेर लालमणि चुप भऽ गेल। मनमे भेल जे अखनो लालमणि धखा रहलि अछि। धखाइक कारण मनमे रहै जे सौतिया-डाह तँ बराबरीक हिस्साक रहैए जे हल्लुक भेल। मुदा ऐठाम तँ सासु-पुतोहुक प्रश्न अछि..!

कनसारक खोंरनी चलबैत पत्नी दिस देखि बजलौं-

"की सासु-पुतोहुक भेल, नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छी?"

ओना, पत्नियोँ बुझली, तँए हमर इशारा करैत लालमणिसँ बजबए चाहली। सोंगरक सह लगबैत बजली-

"नेताजी तँ आगूमे बैसले छैथ, गामक जेते छ-पाँच हिनका बुझल छैन तेते हमरा थोड़े बुझल अछि।"

तैबीच चाहो आबि गेल। बजैक जगह सेहो लालमणिकेँ भेटल। चाहक चुस्की लैत बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन किरदानीकेँ जाबे समाजमे अड़ौल नै जाएत ताबे भूत-भविस बुझब असान थोड़े अछि।"

लालमणिक बात सुनि मन थकमका गेल। थकमका ई गेल जे महिलाक समस्या छी, जँ महिलाक बीच विचार हएत, बीच-बिचौवैल हएत, तखन जे रस्ता निकलत से ने नीक हएत। तइले पत्नीकेँ सोझामे बैसाइए देने छिऐन तखन किए लालमणि झटहा मरैए?

जेना भीतरे-भीतर मन खौंझाएल मुदा फेर भेल जे जँ खौंझ लालमणिपर झाड़ब, तँ वेचारी बेइजती बुझती। मुदा पत्नीक ऊपर तँ पुरुख सदिकाल खौंझ झाड़िते आबि रहल अछि, जेकर घट्टा-पीठ्ठा पड़ले छैन, बेसी असरो ने हेतैन। तँए खौंझाएल बिलाइ जकाँ पत्नियेँकेँ कहलयैन- "अहाँकेँ जे लगमे बैसौने छी से पिकनीकक तरूआ माछक

सुआद बुझैले आकि अपन बातक विचारो करबै!”

जेना पत्नी बुझि गेली जे मैनजनक सासु-पुतोहुक बात खोलि कऽ सुनए चाहै छैथ, सदिकाल तँ दुनू परानीक बीच एहेन-एहेन बात होइते रहैए, तँए मनमे कोनो हलचल नै भेलैन। मुदा ई तँ मनमे रहबे करैन जे कहुना भेलौं तँ गामक पुतोहु भेलौं, जखन कि लालमणि तँ गामक बेटी छैथ। पहिने गामक बेटी तखन ने गामक पुतोहु। मुदा जहिना पत्नीक मन दौड़ैत चलैत रहैन तहिना लालमणिक मन सेहो दौड़ैत चलए लगल। कोनो सघन बोनमे जहिना तीस-चालीस साल पुरान हेराएल संगी अनायास भेटलापर बीचक सभ हेरेलहा समय अपने मेटा जाइए, तहिना पत्नियोँक आ लालोमणिक मन मैनजनक पत्नीक उमेर–24 बर्ख–आ पुतोहुक उमेर-28बर्ख-पर जा दुनू शिकारीक भेँट भेल। भेँट होइते दुनूक नजैरक मिलानी होइते ठहाकाक लाबा भड़भड़ाएल। मुदा बाक नै फुटलैन। जहिना घरमे आगि लगलापर बकार-हरण भऽ जाइ छै, तहिना। मुदा धधड़ाक इजोतमे जेना दुनू गोरेकेँ देखि पड़लै तहिना मुहसँ एक्केबेर अनुभव बनि निकलल-

“केकर बापक मजाल छी जे एहेन भूत छौड़ौत... ।”

लालमणि अपन घटना- वैवाहिक घटना-क विचार जे हमरा मुहेँ सुनने छलि तइसँ मनमे बुबकी रहबे करइ। निधोक बजैक साहस मनमे एलै, बाजल-

“भाय साहैब, बहिनक रूपमे जे बात हम समाजक बाजि सकै छी ओ भौजी-मुहेँ बाजब पछाइत उचित हएत, पहिने नहि।”

लालमणिक गंभीर विचार जेना मनमे लागल। लगिते विचार उठल, उठिते समाजक सतरंगी-चेहरा सोझहामे पड़ल। मुदा समाज तँ ओहन बारीक सुतक जालक ढेरी छी जइमे हजारो-लाखो सुत भिड़ियाएल अछि। तैबीच सभकेँ नीक हौउ से बजलेटा सँ से थोड़े हएत आकि

नीकक बाटपर आबि चललासँ हएत..?

विस्मित होइते मनकेँ जेना लालमणि टोबि लेलक। टोबिते जेना बुझि पड़लै जे खेबा-जोकर रसा गेल छैथ। निधोख बाजल-

“भाय साहैब, मैनजनक पुतोहुक भूत सौतिया भूत नै सौसिया भूत छी। मुदा छियैहो तँ अपने लगौलहा ने?”

पुछलिऐ-

“अपने लगौलहा की?”

लालमणिक मन जेना भीतरे-भीतर तुरैछ गेल होइ तहिना तुरछैत बाजल-

“भाय साहैब, भूत नै ओ डाह छी।”

जे भाँज बुझए चाहै छेलौं ओ भाँजे ने खुलै छल। प्रश्न दोहरेलौं-

“की डाह?”

जहिना कोर्टमे गवाह अपन पक्षधरक मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बजैए तहिना लालमणि पत्नीक संग मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बाजल-

“भाय साहैब, जखन दूटा पत्नी मैनजनकेँ अपना समकस जीविते छैन, पोता-पोती सेहो छैन्हे, तखन साठि बर्खक अवस्थामे चौबीस बर्खक पत्नीक संग जिनगी केहेन हएत? तीस बर्खक तेसर बेटा छै आ अट्ठाइस बर्खक पुतोहु। कहू जे तेकरा जिनगीक डाह हएब कोन अनुचित?”

लालमणिक मनक बात जेना मनमे घोंसिया गेल। आगू बढ़बैत पुछलिऐ-

“नेताजी, ओ तेसर बेटा जे छै भुतलग्गुक पति से की करै छै?”

ओना, अपनो बुझल जे धोविया कुकुर जकाँ ने घाटक अछि आ ने घरक, मुदा एहनो तँ होइते छै जे साँइक नाओं जनितो ‘हइ’ ‘हइ’क प्रयोग

होइए। जहिना कोनो जब्बर औरत कोनो अपराधी पुरुखकें ऐंड़सँ ऐंड़ियबैए तहिना लालमणि मैनजनक तेसर बेटा- भागेसरपर बोलीक ऐंड़सँ ऐंड़ियबैत बाजल-

"भाय साहैब, ओहन-ओहन लोककें गामक चौबट्टीपर जखन ऐंड़ियाएल जाएत ने तखन नवरंगी आ सतरंगी समाज एक बनत।"

ओना, लालमणि एक सूरमे बाजि गेल, मुदा जइ सुरे ओ बाजल तइ सुरे अपने नै बुझि पेलौं। बुझिये ने पेलौं जे की गलती भेल जे चौबट्टीपर भागेसरकें ऐंड़ियाएल जाएत। मुदा मनमे ईहो हुअए जे बीखाएल गहुमनकें जँ खोंचारियै आ जँ केकरो दोसरेकें लपैक लइ तखन तँ खेले चौपट्ट भऽ जाएत। तँए किछु आगू बजैसँ परहेज केलौं। मुदा चोटाएल साँपक फुफकार जहिना ताधैर चलिते रहै छै जाधैर मन थीर नै भऽ जाइ छै तहिना दोसर फुफकार छोड़ैत लालमणि बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन लोक समाजक कोढ़-करेज खोखैर कऽ खा जाएत। जाबे धरि उतकिरन विचारसँ समाज उत्क्रमित नै हएत ताबे धरि अहिना नितकरन विचार समाजकें निच्चाँ मुहें नीसकनी बनि ससारैत रहत।"

लालमणिक गम्भीर विचार सुनि मनमे अधलो लगए आ नीको लगए। मुदा किछु बजैक साहस ऐ दुआरे नै हुअए जे कोन दिस लालमणि भँसऽ चाहैए, तेकरा बिनु बुझने-बजने जँ विपरीत दिशाक बात उठि जाए तखन तँ लेनीक-देनी पड़त। मुदा लालमणि सन सामाजिक लोकक विचारकें समाज केते अडेजलक वा अडेजए चाहैए, ईहो तँ प्रश्न अछिए। मुदा अपन विचार पत्नी बुझि गेली। कठिया लाड़ैन चलौलैन-

"नेताजी, जेहने जेकर बाप रहतै तेहने ने तेकरा बेटोक छीछा-बीछा हेतइ।"

लालमणिकें जेना गर भेटलै तहिना बमछल- "भाय साहैब,

बजैकाल सभ बजैए जे देशोक आ परिवारोक कर्णधार जुबा-शक्ति होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। मुदा जुबा केहेन शक्ति पाबि शक्तिशाली बनए चाहैए, ईहो तँ विचारणीय विचार अछिए।”

तेहेन विचार लालमणि पटकली जे मनमे भारी पहपैट उठि गेल। उठि गेल ई जे जैठामक लोके घोर-मट्ठा भऽ गेल अछि तैठाम यशोमतीक मट्ठा पीबैले कृष्ण कोन बाटे औता से बाटे भोथिया गेल अछि। सबहक नीक हौउ, जेकरा पेटमे अन्न नै छै तेकरा अन्न भेटौ, जेकरा देहपर देहवन नै छै तेकरा देहवन भेटौ। जेकरा घराड़ियो ने छै तेकरा-ले चन्द्रलोकक घराड़ी कीनल जाए, तइमे ने सरकारी घर बनत। मुदा तँए कि हजार खण्ड साड़ीवालीक घर, लाख खण्ड साड़ीक घर नै बनौ, तखन विकास की भेल? आठअना पाइक ताड़ी पिआक रुपैआ-डेढ़-रुपैआ बढ़बैत जँ पनरह-बीस हजारक पचास ग्रामक पोंच नै पीलक तँ ओकर विकास की भेल? जँ सभकेँ उठाउ तँ सतरहटा नोकर जखन सभकेँ भेटतै, बेड-टीसँ लऽ कऽ पर-पानिक ठर-ठेकानसँ लऽ कऽ सिगरेट-सलाइ जुमबैत तीन गोरेसँ पकैड़ शौचालयमे बैसा पनिछुआ करबैत, साबुनसँ अपने हाथे अपने मलि-मलि कऽ धोइक इत्यादि, चौबीसो घन्टाक जँ जिनगी नै भेटै तँ ओकर विकास की भेल? आब कि राजा-रजबार रहल जे महींसोसँ नमहरका पशु- हाथी- तँ पोसै छल मुदा दूध-ले नै, सवारी-ले! ई तँ रच्छ रहल जे पत्नी मनक बात बुझि गेली। जाबे मनमे विचारि अपने किछु बजितौं तइ बिच्चेमे पत्नी लालमणि दिस गुम्हरैत बजली-

“नेताजी, अहाँ सभ तीतो-मीठ जनै छी आ देखबो-सुनबो करै छी। मुदा चीख कऽ आकि खा कऽ देखलिऐ जे केहेन सुआद केना-केना अबै छै, आकि धोविया-पाट जकाँ एकेबेर लगा देबइ? तखन कुश्तीक पैतरा केना बुझबै?”

पत्नीक बात सुनि मन हल्लुक भेल। मुदा तेखा-तेखीमे जहिना पत्नी लोहियाएल तहिना लालमणि करियाएल। गांगी-जमुनीक संगम ने

सरस्वतीक संग चलैत त्रिवेणियोँ घाट बनबैए। कहैले तँ सभ धारमे पानियेँ छै, मुदा ओ नीक-बेजा बेड़ौल केना जाएत? कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन तँ अछिए। बतहपनीक संसारमे जखन सभ बताहे अछि, तखन कोन-बताह कोन कोणसँ बतहपनी करैए सेहो तँ देखए पड़त...।

दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ बजलौं-

“कौआ कान नेने जाइए से सुनि अपन कान देखबे ने करब आ कौआक पाछू ई मानि दौगए लगब जे हमरे कान छी! तइसँ हएत? आकि ओइ भुतलग्गुकेँ- जेकरा बाँहि पकैड़ घरमे अनलकै, ओकरा पुछबै जे ओकर पैतपाल के करतै, पैत रक्छक के हेतइ?”

लालमणि बुझि गेल। बुझबो केना ने करितए, किछु छै तँ राजनीतिक जिनगी तँ छैहे ने। तखन तँ हौआमे बौआ भेटल सेहो कौआ लऽ कऽ उड़ि गेल अहाँकेँ की बोनढौआ भेटल। एहेन जिनगी तँ लालमणि देखिये चुकल छलि। जइसँ जिनगीक सभ बाट बन्न देखिते छलि। मुदा तैयो जीवैक तँ गर चाहबे करी। जे गरे ने देखा पड़इ। ओना, किछु मजबूरियो आ किछु सेवोक धियान तँ छैहे जँ से नै छै तँ अपनाकेँ किए समाजसेविका कहबै छैथ, कहेबे टा नै करै छैथ, मञ्चपर अपने बजबो करै छथिन जे ‘अहाँक बीच सेविका अछि तँए हुनको बात कनी सुनि लिअ।’

लालमणि अपने फुड़ने बड़बड़ाए लगलि-

“ई छौड़बा भगेसरा जे अछि एकरे किरदानीसँ एहेन घटना होइए। मानि लेलौं जे बाप अपन इज्जत-आवरू धोइ-पोछि कऽ चाटि लेलक, मुदा जे बाँहि पकैड़ औरतकेँ समाजक बीच अनलक ओकरा के देखत?”

लालमणिक बात सुनि मन ठहकल। पुछलिऐ-

“ओ छौड़बा रहैए केतए?”

लालमणि- “जहिये बम्बई नाओं छेलै तहियेसँ ओतै रहैए। आब तँ

सहजे मुम्बैया जिनगी बना नेने अछि।"

पुछलिऐ-

"की जिनगी?"

'की जिनगी' सुनिते लालमणिक मनमे जेना खौंझ उठलै। खौंझाएल बानर जकाँ झपैट बाजल-

"गामक बाप-दादाक मैनजनीक सुख-भोग भेटने जेहेन होइ छै तेहेन जिनगी ते जीविते अछि।"

लालमणिक विचारक कोनो भाँजे ने गरपर चढ़ल जे नीक जकाँ बुझि पैबतौं। ओना, एते बुझल अछि जे बिआहसँ पहिनहि भागेसर बम्बई गेल आ तहियेसँ रहैए। मुदा कोन जरूरी अछि जे लुच्चा-लम्पटक पाछू अमूल्य समैकेँ मूल्यहीन बनाबी। जे समय आबि गेल अछि तइमे जँ देहो चोराएब सेहो केहेन हएत आ केते उचित हएत, से तँ देखए पड़त किने...। बजलौं-

"नेताजी, मुखौटी भाषण छोड़ू, जे ई फल्लाँक विचार आ ई फल्लाँक सिद्धान्त छिऐन। जे समस्या अछि तैपर विचार करू आ हुनको विचार सोझामे आनि भजार करैत डेग उठाउ?"

लालमणि पत्नी दिस देखए लगली आ पत्नी लालमणि दिस। जहिना आँखिक पल खसैत-उठैत रहैए तहिना दुनूक नजैर उठए-खसए लगलैन। उठैकाल मनमे उठैन जे मनुखक जिनगी पाबि जँ किछु समाजो-ले नै केलौं तँ जिनगी अकारथ भेल। ऐठाम दुनूक विचार संगे विचरण करैन मुदा कनियेँ आगू बढ़लापर लालमणिक मनमे आबि जाइ जे पुरुख विहीन परिवार अछि! असगर बरसपतियो फूसि। जखन कि पत्नीक मनमे होनि जे जइ परिवारमे पुरुख गारजन छैथ, तइ परिवारसँ आगू बढ़ि किछु बजबो आकि करबो-ले बिनु आदेशे केना डेग बढ़ाएब। तइले तँ समय चाही। तैसंग ईहो मनमे उठैन जे मनुखेक समूह समाजक परिवारो भेल

आ समाजो भेल। परिवारेक समूह गामो भेल आ समाजो भेल। दुनूक बीच तँ जीवन-जापन कइये रहलौं अछि। जँ से नै करितौं तँ ठाढ़ केना छी। मुदा लगले मन आगू बढ़ि भुतलग्गु लग पहुँच गेल। तही बीच एकटा बारह-तेहर बर्खक पड़ोसीक बच्चिया भुतछुट्टु बुझि घुमि कऽ आँगन अबै छल। पुछलिऐ-

"बुच्ची, भूत केना भागल?"

कहलक-

"सातम दिन ढोरबा-मंगला दुनू गोरे मुम्बै जेतइ, ओकरे संगे ओहो घरबला लग जाएत।"

❑

शब्द संख्या: 3853, तिथि: 07 दिसम्बर 2014

विदाइ

ममियौत पोती क बिआह सम्पन्न भेला-परात चाह पीब गाम अबैक मन बनेलौं। तइ बिच्चेमे मामासँ नजैर नानापर पहुँच गेल। केना दू समाजक बीच सम्बन्ध बनल। केहेन जिनगी बितौलैन...।

सात-भाए बहिनक परिवारमे माए सभसँ छोट बहिन आ सभसँ जेठ बहिनक सासुर सेहो हमरा गामक बगलेमे तीन किलोमीटर हटि कऽ, दछिनबरिया गाममे। जेठकी मौसीकेँ दूटा बेटीए टा, बेटा नहि। पाँच भाए आ दू बहिनक परिवार, माएसँ मौसीक उमेरमे लगभग तीस बर्खक दूरी। ओना, मौसीए-विचारसँ छोट बहिनक बिआह भेल। ओइ पीढ़ीक अखन पाँचम चलि रहल अछि, मुदा पाँच नै तीन मानि चलै छी...।

दोसर पीढ़ी, तीन भाँइ आ दू बहिनपर आबि अँटकल। मरदा-मरदी घटबी भेल। बहिन सबहक सासुर कोसी-कटानमे तेते दूर भऽ गेल जे सम्बन्ध समाप्ते जकाँ भऽ गेल अछि। ओना, दुनू बहिनो मरि गेली। तीन भाँइक भैयारीमे दू-भाँइ अपनो आ पत्नियोँ मरि गेलैन। ओना, भाइक अपनो पत्नी मरि गेलैन। उमेर पचासी-छियासी छैन, आँखि-कान दुनूसँ दुर्वल भऽ गेल छैथ। मुदा देह-दशासँ रिष्ट-पुष्ट छैथ। चारि बेटाक संग पाँच भातीजक शीर्षपर बैसल छैथ। मरदा-मरदी परिवार बढ़ल, भाय गारजन ऐ दुआरे नै जे एक तँ उमेरे अस्वस्थ, तैपर आँखि-कान छीना गेने, दरबज्जेपर बैस जिनगी गुदस करै छैथ। हुनके पोतीक बिआहमे मात्रिक गेल छेलौं। एकर माने ई नै जे दस-बीख बर्खक पछाइत गेल छेलौं। ओना, सालमे बेसी काज भेने दू-तीन बेर जाइ छी, नै तँ एको बेर, आ जँ

काज पतराएल रहल तँ डेढ़ो-दू सालपर जाइ छी। मुदा से नै, डेढ़ सालपर गेल छेलौं... ।

गाम अबैले तैयार भऽ भायकेँ गोर लागि कहलयैन-

“भाय, जाइ छी... ।”

कहि तँ देलिऐन मुदा आँखि ढबढबा गेल। ढबढबा ई गेल जे भरिसक अन्तिम भेँट छी। ओना, बेटा संग बहारे रहै छैथ। पाँच बर्खक पछाइत भेँटो भेल छला। आँखि-कान दुनूसँ दुर्वल रहने भाय नै सुनलैन। मुदा झल-इजोतमे वैग देखलैन। जहिना कन्हा नाचए अपने ताले आ बैहरा गाबए अपने सूरे... ।

तहिना दुनू नाच भाय ठाढ़ कऽ देलैन। बेटा सभकेँ कहलखिन-

“बौआ, पाँच भाँइक भैयारी मे दुइए भाँइ बँचल छी। बेटीक बिआह केलह आ छोट भाएकेँ बिना रंगल धोती पहिरौने नाना-नानीक गामसँ विदा करबह से केहेन हेतह..?”

आँगनसँ दरबज्जा तक लोक पसरल। दरबज्जासँ आँगन धरिक सभ कनखैड़ भऽ सुनलैन। दरबज्जापर नव-पुरान कुटुम जहिना तहिना आँगनमे सेहो। ई तँ भेल एक ताल। दोसर ताल फेर देलैन। देलैन ई जे दुनू आँखिये-टासँ नोरक धार नै बोहैन, कानि-कराहि मन बजबो करैन-

“यएह पिसियौत भाए हमर छी जैठाम सालक छह मास, एक साल नै करीब बीस साल, अपनो मरदा-मरदी आ गाइयो-महींस लऽ कऽ गुजर करै छेलौं... ।”

बहीर-बलाइक बात जहिना लोक सुनबो करैए आ नहियोँ सुनैए तहिना भेल। हेबो केना ने करैत, एहनो लोक तँ छैथे जे जहियासँ गियान-परान भेलैन तहियासँ शहरे-बजार धेने छैथ, तँए कि ओहन लोक नै छैथ जे अखनो ओहेन भोग भोगि रहला अछि। की अछि इलाकाक दशा? अखनो देखल जा सकैए जे कमलाक पछबरिया छहर टुटने इलाकाक

खेती-बाड़ीसँ लऽ कऽ रस्ता-पेरा तहस-नहस भऽ गेल अछि! जइसँ गाम हेराएल सन बुझि पड़ैए! ओना, घर-घराड़ी हेराएल कमला-धारक पेट बनने, मुदा नवको घराड़ी तइसँ नीक थोड़े अछि..! पैछला पचास बर्ख पहिलुका गाम भाइक नजैरसँ हेरा गेल जकाँ बुझि पड़ल। ओना, पाँच बर्खपर भाय गाम आएलो छला, तैसंग आँखियो आ कानो गमाइए नेने छैथ, जहिना कोठरीसँ ओसार धरिक जिनगी बाहर, तहिना दरबज्जासँ आँगन भरिक गाममे। गामक लोको ऐ दुआरे गामक जानकारी नै देलकैन जे एक तँ बहरबैया भऽ गेला, दोसर बहीर-बलाएकेँ बुझाएबो भारी। तैसंग बिआहक काजक धुमसाही, पनरहे दिन-ले गाम एबो कएल छैथ।

तही बीच मझिला बेटा, जेकर बेटीक बिआह भेल, जोड़ भरि धोती नेने भाइक हाथमे, माने पिताक हाथमे, दऽ देलकैन। हाथमे धोती ऐबते भाइक विलाप बदैल गेलैन। मनक सभ रस निच्चाँ उतरलैन...।

धोती बढ़बैत बजला-

“भाय, आब ते जिनगीये नै रहल, जे दिन छी से दिन छी, मुदा तूँ किछु छिअ ते दीदीक बेटा छिअ। आब की दीदीकेँ आँङ्गी-साड़ी पहिरा विदा करब...। धोती पहीरि कऽ दरबज्जापर सँ विदा हुअ...।”

धोती देखि मनमे भेल जे एक तँ भगवान ओहिना दहिन भऽ गेल छैथ जे परम्परामे धोती लिखने छैथ आ पहीरिनिहारकेँ पेण्ट पहिरा देलैन! अपनो परिवारमे धोतीक बाढ़ि तँ आबिये गेल अछि, अनेरे किए वेचाराकेँ खर्च बढ़ेबै। मुदा जेना मनक बात भातीज बुझि गेल तहिना बाजल-

“काका, लिअ ने, तेते धेती आबि गेल अछि कुटुमक ऐठामसँ, जे अनेरे घर भरल रहत, पहीरिनिहारे के अछि। हम सभ पेण्टे पहिरै छी। लऽ दऽ कऽ एकटा बाबू धोती पहीरिनिहार छैथ।”

भातीजक मुस्कुराइत मन देखि मन ऐ दुआरे मानि गेल जे भातीजक कन्यादान सन यज्ञ सम्पन्न भेल, दोसर भाइक हाथक धोती छी,

जँ नै लेब तँ भरिसक जिनगीक अन्तिम भेँट छी, मनमे चोट लगि घाव बनि जेतैन। हमरा चलैत ओ चोटाह बनि रहैथ, ईहो उचित नहि। घरमे धोती पहिरैसँ बेसी अछि, तेकर हम की करबै? जेकरा दिऔ चाहबै, ओ पेण्टे पहिरैए...।

तही बीच भातीज, पिताक हाथसँ धोती लैत हाथ पकैड़ दऽ देलक। हाथमे धोती ऐबते मोन पड़ि गेल साठिक दशक- 1958 इस्वी। ता मिडिल स्कूलक विद्यार्थी रही। नाना-नानीक परिवार आगू ससैर ममियौत भाय-भौजाइपर आबि गेल रहैन। माइक संग हमरो विदाइक धोती भेटल रहए- सत-गज्जा धोती। मनसारासँ पूब झगड़ुआ बजार जेतए आन वस्तुक दोकनदारीसँ लऽ कऽ खाधी भण्डार सेहो आ कपड़ा बुनाइक कारोबारी सेहो, जइसँ गाम बजार रूपमे थोड़े आगू घुसैक गेल छल। जखन सभसँ छोट ममियौत-भाए बजार विदाइक नुआँ-वस्तर कीनए झगड़ुआ जाए लगला तँ भायकेँ कहलखिन- 'फल्लाँ-फल्लाँसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन, अखनो आवा-जाही ऐछे, कोनो बेसी दूरो नहियेँ अछि, अपन पसीने कपड़ो कीनि लेब आ सभसँ भेँटो-घाँट भऽ जाएत।'

सासुर अबैसँ पहिने केता दिन माइयो गेल-आएल, तँए देखैक मन रहबे करए। तीनू गोरे बजार आबि दोकानदारसँ पुछि भाय सत-गज्जा धोती कीनि देलैन। ताबे नै बुझिऐ। गज बुझिऐ दू हाथ, मुदा सत-गज्जाक माने सात हाथ आकि चौदह हाथ से नै बुझलिऐ। ओना, धोती निकालि दोकानदार जखन परिछऽ लगल तखन सत-गज्जे छजल। ओना, अठ-गज्जा, नअ-गज्जाक संग दस-गज्जो धोती रहइ। भातीजक हाथसँ धोती पकैड़ते जखन मुँह दिस देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जेना हृदयसँ खुशी भऽ दऽ रहल छैथ। खुशियो केना ने होइतैन, गामक तंगहालीमे, चारू भाँइमे सँ कियो स्कूल नै देखि पौलक, पेटक दुआरे पड़ा शहर गेल। दिन-राति कारखानामे खटि एक मात्र बेटीकेँ बी.ए.क संग कम्प्यूटर तक पढ़ौलक, ओही बेटीक ने बिआह भेल...।

धोती हाथमे लैत भातीजकेँ कहलिऐ- “जखन धोती लाइए लेलौं तखन पहिरैले किए जोर करै छह? जँ नहाइबेर रहैत ते पहीरि लैतौं। गामेमे नहाएबो ओतै पहिरब।”

भातीज मानि गेल मुदा भाय अपने सूरे रहैथ। सूरे ई रहैथ जे धोती पहीरि कऽ दरबज्जापर सँ निकलिहऽ। सएह भेल। मुदा डेग उठैबते मनमे नाचए लगल, की आब मात्रिक रहल? नाना-नानी लगसँ शुरू होइत मामा-मामी होइत भैयारीपर आएल, आब भातीजक सीमापर आबि गेल मुदा अपन ओ सभ के हएत आ अपने के हेबैन?

बिआहसँ बारह दिन पहिने साझिल भातीज तीन गोरेक संग नौत दिअ आएल। किछु दिन पहिने दरभंगा जिलाक मुख्यालय दरभंगामे तीन दिनक साहित्यिक कार्यक्रममे गेले रही। चाहक संग गप-सप्प चलैत रहए। भिनसुरका समय। बिआहक जानकारी दैत कहलक-

“काकाजी, तइस तारीखके बिआहो छी आ कुमरमो हएत।”

पुछलिऐ-

“कुमरम ते एक दिन पहिने होइ छै ने, तखन किए दुनू काज एके दिन करबह?”

बाजल-

“एक दिन पहिने शनि पड़ै छै, तँए... ।”

कहलिऐ-

“कुमरम की कोनो एके दिन पहिने होइए दोसरो-तेसर दिन पहिने होइए किने।”

मुदा ओ सोझे कहि देलक-

“सबहक सएह विचार भेल।”

सतबजिया सुर्ज उगले रहैथ, मने-मन कहलयैन, ‘हाइ रे सुरूज

भगवान दिने खोंटाह!'

चारि-पाँच दिन पहिने जिला मुख्यालय-दरभंगामे तीन-दिन रहि आएले छेलौं, फेर दू दिन-ले ओही जिलाक गाम जा देखैक इच्छो भेल। मुदा तइ बिच्चेमे भातीज बाजल-

"भैयो आ बाबूओ कहलैन जे अहाँ ऐबे करिऐ।"

कहलिऐ-

"निश्चित आएब।"

समय बनिते मनमे उठि गेल। वएह दरभंगा जिला जइमे जन्म भेल। एतबे नै, मतो-पिताक जन्मभूमि छीहे। स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेट सेहो सएह अछि, मधुबनी जिला बनने आब मधुबनी जिलाक भेलौं। मुदा अपन सभटा बही-खतियान तँ दरभंगे जिलाक अछि। रस्ता दिस नजैर दौगबैत पुछलिऐ-

"बौआ अबै-जाइक रस्ता केहेन छह?"

मोटर साइकिलसँ आएल रहए। बाजल-

"गाममे कमलाक पछबरिया छहर पकैड़ रसियारी-पुल टपि पुबरिया छहर पकैड़ भगवानपुर-मधेपुर होइत रस्ता नीक अछि।"

गामसँ मनसारा तकक भाँज लगि गेल। जेबो करब तँ भिनसुरके उखड़ाहामे जाएब, जइसँ नहा-खा अराम करैक समैयो भेटत। बेरूपहर तँ समय बँचत, बाढ़िक उतारक समय छी। ओना, उतारो-उतारोमे अन्तर होइ छइ। किछु इलाका एहेन अछि जैठाम लोक दुर्गे-पुजामे बरसातक उतार बुझैए। खेत-पथारसँ पानि हटि, आगू बढ़ि जाइ छइ। मुदा किछु इलाका एहनो तँ ऐछे जे जेकर बरसाती उतार अगहन-पूस धरि अछि। तेतबे किए, एहनो तँ ऐछे जे साइवेरिया देश सन अछि जेकरा तीनियेँ-चारि मास जमीन भेटै छइ। हँ! तखन एते जरूर अछि साइवेरियामे बर्फक झँपलाहा रहै छै आ ऐठाम पानिक अछि।

‘रस्ता नीक अछि’, भातीजक मुहेँ सुनि, नीकक हिसाब जोड़ए लगलौं, केना आ केहेन नीक अछि? शहरमे मोटर साइकिल चलौनिहार जँ गामक सड़ककेँ नीक मानलक तँ नीक भेल। मुदा भूतलग्गु जकाँ भुतिया गेलौं। भुतिया ई गेलौं जे जहिना राजस्थान-गुजरातक गामक सड़क केहेन अछि से रहनिहार बुझै छैथ, तहिना त्रिपुरा, अरूणाचलक गामक सड़क केहेन अछि ओहो तँ ओतुके रहनिहार ने बुझता, मुदा महानगरक बजारू सड़कक नजैरसँ तँ नै देखल जा सकैए...।

अपनाकेँ जखन मनसारा पहुँचल देखलौं तखन मनमे भेल लखनजीक मूर्ति स्थापित हालेमे भेलैन अछि। एते आबा-जाही रहितो अखन धरि नै देखि पेलौं, सेहो ऐबेर गरपर चढ़ल, जरूर देखब। मुदा मूर्तियेटा ने देखब, ओ की कहि आ करि कऽ गेला से जाबे नै देखब ताबे तक बुझि केना पाएब...। मुदा तैयो सवुर गेल। पुछलिऐ-

“बौआ, लखनजीक जे मन्दिर छैन ओ रस्तासँ केते हटल छैन?”

कहलक-

“पुबरिया छहरेपर छैन। पजरे देने रस्ता छइ।”

‘पजरे देने रस्ता छइ।’ सुनि मनमे एते खुशी भऽ गेल, जे हुअ लगल आइए संगे विदा भऽ जाइ। ओना, रसियारीक पछबरिया छहर पकैड़ केताबेर केताठाम गेबो केलौं अछि आ जाइतो छी। मुदा मनिषी डॉक्टर लखनजीक समाधि स्थल नै देखलयैन तँए जरूर जाएब। पछबरिया छहरपर सँ पुल केता दिन देखने छी मुदा लगसँ नै, ओकरो लगसँ देखैक अवसर भेटत। पुछलिऐ-

“बौआ, कुशेसर जाइक रस्ता केहेन अछि?”

मुदा ओहो बिना किछु लाथ केने बाजल-

“काका, पाँच दिन गाम एना भेल हेन, पाँचो दिनसँ घुमिते छी, ओमहर आब जाएब, तँए नै बुझल अछि।”

भाँजपर कुशेसर नै चढ़ैत देखि पुछलिऐ-

“दरभंगासँ सहरसा जाइबला जे सड़क बनल तेमहर जाइक आबा-जाही अछि की नै?”

दू दिन पहिने ओ सहरसा जिलाक मगरौनीसँ आएले रहए, बाजल-

“परसू रातिमे ओतै रही, पुलसँ कनियेँ दछिन हटि कऽ घर छैन।”

गरपर चढ़ैत देखि पुछलिऐ-

“अबै-जाइमे केते समय लगैए?”

कहलक-

“मोटर साइकिलसँ दू घन्टा।”

काज गरपर चढ़ल। बजा गेल-

“बस, दुइए घन्टा। ऐबती-जैती भेल चारि घन्टा, जाइकाल गाड़ीसँ पार करब घुमैकाल पएरे पाया तक देखैत आएब।”

जहिना बिनु पैरक मनुख तहिना बिनु पायाक पुलो ने, तँए देखबे करब। मने-मन गर अँटबैते रही जे केहेन-केहेन गाड़ी चलै-जोकर अछि, एक संग केते लोकक भार पुल सहि सकैए, इत्यादि-इत्यादि विचारमे उठैत रहए। मुदा भातीजकेँ से नै भेल, भेल ई जे जहिना हाइ-स्कूलक विद्यार्थीक पढ़ाइक परीक्षा दुइए घन्टामे होइ छै तहिना अपन जीत दर्ज करबए लगल। एक तँ मुँह बन्न रहै तँए मञ्च भेटले, दोसर शहरसँ गाम आबि सेहो घुमि चुकल रहए। अपन सातो कुटुमैती, पुलक चारू भाग से घुमि आएल छल...।

बाजल-

“काका, आब उपरारि इलाकासँ नीक कोसिकन्हा भऽ गेल।”

भातीजक बात सुनि छगुन्ता लगल। देखल दिन मोन पड़ए लगल।

एकबेर मात्रिक जेबाकाल, जैठाम घनश्यामपुरमे फुले पहलवानक

अखड़ाहा छेलैन तइसँ कनियेँ दछिन सड़कपर मोनि फोड़ि देने, जइमे घुसैक कऽ चलि गेल छेलौं, मुदा डुमलौं नहि। गुन-धुनमे पड़ल रही, एक तँ खाली मन, दोसर खाली मञ्च देखि भातीजकेँ भाषण करैक गर भेटलै। तहूमे चाह पीनहि रहए, पान-साए नम्बर जर्दा देल पान सेहो खेनहि रहए, मन फुलाएल रहबे करइ, बाजल-

"काकाजी, ओइ इलाकामे आठ मन कट्ठा तक उपजबैबला किसान सभ छैथ। जइ कुटुम ऐठाम गेल छेलौं हुनका बड़का-बड़का ढक-बखारी मकैक देखलयैन।"

ढक-बखारीपर मन नै अँटकल। आब गामोमे बेसी परदेशीए कोठी आबि गेल, माने चदराबला। आएबो उचिते छइ। मुदा आठ मनक कट्ठाक तँ माने भेल बीघाक उपजा- 160 मन। दुनियाँक अग्रिम पाँतिक उपजा भेल! तखन तँ जरूर इलाका नीक भेल। कहलिऐ-

"बौआ, जखन एते दूर जेबे करब तखन पुलक बहन्ने इलाको देखि लेब।"

जेना ओकरो मन उजगुजाइते रहै तहिना काजक समय बिसैर बाजल-

"काकाजी, कनियेँ आगू बढ़बै ते कारूबाबाक स्थान सेहो छैन।"

'कारूबाबा' सुनि औरो मन उधियए लगल। अपनो बिसैर गेलौं जे काजक परिवार भेल, तैठाम अपने काजे घरवारियोकेँ बरदाएब नीक थोड़े हएत। जखन अपने नौतहारी बनि भार पुड़ए जाइ छिऐ तैठाम तँ रहबो ने उचित अछि। बेसीसँ बेसी, रौतका काज छी तँए, सुर्ज उगल धरिक समय भेटत। अगहन मास छी, दिनो छोट होइए। विदो होइमे किछु ने किछु विलम हेबे करत, मुदा भेल से नै जहिना मालिनीक आगू फूल ऐबते मनमेमाला बनए लगै छै तहिना कारूबाबाक डोरी मनमे लगि गेल। केना नै डोरी लगैत? कारूबाबाक सम्बन्धित एहेन-एहेन रचनाकार सभ छैथ जे

रामायण स्तरक रचना केने छैथ, जे देखैक अवसर हालेमे भेटल, तँए जिज्ञासा जगले अछि। बजा गेल-

"बौआ, जखन एते दूर पहुँचबे करब तँ अदहा घन्टाक काज आरो बढ़त, सएह ने। कारूबाबाक महपुरो जेबे करब।"

बजैक वेगमे तँ बजा गेल मुदा एते काजकेँ सैंतिया कऽ करैमे तँ गर लगबए पड़त। मने-मन गर लगबए लगलौं। जे भरिये दिनक समय भेल। गामोसँ नअ बजेसँ पहिने विदा नै हएब, गाड़ी-सवारीसँ रहब, करवन केतए की हएत तेकरो ठेकान नै, जँ एक रसमे चलब तखन अढ़ाइ घन्टाक रस्ता भेल। मने-मन अही सभमे लागल रही...।

चुप देखि भातीज कुरसीपर सँ ठाढ़ होइत बाजल-

"काका, बहुत काज अछि। औरो तीसटा कुटुमक ऐठाम घुमैक अछि।"

काजक घुमसाही देखि बैसबैत बजलौं-

"बौआ, जखने ऐठामसँ पहुँचबहक कि भाय तँ हिसाब मंगबे करथुन?"

सुनि कऽ जेना ओ अकबका गेल। अकबका ई गेल जे की हिसाब? बाजल-

"कथीक हिसाब?"

कहलिऐ-

"कुटुमैती तँ बहुत छह मुदा भाय कोन-कोन कुटुम सबहक नाओं कहलखुन?"

जेना बुझले रहै तहिना ओ बाजल-

"से तँ खाली अहीं टाक नाओं घुरि-फिरि कहैथ जे फल्लाँ गाम गेलेँ...। भायकेँ अबैले कहलीही...।"

एते दूरसँ आएल आ बिनु किछु खेने चलि जाएत, ई केहेन भेल। मुदा काजक भार तर तँ पड़ले अछि, मानत की नै मानत। कहलिऐ-

“बौआ, जखने जेबहक तखने भाय पुछथुन्ह जे भाइक बाड़ी-फुलवारी नीक छै किने...। तखन की जवाब देबहक? तँए पहिने घर-अँगना, दुआर-दरबज्जा, बाड़ी-झाड़ी घुमि-फिरि कऽ देखि लहक तखन चलि जाइहऽ”

मुदा मानि गेल। बीचमे किछु समय भेटल। आगू सगर राति दीप जरयक कथा-गोष्ठी 20 दिसम्बरक शनिकेँ गाममे छीहे, ओहू इलाकाक संगी सभ- साहित्य-प्रेमी- छैथे, तँए किनको पकैड़ हराएल-भोथियाएल जँ दसो-बीस गोरे भेँट भऽ गेला तँ सुखटी-वणिजक संग पशुपति-दर्शन सेहो भऽ जाएत। गर अँटेलौं जे घरवैया छोड़ि बहरवैयेकेँ पकैड़ जेते सम्भव हएत तेते पुड़ा लेब।

परात-भने अकासवाणी दरभंगासँ समाचार निकलल-

“लखन जीक पुण्य तिथिपर तइस तारीखकेँ साहित्यिक कार्यक्रमक संग पुण्य तिथि मनौल जेतैन। नीक-नीक कार्यक्रमक आयोजनक बेवस्था हएत...।”

जेना-जेना तइस तारीख लग अबैत जाए तेना-तेना जेबाक उत्कण्ठा बढ़ल जाए।

तइस तारीख, रवि दिनक सुर्ज उगल। दू दिनक सफर अछि। कोनो काज करैमे अबेर-सबेर होइते अछि। मुदा दुनू दू शिरापर अछि, धोखा-धोखी आ मजबुरियो.., जँ उनटा-पुनटा हएत तँ जिनगीक रणभूमिक हार-जीतक सम्भावना भइये जाइए। माने ई जे काज करैक पूर्व अवस्था आ पाश्य अवस्था, यएह दुनू काजक धुरी भेल। जँ विद्यार्थी परीक्षा भवनमे प्रवेश करैक उचित समैपर पहुँच जाइ छैथ तँ हुनकर मन परीक्षाक प्रश्नपर केन्द्रित रहै छैन, आ ओही ठाम जे विद्यार्थी धड़फड़ाएल

विलमसँ पहुँचै छैथ तँ हुनकर मनक एकाग्रता बहु-केन्द्रित हएब सोभाविक अछि। जेना कियो विद्यार्थी घरसँ परीक्षा दिअ विदा होइ छैथ, गाड़ी-सवारीक संग अनेक-अनेक बाधा-स्थल बाटमे अछिए। तैबीच जँ कियो विद्यार्थी बसक झमारमे चोट खेने रहै छैथ, चोटो केते रंगक अछि, मुदा लाख कोशिशक बावजूदो ओइ विद्यार्थीक मन असथिर चित बनि सकैए? बनि सकैए। जहिना एके अलमारीमे, पढ़निहार विद्यार्थी गर अँटा कऽ सभ सिद्धान्तिक किताबकेँ सैंतिया-सैंतिया रखै छैथ जे जरूरत पड़लापर बेसी वौअए नै पड़त, तहिना। एकर माने ई नै जे ओ किताब, एकठाम रहने कहा-कही करत। ओ तँ केकरोसँ कहबौत, केकरोसँ करौत। काजक पूर्व अवस्थाक प्रति जे जेते साकांच रहै छैथ, काज अपन बिसवास ओते हुनका दइ छैन...।

नअ बजे घरसँ निकलब अछि, तैबीच अपन तैयारी करब अछि। मुदा की तैयारी? अनगिनती गाछक बोनमे बोनैया केना बुझत जे अपन हितैषी यएह छी। भोरका टहलब सभसँ नीक। मुदा प्रश्न उठैए किए? भोरू-पहरमे मौसम समगम अवस्थामे रहैए जइसँ शरीरक अंग-प्रत्यंगकेँ समगम बनबैक शक्ति छइ। कोनो एहेन खेत अछि, जइमे नीकसँ नीक फलक खेती, नीकसँ नीक तरकारीक खेती, नीकसँ नीक अन्न–धान-गहुम इत्यादिक–उपजैक शक्ति छै, तइमे की उपजाएब नीक हएत? ओही समैकेँ व्राह्मणी मुहुर्त सेहो कहल जाइ छै, से समय छी। तँए जेमहर मन हुअए तेहमर टहलू। चाहे व्रह्मलोकमे टहैल विधाताक डायरी लिखी आकि गीत गावि मनकेँ बुझाबी, आकि डेग गनि-गनि दौगी। अपन-अपन मनक मर्जी भेल, जेहेन अर्जी करब, तेहेन मर्जी भेटत। अरजन, मरजन, सरजन, धड़जन आ मनजने ने करबो अछि...।

सही समैपर घरसँ निकललौं। हवाई यात्री जहिना एको-मिनटक तल-बितल नै हुअ दैत, मुदा शीतलहरी आकि बाढ़िक टुटान जमीनक रस्ताक सवारी केना पाबि सकैए। भगवानपुर तकक आबा-जाही जहिया

मधेपुर ब्लौकमे छेलौं, तहिया अपन कर्मक्षेत्र रहने बेसी छल, मुदा तीस-चालीस बर्खसँ सम्बन्ध कमैत गेल। ओहो गाम देखैक जिज्ञासा जगले छल...।

भगवानपुर टपिते जेना लखनजीक मनीषि जीह खींच लेलैन। लखनजी नाओं ओइ इलाकाक देन छिऐन। जे कहियो हुनकर कर्मभूमि रहलैन, केन्द्र रहलैन मधेपुर। मुदा आब लखनजीक खरंजाबला रस्ता बिसैर गेलौं। बिसैर गेलौं ठेंगहाक लोहाबला पुल...।

...कमलाक पुबरिया छहरपर ठाढ़ भेल मनीषि गुरुवर लखनजी अखनो लोककेँ नीन तोड़ि जगैले कहै छथिन। आगूमे ठाढ़ भेल लखनजी पुछलैन-

"बाउ, की सभ देखै छिऐ?"

हुनकर विचार बुझैक शक्ति थोड़े अछि जे बुझब। मुदा एते तँ बुझले रहए जे अपन जिनगी अपना हाथमे रखि दिवस गुदस केलैन। बेलामे रहै छला, दरभंगामे पढ़ैत रही। एकटा संगीक संग एक दिन भेँट करए गेलौं। शहरक कातमे बसल शहरसँ लाखो कोस हटल, लखन जीक बास। आगूमे एकटा लहटगर साहोरक गाछ रहैन। गमैआ साहोर जकाँ एकोटा दतमैन नै काटल। राज दरबार, मुँहमंगा दान। किताबसँ घर सभ भरल। लखनजी अपने चर नेने किताब सभकेँ ऊपरसँ पोछैत रहैथ। पोछैत रहैथ आकि किताबक नाओं देखि-देखि मनन करैत रहैथ, से तँ ओ जानैथ। हमरो हरल ने फूरल पुछलयैन-

"आगूमे साहोरक गाछ?"

मुहसँ खसिते मनीषि लखनजी ऊपरे लोकि लेलैन। पौराणिक कथासँ लऽ कऽ देशक जेते बड़का वनस्पैतक प्रयोगशाला सभ अछि, सबहक सम्पर्कमे रहैथ। ओकर खोज करै पाछू बेहाल रहैथ। एके सूरे बीस मिनट तक बजैत रहला। मुदा अपने धर्मसंकटमे फँसि गेल रही।

अपन आँखिक आगू एकटा घटना देखल रहए। गामक बाधमे एकटा साहोरक गाछ, गाम-घरमे अखनो मेघक आवाज सुनि लोक 'साहोर-साहोर' करिते अछि, ठनका खसलै ओही गाछपर। बीचो-बीच गाछकेँ चीरैत दू फाँक कऽ खसा देलकै। हल्ला भेल- 'बाधक रखबारक खोपड़ीपर ठनका खसल... ।'

गाछक निच्चाँ खोपड़ी, सौन मास रहने रखबार नै, मात्र खोपड़ीए टा... ।

तही बीच दोसर गोरे आबि गेला। बन्हाएल समय रहैन, ऐबते उठि प्रणाम कए विदा भेलौं। विदा तँ भऽ गेलौं मुदा जे गाम एते नामी-गरामी ओइ गामक जँ एहेन स्थित तँ जे गाम हजारो कोस पछुआएल अछि तेकर भगवान छोड़ि के मालिक?

कमला नदीक पछबरिया भित्तापर मिडिल स्कूल। पुलक बगले उतरवारि भागमे। कनियोँ धार फुलेने चारूकातसँ स्कूल घेरा जाइए, जइ स्कूलक बच्चा दस-बारह बर्खसँ पूर्वक रहैए..!

पुल टपिते दछिन मुहेँ जहाँ भेलौं आकि एक गोरे टोकलैन-

"गाड़ीमे तेल अछि की नै से देखि लिऔ, जेमहर जाइ छी ओमहर जँ तेल सठल तँ पहपैटमे पड़ि जाएब!"

कमलाक पछबरिया छहर पकैड़ते देखल रस्तापर चलि एलौं। महिया-ठेंगहाक छहर पकैड़ ऐबते-जाइते छेलौं। ओना, मधेपुरसँ दछिन भगवानपुर धरि नीक रस्ता भेटल, भगवानपुर ऐबते मन ओहिना हरिया गेल जेना जड़ाएल गाछमे फूल-पात लगै छइ। बुझिये ने पेलौं जे कमलाक पछबरिया छहरपर पहुँच गेलौं। गमैया बाधक चौड़गर आड़ि जकाँ, हाथीक हीड़ बनल कमलाक छहर। सेरिया कऽ केतौ चौरस नहि। केतौ खरंजा तँ केतौ बिच्चेमे पजेबा कोण-गरे ठाढ़ भेल। मुदा मनकेँ मना लेलौं।

मना ई लेलौं जे मधेपुरसँ तमुरिया जे एक्का सँ अबैत-जाइत रही, तहिना ने हएत। मुदा लगले मनमे उठि गेल, जइ गामक बीचो-बीच कमला धारो अछि आ दुनू कात छहरो, तैसंग छोटकी नासी इत्यादि केतेको जमीनक रोग- चौर-चाँचर सहित ऐछे, देखिते-देखिते बारह बजेसँ पहिने- साढ़े एगारह बजे मात्रिक पहुँच गेलौं।

भाय दरबज्जेपर अथवल भेल बैसल छला। मुदा ने कनियोँ मन मलीन आ ने मुँह मलीन। ओना, दिनचर्याक हिसाबसँ दस बजे नहा कऽ खाइ छला, मुदा नमहरका दस बजे छोटका दिनमे बढ़िये जाइए तहूमे नहेबाक बाट सेहो जाड़ घेरबे करैत अछि। मुदा ओ नहा कऽ खेबाक सुर-सार करिते रहैथ कि पहुँचलौं। पहुँचते पोता कानमे सुना कऽ कहि देलकैन जे 'गामबाबा' एला। सुनिते उठि कऽ ठाढ़ होइत आगू डेग बढ़बैत बिना कुशल-छेम पुछने कहलैन-

"हमहूँ खाइएले बैसल छेलौं, जँ नहेने नै छह ते पहिने नहा लए जँ नहेने छह ते हाथ-पएर धोइ कऽ पहिने संगे-संग खा लए। बहुत दिन एकठाम बैस खेना भऽ गेल।"

गाड़ीक झमारमे भूख लगिये गेल रहए, हाथ-पएर-मुँह-कानमे सेहो गरदा पड़ले छेलए...।

कहलयैन-

"कलेपर हाथ-पएर धोब।"

सएह केलौं। बैसते पचहीक डॉ. श्रीपति सिंह मनमे कूदि एला। कूदि ई एला, जे सहकर्मी छैथ, भेँट करए गेलौं। संयोग एहेन भेल जे पत्नी भीतरसँ चाह नेने दरबज्जाक गेट टपलै रहैन, आ तखने बाहरक गेटसँ हम टपलौं। दरबज्जेक ओसार जे घेरि कऽ सुरक्षित बनल छैन, अखरे चौकीपर बैस किछु लिखि रहल छला। आगूमे लहटगर डिजाइनमे चामुण्डा महात्म रखल रहैन। गेटसँ भीतर होइते चिन्ह गेला। चिन्हते उठि

पत्नी हाथक चाह हाथमे पकड़बैत दोसर हाथसँ वाँहि पकैड़ बैसबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"दू कप चाह आरो नेने आउ, पानियोँ पीब।"

डॉक्टर श्रीपति सिंह, मवेशी डॉक्टर छैथ। दस गोरेक बीच रहैबला पेशा छैन्हे। तँए केतौ जाइसँ परहेज नहियेँ छैन। मुदा जइ परिवारसँ जुड़ल रहल छैथ, तइसँ भिन्न पारिवारिक ढाँचा बनौने छैथ। नीक वेपारक संग ट्रेक्टर सेहो समांग रखने छैन...।

खाइएकाल भाय, अराम करैक जगह सेहो देखा देलैन मिसियो भरि शंका नै रहल जे काज-उदेमक परिवार छी, नीक जकाँ अराम कएल हएत की नहि। जहिना दिन नकोर तहिना अपनो काजो नकोर बुझि पड़ल।

दू बजे नीन टुटिते, ऐगला गर अँटबए लगलौं। अपना ऐठाम तँ छी नै जे सड़कपर तक कुरते पहिरैत जाएब, आनठाम छी, बिनु घरवारीक विचारे निकलियो तँ नहियेँ सकै छी। मुदा भाय पीठपोहू। नीन टुटिते कलपर गेलौं। जे ओ देखि लेलैन। बेटाकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"चाह नेने आबह।"

चाह पीब अपन समांगकेँ कहलिऐ-

"फल्लाँसँ मोबाइलपर सम्पर्क कर ते।"

मुदा सम्पर्क नै भेने एकटा काज- कथा गोष्ठीक हकार देब- हूसि गेल। तीन-चारि घन्टा समय अछि। दरभंगा-सहरसाक पुलपर जाइ-अबैमे चारि-पाँच घन्टा समय लगत। अनभुआर रस्ता अछि। बिनु संगियेँ आरो बेसी समय लगत। भातीजकेँ कहलिऐ-

"बौआ, पुल देखैक मन होइए।"

मुदा ओहो सुतिहार लोक, अपन दियादी मे एकटा परिवारसँ

काजक रूसा-फुली। रूसा-फुली ई जे ने हम कोनो काज करए कहबै आ ने ओ बिना किछु कहने करतै। ओना, पारिवारिक सम्बन्धमे कमी नहि। गीत-नादसँ खाइ-पीबै धरिक छैहे...।

भातीज बाजल- "काका, फल्लाँ छुटनगर अछि। अपना गाड़ियो छै आ सभ किछु देखलो छइ।"

पुछलिऐ- "काजक घर छी, केते रंगक काज हेतह किने, तखन समांगकेँ बरदाएब नीक हएत?"

ओना, भातीजो खोलि कऽ नै बाजल जे दुनू गोरेक बीच अनोन-विसनोन अछि। साढ़े तीन बजे पुल देखैले तैयार भेलौं। तैयार होइते पुछलिऐ-

"बौआ, केते समय अबै-जाइमे लगत।"

छीपगर लोक, समयक महत बुझैत नै, धड़फड़ा कऽ बाजल-

"किरिण उगले घुमि कऽ आबि जाएब।"

ओना, अपनो बुझल जे दू घन्टासँ बेसी एक पीठमे लगैए। तैपर देखबो-सुनबोक अछि। गाड़ी-सवारी छीहे जँ कहीं रस्तामे गड़बड़ाएल तँ आरो बेसी लगि सकैए। मुदा दोखसँ बँचैक रस्ता तँ भेटिये गेल। घरवारी किरिण उगले घुमि अबैक बात बाजि गेल अछि। चारि गोरे विदा भेलौं।

कमलाक पछबरिया छहर पकड़ने रसियारी पुल टपि कमलाक पुबरिया छहर टपि कोसीक पछबरिया बान्ह पकैड़ दछिन मुहेँ विदा भेलौं। उभर-खाभर रस्ता, खरंजा, करखनो गाड़ीक चालि अपन गति नै पकैड़ सकल। पुलसँ करीब पाँच किलो मीटर उत्तरे किरिणो डुबि गेल। गाड़ीक एकटा पार्ट सेहो टुटि कऽ खसि पड़ल! अकासमे बगुला सबहक पतियानी चलए लगलै।

दस डेग आगू, कनियेँटा बजार। बजार की पान-सातटा खढ़क घर दू-तीनिटा पजेबाक घर। चाह-पानसँ डीजल, पेट्रोल साइकिल, मोटर

साइकिलक पार्ट-पुरजा भेटैत। पार्ट खसिते गाड़ी रूकि गेल। पोता गाड़ी चलबैत तँए किछु बजैक खगते नहि। गुड़कौने एकटा मिस्त्री ऐठाम पहुँचल। थोड़ेक आगू कोसी बान्हक बगलेमे थाना। मिस्त्री मोटर साइकिल देखि बाजल-

"पार्ट भेट जाएत। अपना लग नै अछि। आनि कऽ लगा देब।"

पुछलिऐ-

"केते समय लगत?"

मनमे रहए जे पान-सात मिनटमे जँ काज निपैट जाएत तँ पुल देखि लेब, नै तँ घुमि जाएब। जैठाम आएल छी ओ पहिल काज भेल। मन गुन-धुन करिते रहए कि पोता कहि देलकै-

"जल्दी आनि कऽ लगा दिअ।"

मिस्त्री साइकिल लेलक, दोकान विदा भेल। मनमे उठल अपन काज, जे अनका हाथक नै अछि, समयक संग बन्हा सकैए, मुदा दोसरा हाथक काज केना बन्हाएत। हँ बन्हाएत जँ काज भरि समय उपयोग करए, मुदा काजो तँ बेठेकान भइये जाइए। ओ होइए अनुभवी आ अनाड़ीक दुआरे। जेकरा इन्जिनक जेते जानकारी रहत ओकर काज ओते असान हएत जइसँ जल्दी हएत आ जेकरा जइ हिसाबे जानकारी रहत ओकरा ओइ हिसाबे समय लगत...।

अपन कार्यक्रमक सम्भावना क्षीण हुअ लगल। मन मानि गेल जे आब पुल नै देखि हएत। जखन पुलो लग नै पहुँच पाएब तखन महपुरा तँ आरो आगू अछि। मुदा उपाइए की अछि? गाड़ीक पार्ट आनैमे मिस्त्रीकेँ दस मिनट समय लगलै। तैबीच तीन-चारिटा धिया-पुता कोनो खत्ता उपैछ, छिपलीमे माछ नेने, सौंसे देह थाल-लागल, टपैत रहइ। एकटा बाजल-

"हमरा बेसी गैंचीए भेल?"

करीब बीस मिनटमे गाड़ी ठीक भेल। पैसाक हिसाब फड़िया पोता बाजल- "भऽ गेल।"

ओना, तीनू संगी नवतुरिया रहए, काज पर नजैर नै गेलै, मुदा अपना मनमे हुअए जे जँ घुमियौँ जाइ छी तैयो, दू घन्टासँ बेसीए समय लागत, जँ आगू बढ़ै छी तँ आरो बेसी समय लगत। एहेन स्थितिमे की कएल जाए..?

पुछलिऐ-

"आब की करबह?"

अपना मनमे रहबे करए जे आब फेर कहिया आएब कहिया नै, पुल देखि हएत की नहि। तैसंग ईहो हुअए जे अपन दोख नै लगा गाड़ियो आ समांगोक दोख लगा सकै छी। भरि राति बिआहक धमगज्जर तँ होइते रहत। तहूमे हम ऊपरी छी, कोनो कि घरवारी छी जे नै रहने किछु खगतै। जँ दुनू काज भऽ जाइए तँ बेसी नीक हएत...।

कहलिऐ-

"आगू केतौ बेसी समय नै लगबिहऽ। जाइकाल गाड़ीए सँ टपि जाएब अबैकाल पएरे-पएरे देखैत-सुनैत आएब।"

विदा भेलौं। पुल टपि पुबरिया बान्हपर आबि हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे रसियारीसँ दछिन जहिना देखैत एलौं तहिना ईहो इलाका अछि। कहलिऐ-

"आब आगू बढ़ब, माने कारू बाबाक स्थान छोड़ि दहक। बुझल जेतै आगू। तोरा सभकेँ गाड़ी संगे पएरे चलैमे दिक्कत हेतह, तँए बढ़ि जाह, पाछूसँ अबै छी।"

देखैक मन सभकेँ रहइ। गाड़ी स्टार्टे केने पएरे-पएरे ओहो सभ चलल। पुल टपि पछबरिया बान्ह लग आबि गेलौं बगलमे पच्छिम कमलाक पेटमे दूटा पुल बनैत, निच्चाँ देने रस्ता, दस-पनरहटा दोकान।

जेनरेटरक इजोतसँ पुल तक इजोत। ममियौत पोता बाजल- “बाबा, जइ रस्ते एलौं तेकरा छोड़ि दइ छिऐ, दोसर रस्तासँ जाएब, लग हएत।”

ओना, अपनो मन देखैक रहए मुदा अन्हारमे देखबे की करब। तखन जँ लग होइए तँ जल्दी पहुँचब, नीके भेल। कहलिऐ-

“आगूमे केतौ धार-धूर ने ते अछि। एहेन नै हुअ जे घुइम कऽ फेर आबऽ पड़ए?”

ओ दोकानदार सभसँ पुछि नेने रहए। भाँज लगि गेल रहै जे धारमे बाँसक पुल अछि। दू पहिया गाड़ियो सभ टपैए। विदा भेलौं। दूटा पुल कमलामे बनैत रहै, दिन-रातिक काज तँए ट्रेक्टर सभ रस्ता जाम केने। कहुना-कहुना टपि बाँसक पुल लग एलौं। लोक सभकेँ पएरे पार होइत देखिऐ, मुदा एकोटा गाड़ी नहि। सभ थकमका कऽ पूवारि भाग ठाढ़ रही। पच्छिमसँ घटवार देखि बाजल-

“आबह ने, गाड़ी टपै छइ।”

चारू गोरे पार हुअ लगलौं। मचकी जकाँ पुल डोलैत। पार होइते चारू गोरेक संग दुनू गाड़ीक चालीस रुपैआ मंगलक। जेबीसँ निकालि ममियौत पोता घटवारि दैत कहलक-

“हम फल्लाँ गाम जाएब, फल्लाँ हमर कुटुम छिआ, काल्हि भोरे हुनका संग केने अबै छी, पंनचैती बैसैबह।”

घटवार बुझि गेल। ओ सभ साली दइ छैथ। जइसँ आबा-जाहीमे कोनो बाधा नहि। घाटो ठीका लगल। अनाड़ी-धुनाड़ीसँ मनमाना पाइ लइ छइ। मुदा नाओं सुनिते घटवार पैसा घुमबैत बाजल-

“पहिने किए ने कहलह।”

अन्हार राति, गाड़ीक इजोत छुहिया, अगल-बगल किछु ने देखैत। मुदा कमलाक पछबरिया छहरक दशा एहेन जे केतौ गाड़ी उनैट सकैए। मुदा बँचैत-बँचैत आठ बजे मनसारा पहुँच गेलौं। ऐबते पुछलिऐ-

"बरियाती सभ नै एला हेन?"

"नहि।"

जान बँचल, मुदा गाड़ीक झमारसँ बुझि पड़ए जे एको क्षण ठाढ़ भेल नै रहल हएत। फरिकक दरबज्जा, जे खाली रहै, देखबैत घरवारीकेँ कहलिऐ-

"ताबे ओइ दरबज्जापर जाइ छी कनी अरामो करब।"

दरबज्जापर ऐबते कहलिऐ- "आब घुमि कऽ ओइठाम अखन नै जाएब। एतै खाएब-पीब-सुतब। ओइठाम भिनसर जाएब।"

संजोग नीक बैसल। नीक ई बैसल जे मने-मन विचार उठल, भने एके दिने दुनू परिवारक मोजर भऽ गेल। नै तँ काल्हि अनेरे रोका जाएब। नओोटा भातीज मे दुनू जेठ भातीजक परिवार। दुनूक परिवार बीघा भरि हटल। अँगनाक धिया-पुतासँ चेतन धरि बरियातीक भाँजमे। मुदा दुनू भाँइक आँखि कमजोर रहने दुनू गोरेकेँ बरियातीक सुआगतसँ छुट्टी घरवारी दिससँ भेट गेल। छुट्टीओ अनिवार्ये छल, दूकेँ पाछू दू आदमी हाथ पकैड़ बरदाएल...।

दरबज्जापर बैसते कहलिऐ-

"बौआ, एतै खेबो करबह आ अरामो करब?"

ओहो जेना पाल-पाल कऽ पौलक। लगले पुतोहुकेँ कहलक-

"पहिने चाह बनौने आउ। काका एतै खेबो करता आ सुतबो करता। भने अँगना-घरक ओगरवाहियो हएत।"

भानस भऽ गेल रहइ। रोटी-तरकारी आ दूध। मुदा तैयो चाह आएल। चाह पीबैत पुछलिऐ-

"आँखि बेसी गड़बड़ भऽ गेल छह।"

भातीज बाजल- "हँ, कहाँ केतौ जाइ छी। भगवान कोनो चीजक

दुखो-तकलीप नहियेँ देने छैथ। दरबज्जेमे लेटरीन बना नेने छी, आगूमे कलो अछिए। बस एतबे दूरमे भरि दिन भरि राति रहै छी।”

कहलिऐ-

“आँखिक इलाज किए ने करा लइ छह?”

बाजल-

“सभ कहैए, अखन नीक जकाँ नै पकलह, तँए अखन आपरेशन नै हेतै?”

सुनि कऽ आश्चर्य भेल। आश्चर्य ई भेल जे आइक मेडिकल-दुनियाँ केतए-सँ-केतए आगू बढ़ि गेल आ ई सभ तैयो कष्ट काटि रहल अछि..!

कहलिऐ-

“के कहै छह जे अखन ऑपरेशन नै हएत। डॉक्टर कहै छह आकि आन?”

बिना किछु छिपौने भातीज बाजल-

“अपनो पलिवारक आ आनो-आन कहैए।”

कहलिऐ-

“सभ ठकै छह। ओकरा सभकेँ या तँ बुझल नै छै या तँ झूठ बजै छह। अखन ते बिआह लाधल छह, काज सम्पन्न हुअ दहक। तेकर लगले पछाइत दरभंगा जा कऽ ऑपरेशन करा आबह।”

चाह पीविते रही कि खाइक आग्रह भेल। कहलिऐ-

“अदहा घन्टाक पछाइत खाएब।”

मुदा ओ सभ बिआहकेँ परिवारक काज बुझि एको क्षण समय गमाएब पहाड़ बुझैत। मुदा भेल ई जे जइ कोठरीमे रही तहीमे सभ किछु साँठि झाँपि कऽ रखि सभ कियो बरियातीक आँगन चलि गेली।

दोसर दिन भोरे नीन टुटि गेल। मन छटपटाए लगल। जहिना

कहल जाइ छै 'साँइक राज अपन राज बेटाक राज मुँह-तक्की' सएह भेल। अपने भोरे चाह बना पीबै छी, मुदा केतए? ऐठाम तँ से नै हएत। तैयो मुँह-हाथ धो पान खा ओछाइनेपर बैसल रही कि एक गोरे आबि गेला। ऐबते दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलैन। ओ भातीजक समैध, मंगरौनी-पुल लगक गामक रहनिहार। हुनका पता चलि गेल रहैन। ऐबते कहलैन-

"अपने, घर लगसँ घुमि एलौं आ हमरा कोनो खबरियो ने!"

कहलैन तँ ठीके मुदा समय दुआरे की कएल जाएत। अपन बात कहैत पुछलयैन- "अहाँ इलाकामे खेती होइए की नै?"

पुछैक कारण छल सगतैर बाधमे पानि लागल आ पानिक खढ़सँ खेत बोनाएल देखने रहिऐ...।

कहलैन-

"खूब खेती होइए। सालमे एक्केटा उपजा हाथ लगैए। चारि-पाँच मास खेत जगैए, तहीमे मकैक खेती आ बैशाखवा तरकारी सेहो करै छी।"

पुछलयैन-

"मकै केना उपजैए?"

"पाँच मनसँ आठ मोनक कट्ठा धरि। एक तँ साल भरि खेत खसल रहल तैपर तेते खाद दइ छिऐ जे मनसम्फे उपजा होइए।"

मने-मन हिसाब जोड़लौं तँ बुझि पड़ल जे हमरा सभसँ बेसी उपजा हिनका सभकेँ होइ छैन...।

पुछलयैन- "तरकारी की सभ उपजबै छी?"

"माघ-फागुनमे रामझिमनी, करैला, कदीमा, सजमैन, खीरा, बतिया, काँकैड़, तारबुज इत्यादि लगा दइ छिऐ, तेते फड़ैए जे तोड़ैत-तोड़ैत नाकोदम भऽ जाइ छी। रामझिमनी दुआरे हाथक आँगुर सभ घबाह भऽ जाइए। कदीमा रखैबला होइए तँए रखि लइ छी, मुदा दोसर तँ

रखैबला नै होइए, तँए तोड़ैमे नाकोदम भऽ जाइए।"

"तरवन तँ खूब आमदनी होइत हएत?"

"से तँ होइए, मुदा गामक लोक जे परदेश चलि गेल, तइसँ गामक अदहासँ बेसी खेत खसले रहि जाइए। आ काजो खगैए।"

"गाममे दूध-दहीक की हालत अछि?"

"हालत! मकैक उपजा तँ माले-जालक ने भेल। तेते मकैक घासो आ सालो भरिक खोराक भऽ जाइए जे कोन दरबज्जा एहेन अछि, जेकरा खुटापर महींस नै छइ।"

कहलयैन- "अखन जाड़ मास छी, तहूमे अहाँ सभ कोसी कातक छी, हम सभ ठनक परहक पानि पीनिहार छी, तँए अखन नै मुदा सुखार समैमे जरूर आएब।"

अपनो मन कछमछाइत रहए, अढ़ाइ-तीन घन्टाक रस्ता अछि। जखन काज नीक जकाँ सम्पन्न भइये गेल तखन अनेरे रहबो समय गमाएब हएत। चाह पीब जलखै कऽ गाम अबैक विचार केलौं।

❑

शब्द संख्या: 5131, तिथि: 17 दिसम्बर 2014

खलओदार

तिला-सकराँइत पाबैनसँ एक दिन पहिने, पाबैनक ओरियानमे लगल रही। आइए नै ओरिया लेब तँ काल्हि पाबैन केना हएत? तहूमे तेहेन मेठनियाँ पाबैन अछि जे केतबो धड़फड़ी करब तैयो पार लगत कि नहि। पाबैनो तँ पाबैने छी। तहूमे तिला सकराँइत! पाबैन नै पाबैनक गाछ छी।

किछु एहनो पाबैन होइए जे दिन-रातिकेँ एकरंग बना दइए, किछु एहनो होइए जे दिनकेँ नमहर बना राति कपैच लइए आ किछु एहनो तँ होइते अछि जइमे दिने कपचा कऽ घपचा जाइए। एक दिस शुर-शुर, तँ दोसर दिस मुर-मुर। जे दुनू एके घाटपर आबि पबैए...। जँ आइए सभ किछु नै ओरिया कऽ रखि लेब तँ काल्हि ओरियाएब आकि बनाएब-सोनाएब आकि पाएब? ई पहपैट तँ बीचमे अछिए।

मन मानि धकेल कहलक, 'काल्हि तँ भोरेसँ तजतरीन तरि-बगहारि, भोर मुर-मुर दुपहर शुर-शुर आ साँझ फल पेब पाबैनक विसर्जन करब किने? मने-मन गुनधुनो करी आ प्राप्ति क गरो अँटबैत रही। तही बीच रस्ता दिससँ दौगल आबि बारह बर्खक भातीज बाजल-

"काका, निरजल बाबाकेँ देखैले नै गेलिऐन, ओ तँ...।"

फटफटहाक बोलक लहर जेना ठमैक गेलइ। ठमैक ई गेलै जे ठनका जकाँ जेते जल्दी बाजए चाहै छल से नै भऽ पबै छेलइ। होइतो अहिना छै, एक्के बेर बिजलोको आ ठनको उठि कऽ ठाढ़ होइए, मुदा

रस्तामे आगू-पाछू भेने बिजलोका पहिने चलि अबैए आ ठनका पछाइत पहुँचैए...।

पुछलिऐ-

“बाउ, कोनो हलतलबी..?”

ई बुझि बजलौं जे साल भरिक बच्चाकेँ जहिना माए, बाबू, भाए इत्यादि एक शब्द कहि सिखबैए आ जेकरा ओहो, ओहिना भात-रोटी कहि अपन विचार व्यक्त करैए। तैबीच व्याकरण जनैमते रहैए। व्याकरण आएल नै रहै छै, पछाइत अबै छइ।

मुहसँ जहिना निकलल, तहिना ओहो माने भातीजो लोकैत बाजल-

“अब-तबमे छैथ?”

फटफटहाक बोल सुनि मन बेथा गेल। बेथाए लगल जे पाकल जअमे कहीं पाथर ने खसए। अब-तबमे छैथ जँ कहीं देरी भेल आ बिच्चेमे मरि गेला तँ अपन मन हुनके मनक पाछू ने बोन-झाड़मे औनाइत फीड़त।

तइसँ नीक जे पहिने हुनके देखि आबी। मुदा लगले भेल जे ओइठाम जाएब आ बिच्चेमे जँ परान छुटि जेतैन तैठाम तँ समांग बनि हमहीं रहबैन, तखन जँ असमसानक जोगार केने बिना घरपर केना घूरि कऽ आएब? मुदा जँ जीबैतमे अपन सम्बन्धक हिसाब-किताब नै फरिछा नेने रहब तँ देखिते छिऐ केहेन फड़ेबी सभ अछि जे सामाजिक सम्बन्धकेँ तहस-नहस कऽ संस्कृति मेटबैक चालि पकैड़ नेने अछि।

मनमे भेल जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे हमर कोनो भरोस नै करब, जँ अपनो-ले आ परिवारो-ले पाबैन करए चाहै छी तँ अपन ओरियानमे लगि जाउ। मुदा कहबो केकरा करबै, सभ तँ अपने ताले बेहाल अछि, तैबीच चुपे रहब नीक। विदा भेलौं...।

निरजल काका ओछाइनपर, जाड़ दुआरे मोटगर ओढ़ना ओढ़ि मुँह

उघारि पड़ल आँखि मुनने छैथ। फक-फक साँस चलै छैन। झूकि कऽ मुँह लग जा कहलयैन-

"काका, काका..?"

निरजल काका आँखि खोललैन। शकल-सूरतसँ बुझि पड़ल जे लगले तँ नै मरैबला छैथ मुदा बेसी दिन टिकबो नहियेँ करता। सौंसे देहक ऊपरका चमरा खोंइचा जकाँ तेना ओदैर गेल छैन जे अमेरिकन गोराइक रंग पकैड़ नेने छैन। मछियाहा मासमे माछियो हरान करिते छैन जइसँ बैशाखोमे चद्दैर ओढ़ने छैथ। ओना, निरजल काकाकेँ शिक्षा-प्रेमी कहियौन आकि विद्या-प्रेमी, ज्ञान-प्रेमी कहियौन आकि वुद्धि-प्रेमी, से तँ छैथे। देहक रोग तँ दैहिक छी, मुदा मनक रोगी नै छैथ। निरजल काका बजला-

"बौआ, आब तँ चलचलौ भेलियऽ, जे दिन छी से दिन छी मुदा मनमे एकटा प्रश्न रहि गेल।"

कक्काक 'प्रश्न रहि गेल' सुनि नजैर चौकन्ना भेल। भेल ई जे अन्तिम अवस्थामे काका पड़ल छैथ, जँ पुछि दिऐन जे की, आ तही बीच कहीं दम टुटि जानि तखन उतरी केकरा गरदेनमे पड़तै..?

मन छह-पाँच करए लगल। फेर भेल जे मरै बेरक प्रश्नक उत्तर सुनबैबला के रहता? फेर भेल- किछु दिनक मेजमान छैथ, दोसर दिनक समय लऽ लेब आ ठेकना कऽ आएब जखन मरि गेल रहता। ने कियो पुछनिहार आ ने कियो कहनिहार, हिसाब राफ-साफ। जखने महाजन साफ, तखने खौदका राफ...।

दुनू हाथे छातीकेँ पकैड़ कहलयैन-

"की प्रश्न रहि गेल काका?"

बजला- "बौआ संस्कृत भाषा समासक भाँजमे पड़ि दुरूह भऽ गेल, जइसँ आमजनकेँ बाधा उपस्थित केलक। मुदा भाषाक भीतर जे

जिनगीक कला पद्धति नुकाएल अछि, जैपर सभ ठाढ़ छी ओकर की हएत? भँसियाइत लोक केमहर जाएत?”

कक्काक प्रश्नक समर्थनमे मुड़ी झुला देलिऐन। मुदा पछाइत मोन पड़ल जे आगूमे तँ हमहीं बैसल छिऐन किने, तँए जवाब तँ हमरे दिअ पड़त। उठिते मन सुक-पाक करए लगल। हुअए जे अखने मरि जइतैथ तँ बेसी नीक होइत, कियो बुझबो ने करैत, जे कका की कहलैन। फेर भेल जे एहेन समय झूठ-फूइस नै बाजब। कहलयैन-

“काका, काल्हि पाबैन छी, मन तइ दिस ओझराएल अछि। पाबैनक पछाइत आएब आ उत्तर देब। ताबे उधारी रहल।”

निरजल काका बजला किछु ने मुदा नजैरसँ बुझि पड़ल जे मन सोगाएल जा रहल छैन।

❑

शब्द संख्या: 735, तिथि: 19 दिसम्बर 2014

मनुखदेवा

जहिना रामभूमि अयोध्यामे रामनौमी दिन रंग-रंगक भेषधारी तहिना बिआह-पञ्चमियोँ आ रामनौमियोँमे जनकपुर पहुँच एकरंगा-सँ-सतरंगा धरि अपन पूजन करै छैथ आ तहिना गामो-घरमे ने गहवर अछिए। ने गुहरियाक कमी छै आ ने देवासँ मनुखदेवाक गहवरक। गामो तँ गामे छी थानाक जड़ि, जिलाक जड़ि, राजक जड़ि, देशक जड़ि...। ओना, पहिलुको देवा-देवी घर नै रहने मने-मन छला आब इन्दिरा आवासमे घर भेटने घराड़ियो भेट गेलैन, तँए गहवरसँ गुहारि-स्थल धरि अनेको दसगरदा स्थल बनियेँ गेल अछि, जइसँ रंग-बिरंगक पाबैनो-तिहार होइते अछि। गामे छी, गुहरियाक कमी रहबे ने करत मुदा जँ गुहारिक गहवर नै रहत तँ गुहारि केतए हएत? तहूमे तेते लोक कामाख्या-सीखि भऽ गेल अछि, जेकरा बिनु गहवरे बास केतए हएत।

अनुकूल मौसम बनने जहिना अकासमे टिकुलीसँ लऽ कऽ चिल-चिल्होरि होइत सात जोजन देखैबला गीधोक गीत कहियौ आकि चिल्होरिक टाँहि कहियौ, अछिए। भलेँ भेद ई होइ जे कोनो खेत-चासै जकाँ पाहि लगा-लगा उड़ैए तँ कोनो केमहरसँ उड़त आ केमहर जाएत, तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा साँझ-भोर बगुला पतियानी लगा पूबसँ पच्छिम आ पच्छिमसँ पूब जाइते अछि, जेबे करत...। तहिना अनुकूल सामाजिक परिवेश बनने तीनटा गहवर आने गाम जकाँ हमरो गाममे अछिए। ओना, हमरो गाम सन दोसर गाम सेहो अछि, नम्हरो आ छोट तँ अछिए। नमहर-छोट ऐ मानेमे जे आन गाममे मनुखदेवोक गहवर केते

रंगक अछि आ विसहरो वा आनो तहिना अछि। जइसँ केतौ गुण बेसी अछि तँ केतौ मात्रा बेसी अछि। मुदा अछि सगतरि, कनी कम कि कनी बेसी...।

ओना, गाममे अछि तीनटा गहवर मुदा जमुना धाइमकेँ गहवर नै छैन तँए जैठामसँ गुहारिक डाली जमुना धाइमकेँ अबै छैन तहीठाम जा गुहारि करै छैथ। कहैले सौंसे गामक लोक कहलकैन जे सालतनी गहवर बनने बेसी लोकक गुहारि हेतइ, जैपर ओ कान-बात नै देलखिन। मनमे एकटा नान्हिटा कीड़ी घोंसिया गेल रहैन...।

कीड़ी ई घोंसियाएल रहैन जे जखन ओ समरथाइ वयसमे अबैत रहैथ, बिआह तँ बच्चेमे भऽ गेल रहैन मुदा दुरागमन हाले-सालेमे भेलैन, ...पत्नी बिमारीक चपेटमे पड़ि मरि गेलखिन। होइतो अहिना छै जे कियो, भूतक चपेटमे तँ कियो चुरीनक चपेटमे, कियो डाइनक चपेटमे तँ कियो जोगिनक चपेटमे तँ कियो बिमारीक चपेटमे पड़ि मरिते अछि। पत्नीक प्रीत विपरीत बना देलकैन। विपरीत ई भेलैन जे मन कहलकैन-

'स्त्रीजाति बड़ टोनाह होइए, कनियोँ किछु भेल आकि टुटिये-फुटिये जाइए..!'

मुदा पुरुखो तँ पुरुख छी। अपन सीमा-सरहद छै, अपन इज्जत-आवरू छइ। काल्हि दिन जँ दोसर बिआह करब आ ओहो ओहिना हुअए तखन तँ अनेरे लोक कहए लगत जे जमुना स्त्रीखौक अछि! केना लोक लग मुँह उठाएब, तइसँ नीक जे ने दोसर बिआह करब जे दोख लागत तइसँ नीक असगरे रहब। जखन असगरो रहने परिवार होइते छै तखन अनेरे किए नून-तेलक भाँजमे पड़ि मगजमारी करब। कमा कऽ आनब, बना कऽ खाएब, चैनसँ रहब, भोरे जाएब। मुदा कलंक सँ तँ बँचल रहब...। ओना, गहवरो आ गहवरियोक चला-चलती तँ सभ मासमे रहिते छै मुदा आसीनक दुर्गापूजाकेँ किसानक अगहन जकाँ बुझैत। जहिना

रंग-बिरंगक गहवर तहिना रंग-बिरंगक भगतो। कियो भगत कहबैत, तँ कियो भगता, कियो धाइम तँ कियो ओझा-गुनी। ओना, आसीन मासक चला-चलतीक कारण दोसरो अछिए। ओ ई अछि जे चिड़चिड़ीक घौंदा जकाँ जहिना पाबैन सोहरल अछि तहिना पितरसँ पितराइन आ देवसँ देवा-देवी धरिक आगमन सेहो होइते अछि। तँए आन मासमे वेरागने-वेरागने भाउ करैए मुदा आसीनक दसमीमे कलशथापने दिनसँ जे शुरू करैए से एकेबेर नौमी दिन विसर्जन करैए। मुदा तइ सभसँ भिन्न जमुना धाइमक किरिया-कलाप छैन। ई आनसँ भिन्न छैथ। भिन्न ई छैथ जे धाइम छैथ। मास-मसादि ऐ दुआरे नै करै छैथ, जे अमवसिया-पर्णिमाक ठौर-ठेकान रहितो कतवाहि अछि आ संक्रान्ति मसांत-मसादि बीचमे अछि। तँए जखने जइ कहालीक डाली लगल तखने स्वीकारैत, गुहारि कऽ दइ छथिन। दोसर ईहो छैन जे आन भगता जकाँ ने वेरागनक बाट तकै छैथ, आ ने जगरनथिया बेंत, ने नहा-धो पवित्र भऽ गंगाजलसँ देह सिक्त करै छैथ आ ने दुबि, तुलसी, अच्छतक आशा रखै छैथ...। ओना, रंग-रंगक कहालियो तँ अछिए। कियो कोखिया गुहारिक कहाली तँ कियो सुखैनी-टटैनीक, कियो धन-वीतक तँ कियो सर-समांगक। मुदा तैसंग ईहो तँ ऐछे जे कहियो-काल हवा-विहारि उठने चला-चलतीमे कमी-बेसी सेहो होइते छैन। मुदा तइ सभकेँ जमुना धाइम कतवाहि मानि अपन विचारक अनुकूल चलै छैथ। मनो सदिकाल गवाही दइते रहै छैन जे जेकरा देहमे रोग रहत तेकरे ने दवाइ खाए पड़तै। डॉक्टर अपन अनुभवक हिसाबे रस्ता देखा देत, मुदा दवाइयो आ पथो-परहेज तँ ओकरे ने करए पड़तै। से जँ नै करत तँ नै करह। जानत अपने बुझत अपने...।

सतमीक सुर्ज पूब दिस उगि गेल। सुर्जेक रोशनीक रोशनाइक रंगमे गाम डुबि गेल। बच्चासँ सियानो आ घरसँ गामो एके रंगमे रंगि गेल। घरे-घरक नेना-भुटका फुलडालीमे फूल लोढ़ि, गोबर-माटिसँ घर-अँगनाक

संग देवो-स्थान नीपै-पोतैमे बेहाल। मन्दिरक पुजेगरी फूल-पात जोड़ियबैमे बेहाल, कनीकालक पछाइत बेल तोड़ीक प्रकरण शुरू हएत, पहिने डाली साजि, बेलक गाछ पूजि बेल तोड़ता, जइसँ भगवतीकेँ डिम्हा मूर्तिकारक हाथे पड़तैन। जहिना भगवती स्थानक जयन्ती पीड़ितसँ हरित दिस बढ़ैत तहिना गामक घरे-घरे सेहो बढ़िते अछि। घरे-घरे, परिवारे-परिवार फूल-पातक पूजनक संग गुग्गुल-सरड़-धुमन-अगरवत्तीक सुगन्धसँ गामे महमहए लगल। मुदा गामक गहवर सबहक रंग-रूपमे फीकापन आबि गेल। तेकर कारण भेल जे गनि-गूथि तीनियेँटा गहवर गाममे, तोहूमे एकटा भदवरिया बाढ़िमे खसिये पड़ल जे दोसर बनबे ने कएल, दोसरक भगते बेमार भऽ लहेरियासराय-अस्पताल धेने अछि आ तेसर कोखिया गुहारिक भाँजमे पुलिसक डरे गामे छोड़ि पड़ा गेल अछि। मुदा जमुना धाइमक कारोबार पुरबते छैन। ओना, जमुना धाइमक चालियो-ढालि आ किरियो-कलाप आनसँ भिन्न तँ छैन्हे। अस्पताल जकाँ सभ रंगक कहाली जमुना धाइम ऐठाम ऐबतो ने छैन। गनल-गूथल कहालीक आगमन होइ छैन। मुदा से नै भेल, ऐबेर सतमी दिन तेते कहालीक आगमन भऽ गेलैन जे मजबूड़न अपने ऐठाम बेवस्था करए पड़लैन। देवी-देवताक आगमन तँ देहपर नै होइ छैन मुदा मनुखदेवाक आगमन तँ होइते छैन...। किरिण लहैस गेल, किछुए पछाइत गुहारिक बेर हएत। जहिना जमुना धाइम अपने गुहारि करैक जोगारमे लगल तहिना कहालियो सभ अपन गुहारि अगुआइ दुआरे पहुँच गेल। दरबज्जाक आगूमे बैस जमुना काका पतियानी लगा कहाली सभकेँ देखलैन। तीन खाड़ीक कहाली बुझि पड़लैन। किछु दैहिक, किछु दैविक, किछु भौतिक। ओना, दैहिक आ दैविक कहाली पतराएल रहैन, मुदा भौतिक बेसी रहैन। पहिल कहाली कहलकैन-

"धाइम काका, घरमे उड़ी-बीड़ी लागल अछि। दिन-राति खटै छी,

मुदा... ।”

यमुना धाइम-

“अपन काजमे खटै छह कि अनका हाथे काज बेचने छह?”

कहाली अवाक भऽ गेल। धाइमक बात बुझबे ने केलक जे अनका हाथे काज केना बेचने छी। मनमे होइ जे भरि दिन काज करिते छी, दिनक-दिन बोइन होइते अछि, तखन बेचने केना छी। गुनधुनमे पड़ल देखि यमुना धाइम पुछलखिन-

“चुप किए छह, छुटि गेलह की?”

कहाली बाजल-

“कनी कए मन हल्लुक लगैए।”

धाइम बाजल-

“अहिना हल्लुक होइत-होइत हल्लुक भऽ जेबह। हँसी-खुशीसँ जाह।”

❑

शब्द संख्या: 1027, तिथि: 22 दिसम्बर 2014

❑❑❑

❑❑

❑